वैश्विक संवाद

6.1

16 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

जलवायु परिवर्तन की राजनीति

हर्बर्ट डोसिना

दक्षिण अफ्रीका का हिंसक लोकतंत्र

कार्ल वॉन होल्ड्ट

एकजुट अर्थव्यवस्था

पॉल सिंगर

सहकारिता का विकल्प

> भारत की सबसे पुरानी श्रमिक सहकारी समिति
> मॉनड्रेगन सहकारी समिति
> ग्रीस में बिचौलिया–विरोधी आंदोलन
> अर्जेन्टीना में स्वस्थ होते उद्यम
> दुनिया का अंत या पूंजीवाद का अंत?

लातिन अमरीका में पूंजीवादी संकर्षण

> लातिन अमरीका में नव–खनन सकेंद्रण पर बहस
> इक्वाडोर में संकर्षणवाद बनाम् ठनमद टपअपत
> मेक्सिको में जन सामान्य के लिए संघर्ष
> अर्जेन्टीना का नव खननवाद

स्मृति में

> व्लादिमिर यदोव, 1929–2015

पत्रिका

GD

अंक 6 / क्रमांक 1 / मार्च 2016

http://isa-global-dialogue.net

International Sociological Association

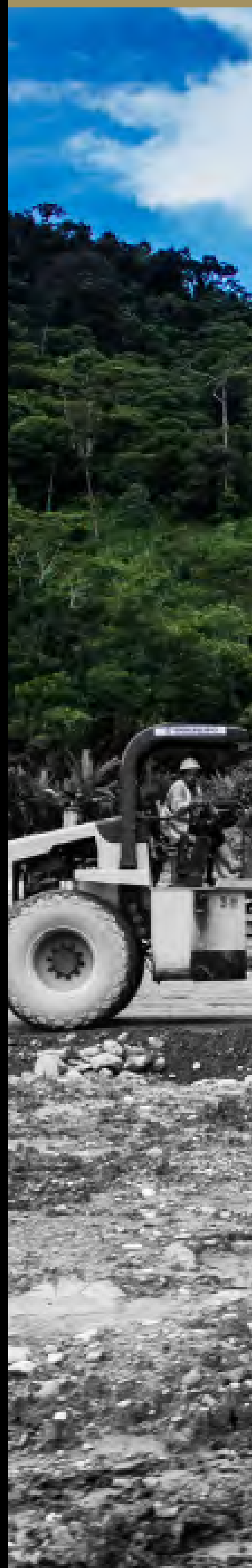

> सम्पादकीय

पर्यावरण एवं हिंसक लोकतंत्र

जब वैज्ञानिक जलवायु परिवर्तन की चर्चा करते हैं वे ऐसा पृथ्वी के वायुमंडल के बढ़ते तापमान के भयावह परिणाम – बाढ़, टायफून, पिघलते ग्लेसियर और समुदायों का सामूहिक विनाश की सख्त चेतावनी के साथ करते हैं। जलवायु परिवर्तन की राजनीति पर ध्यान देने के पश्चात वे जलवायु परिवर्तन से इंकार करने वालों और उनके शक्तिशाली समर्थकों या लोकप्रिय आंदोलनों की विफलता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। परन्तु वैश्विक अभिजनों के मध्य संघर्ष को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। पिछले चार वर्षों से हर्बर्ट डोकेना जलवायु परिवर्तन के वार्षिक UN Framework Convention पर वैश्विक संवाद के लिए रिपोर्टिंग कर रहे हैं। पेरिस में हाल ही में सम्पन्न हुई बैठक (30 नवम्बर से 11 दिसम्बर 2015) से लिखते हुए, वे बदलते गठबंधनों के बारे में लिखते हैं। ऐसा अभिजनों द्वारा कॉंफ्रेस हाल में हावी रूढ़िवादी शक्तियों को उदार बनाने की कोशिशों को छोड़ने से हुआ। इसके बजाय उन्होंने सड़कों पर एकत्रित अतिवादियों में संभावी सहयोगियों को तलाशने की कोशिश की। फिर भी, पाक वादों के अलावा, पेरिस से दुनिया को बचाने हेतु किसी गंभीर प्रयास के बहुत कम संकेत हैं।

इस अंक में हम रंगभेद विरोधी आंदोलन के दिग्गज एवं प्रमुख समाजशास्त्री – कार्ल वॉन होल्डर के साथ साक्षात्कार प्रस्तुत करते हैं। वे एल्फ निलसेन को दक्षिण अफ्रीका के "हिंसक लोकतंत्र" और सेवा प्रदान करने के इर्द गिर्द उत्पन्न बस्ती संघर्ष पर अपने शोध के बारे में वर्णन करते हैं। इसके बाद अन्य प्रकार की हिंसा के विवरण हैं। मारिस्तेला स्वाम्पा और उनके सहकर्मी नई संकर्षणवादी अर्थव्यवस्था, जो लातिन अमरीका का विनाश कर रही है, का वर्णन करते हैं। खनन एवं तेल की वृहद परियोजना से लेकर सोया उत्पादन के कृषि व्यवसाय जो चीन की विस्तार होती अर्थव्यवस्था की लालची भूख से प्रेरित है–लाभ के लिए आतुर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और धन की कमी से जूझ रहे राज्यों द्वारा निभाये जाते हैं। अर्जेन्टीना, मेक्सिको और इक्वाडोर से रिपोर्ट बताती है कि कैसे इन परियोजनाओं ने जमीन, जल और वायु की रक्षा करने की माँग करने वाले सामाजिक आंदोलनों से तीव्र विरोध का सामना किया है।

हम भारत, ग्रीस, स्पेन और अर्जेन्टीना से सहकारिता–ये कैसे जीवित है और किस कीमत पर– पर छः लेख का भी प्रकाशन कर रहे हैं। क्या सहकारिता पूंजीवाद का विकल्प है या जैसा लेस्ली स्कंलेयर तर्क देती हैं, पुंजीवाद का रूपांतरण? निस्संदेह ब्राजील सरकार में एकजुट अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीय सचिव, पॉल सिंगर, सहकारिता आंदोलन के एक महान सिद्धान्तकार एवं उल्लेखनीय पेशावर हैं। वैश्विक संवाद के लिए आयोजित साक्षात्कार से जैसा कि स्पष्ट है कि सिंगर कोई उत्साह पूर्ण मसीहा नहीं हैं। उनके लिए सहकारी समितियाँ गरीबों की आजीविका को बनाये रखने का एक साधन है।

अंत में, हमारे पास सोवियत समाजशास्त्र के एक साहसी अग्रदूत, व्लादिमिर यदोव, जिन्होंने सोवियत कार्यविधि की सीमाओं को धकेला और जिनका निधन पिछले वर्ष हुआ, को समर्पित पाँच श्रद्धांजलियाँ हैं। यदोव उत्तर–सोवियत के समाजशास्त्र की बहस में मुख्य व्यक्ति थे। आई. एस. ए. के उपाध्यक्ष (1990–94) के रूप में कार्य कर, अपने कैरियर के दौरान वे एक गहन अंतर्राष्ट्रीयवादी थे। विद्यार्थियों एवं सहकर्मियों के प्रिय, उनके निधन पर सबको गहरा शोक है।

इस अंक के साथ जुआन पिओवानी, मारिया जोस अल्वारेज से वैश्विक संवाद का स्पेनिश अनुवाद का उत्तरदायित्व ग्रहण कर रहे हैं। हम जुआन का स्वागत करते हैं और मजो और उसकी टीम को चार वर्षों की समर्पित सेवा के लिए धन्यवाद देते हैं।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 16 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

*जलवायु परिवर्तन वार्ता के नजदीक अवलोकनकर्ता, **हर्बर्ट डोसेना**, पेरिस शिखर सम्मेलन में बदलते राजनैतिक वैश्विक गठबंधनों का विश्लेषण करते हुए।*

*विद्वान एवं कार्यकर्त्ता, **कार्ल वॉन होल्डट**, दक्षिण अफ्रीका में प्रतिरोध के राजनैतिक गतिकि/गतिशीलता के विश्लेषण की पेशकश करते हुए।*

*विद्वान, राजनीतिज्ञ एवं लोक बुद्धिजीवी, **पॉल सिंगर** ब्राजील में एकजुट अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त एवं व्यवहार के अग्रणी इतिहास की व्याख्या करते हुए।*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Argentina:
Juan Ignacio Piovani, Pilar Pi Puig, Martín Urtasun.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Rafael de Souza, Benno Alves, Julio Davies.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Pragya Sharma, Nidhi Bansal, Pankaj Bhatnagar.

Indonesia:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Abdolkarim Bastani, Niayesh Dolati, Saeed Nowroozi, Vahid Lenjanzade.

Japan:
Satomi Yamamoto, Hikari Kubota, Shuhei Matsuo, Yutaro Shimokawa, Masaki Yokota.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Adil Rodionov, Gani Madi, Almash Tlespayeva, Almas Rakhimbayev.

Poland:
Jakub Barszczewski, Ewa Cichocka, Mariusz Finkielsztein, Krzysztof Gubański, Kinga Jakieła, Justyna Kościńska, Martyna Maciuch, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Patrycja Pendrakowska, Zofia Penza,Teresa Teleżyńska, Anna Wandzel, Justyna Zielińska, Jacek Zych.

Romania:
Cosima Rughiniş, Corina Brăgaru, Roxana Alionte, Costinel Anuţa, Ruxandra Iordache, Mihai-Bogdan Marian, Ramona Marinache, Anca Mihai, Adelina Moroşanu, Rareş-Mihai Muşat, Marian Valentin Năstase, Oana-Elena Negrea, Daniel Popa, Diana Tihan, Elisabeta Toma, Elena Tudor, Carmen Voinea.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

Media Consultants: Gustavo Taniguti.

Editorial Consultant: Ana Villarreal.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : पर्यावरण एवं हिंसक आंदोलन **2**

जलवायु परिवर्तन की राजनीति
हर्बर्ट डोसिना, यू. एस. ए. **4**

दक्षिण अफ्रीका का हिंसक लोकतंत्र : कार्ल वॉन होल्ड्ट के साथ साक्षात्कार
एल्फ निलसेन, नार्वे **7**

> सहकारिता का विकल्प

एकजुट अर्थव्यवस्था : पॉल सिंगर के साथ साक्षात्कार
गुस्तावो तनित्रुटी एवं **रेनान दियास दे ओलिवेरा, ब्राजील** **11**

उरालुंगल : भारत की सबसे पुरानी श्रमिक सहकारी समिति
मिशेल विलियम्स, दक्षिण अफ्रीका **14**

मॉनड्रेगन सहकारी समिति : सफलताएँ एवं चुनौतियाँ
शररयन कास्मीर, यू. एस. ए. **16**

ग्रीस में बिचौलिया–विरोधी आंदोलन
थियोडोरोस रकापोलास, नार्वे **18**

अर्जेन्टीना में स्वस्थ होते उद्यम
जूलियन रेबॉन, अर्जेन्टीना **20**

दुनिया का अंत या पूंजीवाद का अंत?
लेस्ली स्कलेयर, यूनाइटेड किंगडम **22**

> लातिन अमरीका में पूंजीवादी संकर्षण

लातिन अमरीका में नव–खनन सकेंद्रण पर बहस
मरिस्तेला स्वाम्पा, अर्जेन्टीना **24**

इक्वाडोर में संकर्षणवाद बनाम् Buen Vivir
विलियम सचेर एवं **मिशेल बेज, इक्वाडोर** **26**

मेक्सिको में जन सामान्य के लिए संघर्ष
मीना लोरेना नवारो, मेक्सिको **28**

अर्जेन्टीना का नव खननवाद
मरियन सोला अल्वारेज, अर्जेन्टीना **30**

> स्मृति में : व्लादिमिर यदोव, 1929–2015

मुक्त समाजशास्त्र को समर्पित जीवन
मिखाइल चेरनेश, रूस **32**

विद्वान एवं मानवतावादी
आन्द्रे एलेकसीव, रूस **34**

सलाहकार, सहकर्मी और मित्र
तात्याना प्रोतासेन्को, रूस **36**

निजी स्मृतियाँ
वेलन्तिना उज्नोवा, रूस **38**

सोवियत और उत्तर–सोवियत समाजशास्त्र की एक महान हस्ती
गेवोर्क पोगहोस्यान, अर्मेनिया **39**

> जलवायु परिवर्तन की राजनीति

हर्बर्ट डोसिना, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू एस ए एवं श्रमिक आन्दोलनों से सम्बद्ध आई.एस.ए. की शोध समिति (आर सी 44) के सदस्य

जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन, पेरिस पर सड़कों पर प्रतिरोध/परिवर्तन करते हुए।

जलवायु न्याय आन्दोलन में कुछ लोगों के लिए जलवायु परिवर्तन हेतु वैश्विक टकराव की स्थितियाँ पूरी तरह से सुरक्षा से सज्जित उन दीवारों अर्थात् उस परिसर के अन्दर है जहाँ संयुक्त राष्ट्र (यू एन) का जलवायु परिवर्तन अधिवेशन चल रहा हो। इस परिसर के बाहर ''आन्दोलन'' चल रहा है अर्थात् विभिन्न देशों से आये वे लोग जो सड़कों पर ''व्यवस्था परिवर्तन ना कि जलवायु परिवर्तन'' की मांग कर रहे हैं। परिसर के अन्दर विभिन्न राज्यों एवं कारपोरेशन्स के अधिकारी व्यवस्था को अपरिवर्तनीय रखने के लिए संघर्षरत है। परिणामस्वरूप अनुभवी कार्यकर्ता रीबिका सोलनिटने हाल की संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन की बैठक के पूर्व अपने लेख में मत व्यक्त किया कि 'पेरिस की सड़कों पर लोग' एवं 'ली बउरगेट के कांफ्रेस कमरों में उपस्थित लोगों' के मध्य स्पष्ट विभाजन देखा जा सकता है। सोलनिट का मत है कि जो लोग सड़कों पर है वे अब 'विश्व को बदलने की शक्ति' रखते हैं।

'कांफ्रेस कमरों' एवं 'सड़कों' के मध्य के इस विभाजन को आन्दोलन से जुड़े एवं आन्दोलन से बाहर के लोगों ने स्वीकारा और यही प्रवृत्ति जो कि जलवायु परिवर्तन की राजनीति से सम्बद्ध है को समझने का आधारभूत पक्ष है। पर साथ ही यह दोनों पक्षों की जटिल होती जाती परिवर्तनमूलक एवं विभाजनकारी रेखा में बाधा उत्पन्न करता है और हमें इस पक्ष को देखने में बाधा डालता है कि कैसे कुछ ''कांफ्रेस कमरों से जुड़े लोग'' कोशिश करते हैं कि वे ''सड़कों से सम्बद्ध लोगों'' को जीतें जो कि व्यवस्था के परिवर्तन के विमर्श द्वारा सम्भव है। कांफ्रेस कमरों से जुड़े ये लोग भी व्यवस्था परिवर्तन के पक्षधर है।

> कांफ्रेंस कमरों में संघर्ष

अनेक लोग, अधिकांश नहीं, जिनमें राज्यों के अधिकारी, व्यापार व वाणिज्य से जुड़े प्रशासक, विशेषज्ञ एवं अन्य कर्ता जो कांफ्रेस कमरों में सक्रिय हैं, व्यवस्था के परिवर्तन को रोकने हेतु कार्यरत हैं। वे अपने देशों द्वारा पनपायी गयी प्रतियोगीशीलता एवं अपने देशों के लाभ संग्रहण के संरक्षण को समर्थन देते है। वे अनवरत रूप से वैश्विक पूंजीवाद के नियमन के प्रयासों का विरोध करते हैं। नियमन के ये प्रयास जलवायु परिवर्तन से जुड़े हैं। ये सब लोग जो करते हैं को 'हरित को समाप्त करना' अथवा आपदा/विनाश से लाभ अर्जन से जोड़ा जा सकता है।

>>

लेकिन सत्ता के गलियारों में सक्रिय सभी लोगों की दृष्टि अल्पकालिक नहीं है और यह आवश्यक भी नहीं है। विश्व के अभिजनों का एक भाग 1970 एवं 1980 के दशक से 'व्यवस्था के परिवर्तन' के लिए लोगों को सक्रिय कर रहा है लेकिन इस में निहित पूंजीवादी सारतत्व को अक्षत बनाये रखने के लिए प्रतिबद्ध है। रेडिकल (आमूलचूलकारी) बुद्धिजीवी, वैज्ञानिकों, लेखकों एवं सांगठनिक नेतृत्वों ने ऐसे समर्थकों की संख्या में वृद्धि कर ली है जो उनके आव्हान पर आमूलचूलकारी व्यवस्थापक परिवर्तन के प्रयासों को स्वीकारते हैं, ये समर्थक वैश्विक पारिस्थितिकीय समस्याओं के निदान हेतु पूंजीवाद की समाप्ति के पक्षधर हैं। इसे रोकने हेतु विकसित एवं विकासशील देशों के अभिजनों ने साथ साथ एकत्रित होना शुरू किया, वैश्विक नियमन से जुड़े पक्षों पर विमर्श करना शुरू किया, सुधार एवं रियायतों के समर्थन किये और कम से कम पूंजीवाद से सम्बद्ध पारिस्थितिकीय अन्तः विरोधों का प्रबन्धन किया एवं वैश्विक तापमान वृद्धि से सर्वाधिक प्रभावित लोगों को कुछ सहायता देने के प्रावधानों का समर्थन किया।

''व्यवस्था संरक्षणवादी व्यवस्था परिवर्तन'' के प्रस्तावों के अन्तर्गत इन सुधारवादी अभिजनों एवं अन्यों ने अपने से निम्न वर्गों की परियोजनाओं पर चर्चा कर कुछ विचार उत्पन्न किए तथा कुछ संरक्षणवादी अभिजन सहयोगियों को प्रेरित किया कि वे प्रस्तावित सुधारों एवं रियायतों को रोकें। 1980 के दशक से सुधारवादियों में धीरे धीरे विभाजन की स्थितियाँ उभरी। साथ ही यह विभाजन गहराता गया।

एक अधिक संगठित एवं ज्यादा कट्टर संरक्षणवादी विरोध के फलस्वरूप कुछ सुधारवादियों, हम इन्हें लोकप्रिय सुधारवादी कह सकते हैं, जैसे पर्यावरणीय सुरक्षा फण्डस के (ई. डी. एफ.) फ्रैड कुरूप एवं अमेरिका के सीनेटर अल गोरे एवं अनय समान दृष्टि रखने वाले अधिकारी, कार्यकारी, संगठनों के मुखिया एवं सक्रिय कार्यकर्ता जो कि विकसित व विकासशील देशों से जुड़े हैं, का यह मत उभरा कि वे अपने प्रस्तावित सुधारों एवं रियायतों की सुरक्षा ही कर सकते हैं एवं इस हेतु उन्हें अपने सहयोगी अभिजनों का तुष्टिकरण करना होगा तथा उनके साथ समझौते/सन्धियाँ करनी होंगी। इन सन्धियों को आगे बढ़ाने के लिए इन्होंने घरेलू एवं वैश्विक नियमन प्रणाली का व्यापक समर्थन किया जिनसे संरक्षणवादी मांगों को स्वीकार किया जा सके। विश्व स्तर पर उन्होंने उन अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों की अगुआई व समर्थन शुरू किया जो कि निम्न उत्सर्जन कटौती के उन लक्ष्यों से सम्बद्ध हैं जिन्हें विकसित देशों के लिए निर्धारित किया गया है, उन्हें इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्बन ट्रेडिंग एवं बाजार की अन्य प्रणालियों के क्षेत्र में और अधिक ''लचीलापन'' दे दिया गया और उन्हें उस दायित्व से मुक्त कर दिया गया कि वे कम विकसित देशों को आर्थिक अनुदान एवं प्रौद्योगिकीय सहयोग प्रदान करें।

जब ये रियायतें संरक्षणवादी प्रतिरोध को सन्तुष्ट करने में असफल हुई तो उन्होंने और भी कमजोर प्रतिबद्धताओं को सामने लाने का काम प्रारम्भ किया। 'आप क्या चाहते हैं' के अन्तर्गत न्यूनतम मांगों की स्वीकृति पर केन्द्रित समझौता सन् 2009 में कापनहेगन में हुआ–आवश्यक रूप से यह उस प्रकार का समझौता था जिसे 1990 के दशक के प्रारम्भ में संरक्षणवादियों ने प्रस्तावित किया था एवं आवश्यक रूप से ठीक इसी तरह ऐसा समझौता कुछ संशोधनों के साथ, जो कि छोटे मोटे थे, सरकारों ने पेरिस में प्रस्तावित किया था।

लेकिन अन्य 'अन्दर सक्रिय लोग' (इनसाइडर्स) हमेशा से, और धीरे धीरे और अधिक, इस रणनीति के विषय में संशयशील थे। उन्हें इस पक्ष को लेकर कुण्ठा थी कि व्यवस्था परिवर्तन के उनके प्रयास आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। ऐसे प्रगतिशील अधिकारी एवं सदस्यों, जो कि विकसित एवं विकासशील देशों की सरकारों, फाउण्डेशन्स (संगठनों) एवं पर्यावरणीय समूहों से सम्बद्ध थे, ने इस दृष्टिकोण का व्यापकीकीरण किया कि वे इन सुधारवादी परियोजनाओं से मुक्ति तभी पा सकते हैं जबकि वे 'जमीन से जुड़े लोगों' अर्थात् 'सड़क पर सक्रिय लोगों' के साथ जुड़े और संरक्षणावादी अभिजनों के साथ किये जाने वाले सहयोग के विचार एवं प्रयासों की उपेक्षा करें।

ई डी एफ, 1 स्काई निदेशक (बाद में 350, संगठन के संस्थापक) बिल मैक्बिन ने, सन् 2010 में, संरक्षणवादियों द्वारा इन समूहों (ई डी एफ, 350, संगठन आदि) के द्वारा जलवायु समझौता अधिनियम को पराजित करने के बाद एक पत्र लिखा जिसमें तर्क दिया कि :

> हमें जमीन से जुड़े लोगों के आन्दोलन की रचना हेतु निवेश को पुनः दुगना करना आवश्यक है (...) हम यह सशक्त रूप से महसूस करते हैं कि जमीनी संगठनों में लम्बे समय से कम निवेश ने हमारी नीतियों को आगे बढ़ाने की हमारी दक्षता को बुरी तरह से नकारात्मक रूप में प्रभावित किया है और हमें काफी नुकसान पहुंचाया है (...)। हालांकि हमें यह पता है कि यह ऐसा कार्य है कि जिसे रातों रात यानि तत्काल पूरा नहीं किया जा सकता। इस कार्य में अनेक वर्ष लगेंगे और इसमें समय एवं संसाधनों की गहन एवं धैर्यपूर्वक निवेश की प्रक्रिया पर हमें कार्य करना होगा।

सुधारवादी समूहों के बीच इस तर्क की महत्वपूर्ण गूँज सुनाई देने लगी। सन् 2013 में एक व्यापक रूप से पहुंच वाले अध्ययन, जो कि राक फेलर फेमिली फण्ड द्वारा संचालित एवं अनुदानित था और जो इन तथ्यों को जानने हेतु था कि क्यों पर्यावरण विशेषज्ञ अपने प्रस्तावों को पारित करवाने में असफल हो जाते हैं, में प्रसिद्ध समाजशास्त्री थेडा स्कोस्पाल ने मैक्विन एवं अन्यों की 'अन्दर सक्रिय लोगों (इनसाइडर्स) की राजनिति' की आलोचना का समर्थन किया। इस आलोचना को ई डी एफ जैसे समूहों ने आगे बढ़ाया था। स्कोस्पाल ने इस सुझाव का समर्थन किया कि एक 'व्यापक लोकप्रिय आन्दोलन' की रचना पर बल दिया जाए।

> सड़क पर सुधारवादी

इस रणनीति पर कार्य करते हुए सन् 2000 के दशक से लोकप्रिय सुधारकों ने 'जमीन से जुड़े आन्दोलन' को सशक्त बनाने हेतु अपनी उर्जा, ध्यान एवं संसाधनों के निवेश को पुनः दुगना किया है और इसके माध्यम से उन समूहों को सक्रिय करने की कोशिश की है जिन्हें रेडीकल्स (आमूलचूल परिवर्तनवादी) अपनी रेडीकल परियोजनाओं के संचालन हेतु सक्रिय किए हुए थे।

इन समूहों पर विजय पाने हेतु इन सुधारवादियों ने उन रियायतों को प्रदान करने हेतु पूरी ताकत लगायी जिन्हें रैडीकल्स लम्बे समय से अपने 'न्यूनतम' कार्यक्रम के क्रियान्वयन के दौरान प्रदान कर रहे थे। अतः हालांकि वे आवश्यक रूप से बाजार–आधारित नियमन प्रावधानों जैसे कार्बन ट्रेडिंग की सैद्धान्तिक रूप से असहमति व्यक्त नहीं कर रहे थे, मैक्बिन एवं अन्य समान दृष्टिकोण रखने वाले पर्यावरण विशेषज्ञ तथा ग्रीन पीस के सक्रिय कार्यकर्ता तुलनात्मक रूप से ज्यादा प्रत्यक्ष ''गैर–बाजारी'' नियमन जैसे जीवाश्म–ईंधन उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रतिबन्ध के समर्थक थे क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से स्थानीय जीवाश्म ईंधन से प्रभावित समुदायों को लाभ पहुंचाता था–यह एक ऐसा प्रस्ताव था जो कि इन ''उत्पादों (तेल, कोयला, गैस) को स्थानीय लोगों तक पहुंचाता था'' इस प्रस्ताव को पहली बार रेडीकल पूंजीवादी–विरोधी विचारकों ने लोकप्रिय बनाया।

सामान्यतः इन लोगों (विचारकों) ने ऐसी आशावादी एवं मजबूत अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों को लागू करने पर बल दिया जिसमें विकसित देशों से कहा गया था कि वे उच्च उत्सर्जन कटौती के लक्ष्यों पर खरे उतरें, कार्बन ट्रेडिंग को समाप्त करें या इसके संचालन के नियमों में कठोरता लायें एवं अधीनस्थ समूहों को महत्वपूर्ण तरीके से वित्तीय एवं प्रौद्योगिकीय सहायता दें। परिणाम स्वरूप उन्होंने सामान्यतः सन् 2009 में कापनहेगन की शपथ आप क्या चाहते हैं 'न्यूनतम क्रम' (बॉटम–अप) कार्यक्रम का विरोध किया एवं अन्य सुधारवादी, जो कि पेरिस में हस्ताक्षर किये गये नवीन कापनहेगन जैसी सन्धि से जुड़े थे, की तुलना में ज्यादा आलोचक सिद्ध हुए।

>>

लेकिन इस तथ्य को लोग भली भाँति जानते थे कि ऐसी कठोर व साहसी सन्धियाँ एवं नियमन प्रणाली को ''सहभागी होकर प्राप्त नहीं किया जा सकता या फिर कारपोरेशन्स (निगमों) एवं सरकारों के साथ 'जलवायु कार्यवाही' के विषय पर लाबिंग'' कर प्राप्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने उदार सुधारवादियों के साथ सम्बन्ध विच्छेदित किये और अनेक ''बाहरी'' समूहों जैसे विद्यार्थी, श्रमिक, ग्रामीण समुदाय एवं अन्यों के साथ सहभागिता एवं सांगठनिक समन्वय पर अधिक ध्यान व समय देना शुरू किया साथ ही अन्यों को ''अन्दर सक्रिय'' के सर्किल (क्षेत्र) से पृथक कर दिया (अथवा वे स्वयं ही पृथक हो गये)। परिणामस्वरूप निगमों एवं सरकारों के साथ संघर्षमूलक क्रियाओं में तीव्रता आयी।

हालांकि वे स्वयं पूंजीवादी विरोधी दृष्टिकोण से परहेज करते हैं, मैक्बिन ने एक प्रसिद्ध नव्य–उदारवाद विरोधी लेखक तथा लम्बे समय से पूंजीवाद विरोधी क्रान्तिकारी, जो कि 350. ओ आर जी (350 org) के अधिशासी मंडल का एक भाग है, को आमन्त्रित किया। 350. ओ आर जी के सक्रिय कार्यकर्ता समुदाय आधारित संघर्षों का समर्थन कर रहे हैं ये संघर्ष कोयला उर्जा एवं अन्य गन्दी परियोजनाओं के (जो कि उर्जा से सम्बद्ध हैं) विरूद्ध हैं। ये कार्यकर्ता इन सबके निकट पहुंचने के लिए भी प्रयासरत है। इन संघर्षों को केवल उत्तरी क्षेत्र में ही नहीं देखा जा सकता ये फिलीपीन्स जैसे देशों में भी जारी हैं।

पेरिस में मैक्बिन एवं 350. ओ आर जी के अन्य सक्रिय कार्यकर्ताओं ने तो ''जन अदालतों/अधिकरणों के आयोजनों को प्रारम्भ किया जहां विशाल तेल कारपोरेशन एक्सान को ''जलवायु के प्रति सन्देहास्पदों'' को अनुदान देने एवं जलवायु सक्रियता का विरोध करने वाले राजनीतिज्ञों को आर्थिक मदद के आरोपों के आधार पर अभियोजित किया गया एवं इन लोगों ने अराजकतावादियों तथा पूंजीवाद के विरोध में सीधी कार्यवाही करने वाले सक्रिय समूहों के साथ घनिष्ठ सहयोग व समझौता कर उन्हें आगे बढ़ाया और संगठित किया तथा उन्हें संसाधन सम्बन्धी सहयोग किया परिणामस्वरूप सम्मेलन के आखिरी दिन एक विशाल सविनय अवज्ञा आन्दोलन आयोजित हुआ जबकि इस विषय पर उदारवादी सुधार समूहों ने यातो खुल कर विरोध किया अथवा चुपचाप इसमें निवेश करने से इन्कार कर दिया।

इन लोगों ने अन्य सुधारवादियों की तुलना में आगे बढ़कर और आमूल चूल परिवर्तनकारी (रेडीकल) सुधारों को आगे बढ़ाया। इन लोगों ने रेडीकल समूहों के साथ सहयोग किया और आमने सामने की कार्यवाहियों को मूर्त रूप दिया जबकि लोकप्रिय सुधारवादियों ने अपने कारपोरेट/नव्य उदारवाद विरोधी दृष्टिकोणों के और परे जाने से स्वयं को पीछे ले लिया और स्पष्ट पूंजीवादी विरोध से भी स्वयं को पीछे कर लिया। अतः जहां मैक्बिन एवं उनके सहयोगियों ने 'जन अदालतों अथवा जन अभिकरणों' में एक्सान की भर्त्सना की जबकि उदारवादी/सुधारवादी ने अपनी 'जन अदालतों/अभिकरणों' में अन्य सक्रिय कार्यकर्ताओं के साथ स्वयं को न केवल एक्सान अपितु सभी निगमों (कारपोरेशन्स) एवं सरकारों के ऊपर आरोप लगाने के कृत्यों से स्वयं को दूर रखा। इन निगमों एवं सरकारों ने पूंजीवाद को तीव्र गति प्रदान कर ''जलवायु परिवर्तन'' में योगदान किया था।

ठीक इसी भाँति 350. ओ. आर. जी. के सदस्यों ने पेरिस सम्मेलन के आखिरी दिन एक विशाल सविनय अवज्ञा/जन अवज्ञा आन्दोलन को संचालित करने में सहायता की। लेकिन जब अन्य आयोजक खुले रूप में सहभागियों को स्पष्ट कर रहे थे कि वे आर्क डे ट्रियोम्फी एवं ला डिफेंस व्यवसाय जिलों (बिजनिस डिस्ट्रिक्स) द्वारा राज्य एवं पूंजीपतियों का प्रतिनिधित्व करने की प्रणाली से आमने सामने आकर सीधी कार्यवाही करेंगे, 350. ओर आर जी के द्वारा वितरित साहित्य में कहा गया कि जीवाश्म ईंधन से सम्बन्धित उद्योग/कम्पनियाँ अथवा ''बुरे पूंजीपति'' एक मात्र न सही पर मुख्य निशाने पर है। पर जब जिस दिन आन्दोलनात्मक कार्यवाही हुई तो अराजकतावादियों एवं अन्य पूंजीपति विरोधी समूहों के सदस्य, जो सापेक्षिक रूप में कम संख्या में थे और जिन्हें अनुदान कम मिला था, अपने द्वारा बनाये गये प्ले कार्ड्स लाये थे जिनमें लिखा था कि ''व्यवस्था को अपने काले कारनामों से मुक्त करो'' और ''पूंजीवादी ताकतों हमारा दामन छोड़ो।'' वे सदस्य जिन्हें अधिक आर्थिक सहायता मिलती है अर्थात् 350. ओ आर जी के सदस्यों ने 2×200 मीटर का एक विशाल बैनर प्रदर्शित किया जिस पर लिखा था ''जलवायु अपराधों को रोको'' एवं ''ऐसे क्रियाकलापों को तत्काल वापस लो।'' इन सब के बीच में छोटे छोटे प्ले कार्ड्स एवं बैनर्स भी आन्दोलन में नजर आ रहे थे जिनमें सबसे आगे दिख रहे बैनर पर लिखा था ''व्यवस्था परिवर्तन न कि जलवायु परिवर्तन।''

>विभाजित सड़कें

सुधारवादी ब्लॉक (समूह) के एक हिस्से का यह प्रयास कि अन्तः विरोधी कार्यवाहियाँ, जो कि संरक्षणवादी अभिजनों के विरूद्ध करनी है और व्यापक की जावें ने आमूलचूल परिवर्तनकारियों (रेडीकल्स) के मध्य विभाजन को गहरा कर दिया क्योंकि वे वास्तव में व्यवस्था को चुनोती दिये बिना ऐसा करने के इच्छुक थे। जबकि संरक्षणवादी साधारण प्रकृति के सुधारों को भी रोक रहे थे जो सम्भवतया भूमण्डलीय तापमान की वृद्धि से प्रभावित होने वाले समुदायों में उन्नयन के प्रयासों से जुड़े थे। लोकप्रिय सुधारवादी इनके साथ मिल कर उन सुधारों का समर्थन कर रहे थे। आमूलचूल परिवर्तन के समर्थक समूह एवं संगठन दो विरोधी अथवा विपरीत केन्द्रों में बँट गये थे। अतः कुछ लोगों ने सामान्य रूप से सुधारवादियों के साथ समझौते कर सहयोगी की भूमिकाओं को अपनाया या विशिष्टतः लोकप्रिय सुधार वादियों के साथ सहयोग किया ताकि सीमित प्रकृति के सुधारों एवं रियायतों का तो कम से कम समर्थन किया जावे यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि संरक्षणवादी तो इन सुधारों एवं रियायतों को भी रोक रहे थे। इसके बाद वे उन सुधारवादी विमर्शों को विस्तार दे रहे थे और इस हेतु उनका तर्क था कि पूंजीवाद के वैश्विक नियमन की कमी मुख्यतः जलवायु संकट का कारण है। इस नियमन प्रणाली को क्रियान्वित कर इस संकट का समाधान किया जा सकता है। इस प्रणाली के मुख्य शत्रु जीवाश्म ईंधन के उद्योग अथवा ''बुरे पूंजीपति'' एवं ''बुरे अभिजन'' हैं जो इस वैश्विक नियमन प्रणाली का विरोध कर रहे हैं, हालांकि ये अकेले शत्रु नहीं हैं। अन्य लोगों ने ऐसे सहयोग को अस्वीकृत कर दिया क्योंकि उन्हें आशा थी कि आधारभूतीय परिवर्तनों को समर्थन मिलेगा और उन्हें आगे बढ़ाया जा सकता है। सुधारवादी व्यवस्था परिवर्तन को पूर्ण रूपेण अस्वीकृत किये बिना, वे इस तर्क पर बल दे रहे थे कि हमें सुधारवादी विमर्श के परे जाकर यह घोषणा करनी होगी कि वैश्विक नियमन प्रणाली में कमी वस्तुतः पूंजीवादी के अन्तः विरोधों से उभरी है अतः इस नियमन प्रणाली को आगे बढ़ाना तभी सम्भव है जब पूंजीवाद की समाप्ति हो। समस्या का समाधान तभी सम्भव है। अतः ''शत्रुओं में'' ''अच्छे पूंजीपति'' एवं ''अच्छे अभिजन'' भी सम्मिलित हैं। ये शत्रु ''व्यवस्था परिवर्तन'' की कोशिश कर रहे है ताकि उसे ही व्यवस्थित रूप से निरन्तरता दी जा सके।

अतः विपरीत समूहों के मध्य की विभाजन रेखा ''अन्दर सक्रिय लोग'' (इन साइडर्स) एवं ''बाहर सक्रिय लोग'' (आउट साइडर्स), जो कि संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन अधिवेशन से सम्बद्ध हैं, के मध्य नहीं हैं और न ही ये कभी हो सकती हैं ये लोग भी कान्फ्रेन्स कमरों के अन्दर, कान्फ्रेन्स कमरों के मध्य एवं सड़कों पर सक्रिय क्रियाएं करते रहते हैं। ''सड़कों पर सक्रिय लोग'' कब एवं कैसे विश्व को बदलने की शक्ति की रचना करेंगे एवं ''कान्फ्रेन्स कमरों में सक्रिय लोगों'' के ऊपर अपने वर्चस्व को स्थापित करेंगे। यह प्रयास इस पक्ष पर आधारित होगा कि सड़कों पर कौन विजयी होता है। ■

हैर्बर्ट डोसिना से पत्र व्यवहार हेतु पता <herbertdocena@gmail.com>

> दक्षिण अफ्रीका का हिंसक लोकतंत्र

कार्ल वान होल्ड्ट से एक साक्षात्कार

1993 : कार्ल वान होल्ड्ट ए.एन.सी. अलायंस द्वारा आयोजित आजादी के आंदोलन के मार्च में भाग लेते हुए। फोटो विलियम मतलाला द्वारा

कार्ल वान होल्ड्ट का राजनीतिक सक्रियता एवं शैक्षणिक/वैचारिक योगदान का एक विशिष्ट एवं लम्बा इतिहास है। जिस समय दक्षिण अफ्रीकी समाज में पाये जा रहे आन्दोलन को श्रमिक निर्देशित कर रहे थे, होल्ट 'साउथ अफ्रीकन लेबर बुलेटिन' (दक्षिण अफ्रीकी श्रमिक पत्रिका) के सम्पादक थे। उनहोंने सी ओ एस ए टी यू (कांग्रेस ऑफ साउथ अफ्रीकन ट्रेड यूनियन्स) के नीति संस्थान (एन ए एल इ डी आइ) के साथ काम किया तथा सी ओ एस ए टी यू के श्रमिक संघों के भविष्य से सम्बद्ध आयोग के समन्वयक के रूप में भूमिका निर्वाह किया (1996–97)। हाल के वर्षों में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रीय आयोग में श्रमिक प्रतिनिध के रूप में सक्रिय योगदान किया। वर्तमान में होल्ट विटवाटरस्रान्ड विश्वविद्यालय, जोनासनबर्ग सोसायटी वर्क एण्ड डवलपमैण्ट इन्स्टीट्यूट (समाज कार्य एवं विकास संस्थान) के निदेशक हैं। 'ट्रांजिशन फ्राम ब्लो : फोर्जिंग ट्रेड यूनियनिज्म एण्ड वर्कप्लेस चेन्ज इन साउथ अफ्रीका' उनके द्वारा प्रकाशित अनेक पुस्तकों में से एक है जो कि दक्षिण अफ्रीका में लोकतन्त्र के संक्रमणकालीन दौर का अत्यन्त महत्वपूर्ण विश्लेषण है। माइकल बुरावे के साथ 'कन्वरसेशन विद बोर्दियो : द जोनासनबर्ग मूमैण्ट' पुस्तक के वे सह लेखक हैं। उनके वर्तमान शोध कार्यों में राज्य संस्थाओं की कार्यप्रणाली व प्रकार्य, सामूहिक हिसा एवं समिति मूलक/सहयोगमूलक जीवन, हिंसक लोकतन्त्र, नागरिकता एवं नागरिकीय समाज के विषय सम्मिलित हैं वान होल्ट आई एस ए की श्रमिक आन्दोलनों की शोध समिति (आर सी 44) के सदस्य हैं। वर्जेन विश्वविद्यालय के आल्फगुनवाल्ड नीलसेन ने वान होल्ट से यह साक्षात्कार लिया है। इस साक्षात्कार के लम्बे भाग को नार्वेजियन सोश्यालिजकल एसोशियेसन के न्यूज लैटर (समाचार पत्रिका) नार्वेजियन में पढ़ा जा सकता है।

>>

जब सन् 1994 में दक्षिण अफ्रीका रंगभेद से लोकतन्त्र की तरफ आकार ग्रहण करता है तो यह सब उस जन संघर्ष का परिणाम है जो दशकों तक चला और जिसके कारण लोकतान्त्रिक शक्तियों की जबरदस्त विजय हुई और जिसके कारण लोगों में आशा जगी। ''एक अत्यधिक असाधारण मानव त्रासदी जो बहुल लम्बे समय तक चली के अनुभवों'' से उभरे नवीन निर्वाचित राष्ट्रपति नेलसन मण्डेला ने घोषणा की कि ''एक ऐसे समाज की अब रचना होना चाहिए जिस पर मानवता को गर्व हो।'' लगभग बीस वर्षों के उपरान्त दक्षिण अफ्रीका में जो सामाजिक यथार्थ उभरे हैं उनसे दक्षिण अफ्रीका की छवि जटिल हुई है। नवीन राजनीतिक स्वतन्त्रता के बावजूद मजबूत प्रजातीय असमानता एवं निर्धनता विद्यमान है। इस ''इन्द्रधनुषीय राष्ट्र'' में जारी दीर्घकालिक असमानताओं की व्यापकता के कारण अन्य अफ्रीकी देशों से आये प्रवासियों पर पूर्वाग्रही एवं द्वेषपूर्ण आक्रमण हो रहे हैं। एक समाजशास्त्री इस जटिल एवं अन्तः विरोधी परिदृश्य के आधार पर क्या दृष्टिकोण विकसित करता है?

> दक्षिण अफ्रीका का हिंसक लोकतन्त्र

कार्ल वॉन होल्ट का कथन है कि ''ऐसी बहुत सी स्थितियाँ हैं जो विरोधाभासी एवं चिन्ताजनक हैं।'' कार्ल वान होल्ट विटवाटरस्रान्ड विश्वविद्यालय में सह प्रोफेसर हैं तथा समाज, श्रम एवं विकास संस्थान जो विश्वविद्यालय में सह प्रोफेसर हैं तथा समाज, श्रम एवं विकास संस्थान जो विश्वविद्यालय का भाग हैं के निदेशक हैं। वान हाल्ट केवल एक समाजशास्त्री के रूप में ही विचार व्यक्त नहीं करते अपितु उनका व्यक्तित्व ऐसा भी है जो सक्रियता एवं वैचारिकी दोनों के मध्य सन् 1980 के दशक से गतिशील है।

वॉन होल्ट रंगभेद के पतन को अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रघटना के रूप में स्वीकारते हैं।'' हम जिस विश्व में पहले रहते थे वहाँ प्रजातीय प्रभुत्व, दमन, प्रत्येक दिन व्यवस्था की संस्थागत क्रूरता विद्यमान है, अब यह दबाव समाप्त हो गया है।'' पर ठीक इस समय भी एक ऐसी रेखांकित करने वाली एवं अन्तर्निहित संरचना उपस्थित है जहाँ बहिष्करण विद्यमान है। वॉन होल्ट का मत है कि इन स्थितियों के बावजूद यह तर्क देना कि केवल आंशिक परिवर्तन हुआ है, गलत होगा। वास्तव में दक्षिण अफ्रीका में आज के दौर में हो रहे अनेक परिवर्तन हमें सरलीकृत अवधारणा की रचनाओं से रोकते हैं।

राजनीतिक एवं समाजशास्त्रीय दोनों ही दृष्टि से कुछ अव–धारणाओं को लेकर संकट की स्थितियाँ हैं जिसमें राज्य की क्या भूमिका होनी चाहिए एवं सामाजिक व्यवस्था को संगठित किया जाए के विचार सम्मिलित हैं। ये स्थितियाँ पश्चिमी आधुनिकता के संकट से उत्पन्न हुई हैं। जब हम अपने आपको इन अवधारणों के संदर्भों के साथ देखते हैं तो पाते हैं कि हमारे यहाँ लोकतन्त्र नहीं है क्योंकि हमारा समाज हिंसक है। यह निष्कर्ष बहुत आसानी से निकाला जा सकता है। हमारी कमियों के कारण हम निराशा की ओर अग्रसर हो रहे हैं। लेकिन मेरा मानना है कि हमें प्रघटनाओं को भिन्न तरीकों से देखना चाहिए इसमें दो पक्ष है, पहला पश्चिमी इतिहास में ये अवधारणायें कैसे अस्तित्व में आयीं तथा दूसरे हम इन अवधारणाओं को दक्षिण अफ्रीका के संदर्भ में कैसे प्रयुक्त करते हैं।''

प्रघटनाओं को भिन्न दृष्टिकोण से समझने के प्रयास में वॉन होल्ट दक्षिण अफ्रीका को हिंसक लोकतन्त्र की संज्ञा देते हैं। हिंसा एवं लोकतन्त्र पारस्परिक रूप में एक दूसरे के विपरीत नहीं है। उनका मत है कि यह तर्क यूरोप में राज्यों की स्थापना के समय सच था और समकालीन दक्षिण अफ्रीका में भी यह सच है।

यूरोपियन संदर्भ में यह सोचना सरल है कि आधुनिकता शताब्दियों लम्बी प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्याओं को शान्त किया जाता है अर्थात् असहमतियों के विषय में वे सहिष्णु व तर्कसंगत हो जाती है अतः संघर्ष प्रबन्धन के शान्तिपूर्ण तरीके स्थापित हो जाते हैं। लेकिन यदि हम वैश्विक संदर्भ में सोचें तो यह साक्ष्य मिलते हैं कि ये प्रक्रियाएं औपनिवेशिक विजय एवं प्रभुत्व से जुड़ी हैं जो कि यूरोपियन विकास के साथ एकीकृत हो जाती हैं। दक्षिण अफ्रीका में हमारे ऐतिहासिक अनुभव आधुनिकता के विषय में ये है कि यह एक अत्यन्त हिंसक प्रक्रिया है हमने इस हिंसा का अनुभव चार शताब्दियों तक किया हैं।''

वॉन होल्ट के लिए वर्तमान हिंसा का घनिष्ठ सम्बन्ध उन महत्वपूर्ण परिवर्तनों से है जो दक्षिण अफ्रीका में उभरते हैं। विशेषतः अश्वेत अभिजनों की रचना राज्य के भूभाग में हुए संघर्षों के माध्यम से थक कर सामने आयी। दक्षिण अफ्रीका का राजनीतिक निपटारा वॉन होल्ट की दृष्टि में सामाजिक आर्थिक एवं मानवाधिकारों को स्थापित करता है। लेकिन इसने सम्पत्ति अधिकारों को भी संरक्षण दिया। अब दक्षिण अफ्रीका में सम्पत्ति अधिकारों का वितरण 360 वर्षों की औपनिवेशिक बेदखली एवं रंगभेद के द्वारा आकार ग्रहण करता है और साथ ही परिणामस्वरूप यह अत्यन्त प्रभावी तरीके से प्रजातीय है। चूँकि संविधान व्यवस्थित पुनर्वितरण के भविष्य को सीमित करता है अतः देश की अर्थव्यवस्था में राज्य की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। दक्षिण अफ्रीका में राज्य सबसे बड़ा नियोक्ता है तथा विभिन्न प्रकार की संविदाओं के लिए राज्य के पास पर्याप्त बजट प्रावधान हैं। इन प्रक्रियाओं में भारी मात्रा में संसाधन संभाल कर रखने पड़ते हैं अतः इन संसाधनों का मूल्यांकन अभिजन रचना के लिए काफी नाजुक हो जाता है। ऐसा वॉन होल्ट का मानना है। शक्ति प्राप्त करने के लिए तथा शक्ति संरचना में स्वयं को बनाये रखने के लिए आपको समर्थकों, सहयोगियों एवं संरक्षकों के जाल की आवश्यकता होती है। धन एवं संसाधनों तक पहुंच तथा इनका सभी स्तरों पर वितरण वह तरीका है जिससे राजनीतिक पूंजी निर्मित होती है। इसके विपरीत एक उद्यमी को सफल होने के लिए राजनीतिक सम्पर्कों की आवश्यकता होती है। इस तरीके से धन एवं राजनीति एक दूसरे से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध हैं शक्ति संघर्ष धीरे धीरे हिंसात्मक चरित्र के होते जाते हैं क्योंकि विभिन्न गुट एवं प्रतिद्वन्दी एक दूसरे को अगतिमान करने का प्रयास करते हैं। अतः जहाँ पर लड़ाईयाँ हैं वहाँ पर दुष्चक्र बनते रहते हैं।

दक्षिण अफ्रीका का हिंसात्मक लोकतन्त्र निर्धन समुदायों के विरोध की श्रृंखला से भी व्यक्त होता है। ये विरोध सार्वजनिक सेवाओं के वितरण से उभरे असन्तोष से सम्बद्ध है। इन्हें निर्धनों के प्रतिशोध की स्वायत्तशासी अभिव्यक्ति की संज्ञा दी जा सकती है। लेकिन वॉन होल्ट का मत है कि ये विरोध अभिजन रचना की गत्यात्मकता, संगठित संरक्षण के द्वारा अभिजन रचना के विस्तार, संसाधनों तक पहुँच तथा निर्धनों के मध्य गुटों के सम्बन्धों की जाल के रूप में उत्पत्ति के कारण भी होते हैं। वान होल्ट एवं शोध कर्ताओं के एक समूह ने मप्यूमलंगा एवं गाउटेंग क्षेत्रों/प्रान्तों में हुए सामुदायिक विरोधों की अध्ययन परक जाँच करते हुए पाया कि विरोधों को संचालित करने वाले नेतृत्व एवं ए एन सी की इकाइयों के अन्दर विद्यमान राजनीतिक जाल के मध्य अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध थे। वान होल्ट इस स्थिति का तथ्य परक अनुभव करते हैं। जो नेतृत्व इन विरोधों को आगे बढ़ा रहा था सामान्यतः ए एन सी की स्थानीय इकाई के विशिष्ट गुट का भाग था। ये लोग स्थानीय शाखा, जो कि ए एन सी की है, एवं स्थानीय समितियों में शक्ति

>>

2014: समाजशास्त्री कार्ल वॉन होल्डट, ट्रबल नामक एक कस्बे में सामुदायिक प्रदर्शन के दौरान
चित्र : विलियम मतलाला द्वारा

की प्राप्ति के उद्देश्य से जुड़े थे। हालांकि वॉन होल्ट यह तर्क नहीं देते कि निर्धन व्यक्तियों को स्थानीय राजनीतिक अभिजन बहला फुसला सकता है। समुदाय के अन्दर वास्तव में गम्भीर समस्याएं हैं। यदि स्थानीय राजनीतिक नेतृत्व अभिजन बनने का इच्छुक है तो उसे इस निर्धन जनसंख्या के असन्तोष को बाहर निकालना पड़ता है। और इस तरीके से निर्धन जनसंख्या भी अपनी आवाज को पहुंचाने के लिए तथा अपर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता हेतु इन नेताओं का उपयोग करती है। अतः संरक्षण सरल रूप में केवल ऐसा नहीं है जिसे अभिजन चाहता है, यह ऐसा पक्ष भी है जिस पर निर्धन भी अपना दावा स्थापित करता है। इसके बावजूद दक्षिण अफ्रीका के राजनीतिक परिदृश्य में हुए परिवर्तन अत्यन्त महत्व पूर्ण सिद्ध हुए हैं। इसमें 16 अगस्त सन् 2013 के बाद हुए परिवर्तन भी शामिल हैं जब मारीकाना में 34 खनन श्रमिकों को पुलिस बल ने मार दिया। यह घटना दक्षिण अफ्रीका के हिंसक लोकतन्त्र का प्रतीक बन गयी। मारीकाना नरसंहार ने संगठन को हतप्रद कर दिया और उन्हें तोड़ दिया। साथ ही एएनसी का देश के श्रमिक संगठनों पर प्रभाव कमजोर हुआ। सन् 2014 के अन्त में प्रगतिशील सामाजिक आन्दोलनों का एक व्यापक गठजोड़ युनाइटेड फ्रन्ट के रूप में अस्तित्व में आया इसका एक प्रभाव वामपन्थी राजनीति को पुनर्जिवित करना था जबकि दूसरी ओर ए एन सी से विच्छेद करके आर्थिक स्वतन्त्रता सैनानी (इकनामिक फ्रीडम फाइटर्स) के रूप में राजनीतिक समूह उभरा जिसने आक्रामक राष्ट्रवाद के कार्यक्रम तथा रैडीकल पुनः वितरण का समर्थन किया। परिणाम स्वरूप ए एन सी का आधार बुरी तरह लड़खड़ा गया। वॉन होल्ट का कथन है कि ए एन सी का प्रभुत्व बिखर रहा है लेकिन साथ ही वे 'भविष्य अनिश्चित है' का विचार देकर सावधान भी करते हैं। प्रभुत्व के विघटन के साक्ष्यों के बावजूद स्थानीय क्षेत्रों एवं समुदायों में ए एन सी का आज भी प्रभुत्व है तथा यह अब भी बहुत शक्तिशाली संगठन के रूप में विद्यमान है।

>बोर्दियों, फेनन एवं हिंसा का समाजशास्त्र

दक्षिण अफ्रीका की हिंसक लोकतन्त्र की प्रघटना की वॉन होल्ट द्वारा जांच उस प्रयास से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध है जिसमें हिंसा को और सामान्य अर्थों में अवधारणात्मक रूप दिया गया है। अपने एक प्रभावी लेख में, जो कि 'करंट सोश्यालजी' में प्रकाशित हुआ, वान होल्ट ने दक्षिण अफ्रीका की विवादास्पद राजनीति से सम्बद्ध हिंसा के उच्च स्तरों की चर्चा की है। इस लेख में माइकल बुरावे के साथ प्रस्तुत एक साझा अकादमिक कार्य जो 'कनवर्सेशन विद बोर्दियोः द जोनसबर्ग मूमैण्ट' (विट्स यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012) शीर्षक से प्रकाशित हुआ से अनेक तर्कों को इसका आधार बनाया है। वॉन होल्ट के मतानुसार इस पुस्तक में मैंने कोशिश की है कि दक्षिण अफ्रीका के माध्यम से बोर्दियों के अकादमिक योगदान को पढ़ूँ और समझूँ तथा उनके योगदान की परिसीमाओं तथा उन पक्षों को सामने लाऊँ जिन पर बोर्दियो मौन हैं। पर इसके साथ ही यह भी रूचिकर है कि दक्षिण अफ्रीका को बोर्दियो के माध्यम से जाना जाए क्योंकि बोर्दियो का लेखन व्यवस्था के निर्णायक पक्षों को प्रस्तुत करते हुए यह व्यक्त करने का प्रयास करता है कि व्यवस्था स्वयं को कैसे पुनर्रूत्पादित करती है।

अपने लेख में बोर्दियो की प्रतीकात्मक हिंसा की अवधारणा एवं फेनन के औपनिवेशिक हिंसा के विचार के मध्य विसंगतियों एवं संगतताओं को वॉन होल्ट ने प्रस्तुत किया है। औपनिवेशिक स्थिति में प्रतीकात्मक हिंसा उस रूप में सक्रिय नहीं होती जिसकी चर्चा बोर्दियो करते हैं। यह व्यवस्था (आर्डर) की व्याख्या को प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त नहीं है। जैसा कि फैनन का मत है कि वास्तविक हिंसा आवश्यक भी है। पर साथ ही प्रतीकात्मक हिंसा की अव–धारणा हमें फैनन के इस तर्क को समझने में सहायता करती है कि प्रजातिवाद एवं औपनिवेशिक व्यवस्था की हिंसा केवल शारीरिक एवं भौतिक ही नहीं है अपितु यह प्रतीकात्मक भी है। इन दोनों

>>

विचारकों के चिन्तन में कुछ रूचिकर पक्ष है। फैनन के परिपक्व चिन्तन में औपनिवेशिक एवं उत्तर औपनिवेशिक व्यवस्था का विवेचन है जिसमें हिंसा एवं आधुनिकता साथ साथ सक्रिय है। यह एक ऐसा दौर है जहाँ आधुनिक निर्विवाद रूप से हिंसक है। लेकिन बोर्दियो के यदि अल्जीरिया के प्रारम्भिक अनुभवों को यदि महत्व दें तो वे पश्चिमी संदर्भों से उभरती युद्ध विरोधी समाज रचना की व्यवस्थित चर्चा करते हैं। मुझे रूचिकर लगता है कि मैं बोर्दियो के चिन्तर पर लौटूँ और प्रश्न करूँ कि क्या पश्चिमी आधुनिकता उन तरीकों पर क्रियाशील होती है जिनको बोर्दियो ने प्रस्तावित किया है। मैं पूर्णरूपेण निश्चित नहीं हूं कि ऐसा होता है। विशेष रूप से पश्चिम के वर्तमान संकट में बोर्दियो का यह चिन्तन टूटता हुआ प्रतीत होता है। बोर्दियो की प्रतीकात्मक हिंसा की अवधारणा व्यापक बेरोजगारी की स्थिति में क्या रूप ग्रहण करती है। राज्य कहां दिये जा रहे लाभों को वापस ले लेता है। बैंक एवं निगम (कारपोरेशन्स) कहां प्रभुत्वशाली है? ये पक्ष टूटन को प्रारम्भ करते हैं।

क्या यह अध्ययन जीन एवं जॉन कौमारोफ के इस दावे से मेल खाता है कि वैश्विक दक्षिण आधुनिक विश्व की कार्यप्रणाली को विशेषाधिकारी अन्तःदृष्टि प्रदान करता है? वॉन होल्ट गम्भीरता से इस प्रश्न को उपस्थित करते हैं। उनका मत है कि मैं इस विषय के प्रति सन्देहास्पद हूं क्योंकि उत्तर ने सदैव अपनी विशिष्टताओं/अपवाद मूलक स्थितियों को संरक्षण देने का प्रबन्धन किया है। आधारभूतीय सवाल यह बना हुआ है कि उत्तर किस प्रकार अपने ज्ञान के उत्पादन एवं धन संग्रहण के प्रभुत्व की निरन्तरता को बनाये रखता है। प्रभुत्व का यह सम्बन्ध प्रतिस्थापित/हटाने के लिए नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि दक्षिण उत्तर पर अपने प्रभुत्व को स्थापित करना प्रारम्भ कर दे। जैसा भी हो पर वॉन होल्ट प्रजातीय पुनः चिन्तन की आवश्यकता पर बल देते है। कुछ विश्लेषणात्मक अन्तःदृष्टि एवं अवधारणात्मक नवाचारों को विकसित करने की आवश्यकता है जो दक्षिण में दक्षिण के लिए होने चाहिए साथ ही उत्तर के सभी अवधारणात्मक उपकरणों के विषय में भी पुनः चिन्तन की आवश्यकता है जिसमें उत्तरी देशा की वास्तविकताओं से इन उपकरणों के सम्बन्ध भी सम्मिलित हैं।

क्या यह रेवान कोंनेल के दक्षिण सिद्धान्त के आव्हान के समानान्तर है? मेरी प्राथमिकता दक्षिण में सिद्धान्त रचना की है। मुझे यह कठिन लगता है कि चिन्तन के सम्पूर्ण वैकल्पिक तरीके की कल्पना की जावे क्योंकि हमारा स्वयं का चिन्तन भी पश्चिमी है। कैसे और कहां से आप वैकल्पिक ज्ञान को सामने लायेंगे? तय यह है कि दक्षिण अफ्रीकन समाजशास्त्र को उन व्यक्तियों के द्वारा विकसित किया गया है जो कि विश्व—व्यवस्था के महानगरवाद की भाषा एवं इतिहास से जुड़े हुए है। वॉन होल्ट का सुझाव है कि ज्ञान सृजन/उत्पादन प्रक्रिया पर एवं इसके विस्तार पर इन पक्षों का महत्वपूर्ण प्रभाव है। मैं स्वयं श्वेत चिन्तन अभिजनों की उत्पत्तियों में से एक हूं। यह वह आधार है जिस पर मैं कार्य करता हूं। हम ज्ञान की पश्चिमी स्वरूप से इतना बँधे हुए हैं कि हम उनके माध्यम से और उनके विरूद्ध सोचते हैं। हालांकि अन्य अनेक लोग देशज ज्ञान को पुनः सामने लाने की कोशिश करते हैं जो कि महत्वपूर्ण अन्तः क्रियाओं को आगे लाता है।

> उत्तर रंगभेद के दौर के दक्षिण अफ्रीका में सार्वजनिक समाजशास्त्र

पश्चिमी समाजशास्त्र की सीमाओं को जान कर हमारी समूची वार्ता सार्वजनिक समाजशास्त्र के उन व्यवस्थित एवं अन्तः विरोधी संदर्भों की तरफ मुड़ जाती है जो रंगभेद के बाद के दक्षिण अफ्रीका में विद्यमान है। वॉन होल्ट जिनका करियर अकादमिक एवं सक्रियता से सम्बद्ध क्रियाओं के मध्य अग्रसर होता रहा है का मत है कि सार्वजनिक समाजशास्त्र एक पूर्णरूपेण विरोधी क्रियाकलाप नहीं हो सकता। प्रगतिशील समाजशास्त्री सामान्यतः यह कल्पना करता/करती है कि वह निम्नवर्गीय आन्दोलनों में संलग्न है। यह प्रगतिशील समाजशास्त्रीय विश्लेषण का दबावयुक्त विशेषाधिकार है, जिसके द्वारा समाजशास्त्र राजनीतिक महत्व प्राप्त कर लेता है। वॉन होल्ट की शोध इकाई, एस डब्ल्यू ओ पी, की स्थापना इसी विचार पर केन्द्रित है जिसका 1980 के दशक में यौद्धिक प्रकृति के श्रमिक संगठनों से निकट के विमर्श रहे। लेकिन लोकतन्त्र की तरफ संक्रमण के साथ एस डब्ल्यू ओ पी ने प्रगतिशील सरकारी मन्त्रालयों के साथ भी सहयोग एवं समझौते प्रारम्भ किये। वॉन होल्ट के इस अनुभव ने उन्हें प्रेरित किया वे नीति शोध एवं सार्वजनिक समाजशास्त्र के मध्य के विशद अन्तर की उपयोगिता पर सवाल उठायें। नीतिशोध/समाजशास्त्र एक ऐसा गन्दा व्यवसाय है जिसमें शक्ति/सत्ता में स्थापित लोग आपको आर्थिक अनुदान देते हैं ताकि उनकी इच्छा के अनुरूप परिणामों को उत्पन्न करने वाले शोध कार्य किये जा सके। प्रभावी रूप में यह यथास्थितिवाद को बनाये रखने का प्रयास है इसमें परिवर्तन उत्पन्न करने वाली शक्तियों से समझौता व सहयोग नहीं किया जाता। जब आप श्रमिक संगठनों के साथ कार्य करते हैं तो आप आलोचना के धरातल पर कार्य करते है लेकिन कार्य की समाप्ति पर श्रमिक संगठन वास्तव में यह चाहते है कि नीतियों में विद्यमान उपयुक्त व महत्वपूर्ण ज्ञान को वे जानें क्योंकि उन्हें नीति निर्माताओं से समझौते करने पड़ते हैं। उन्हें विद्यमान समस्याओं के समाधान, जो कि सम्भव है, की आवश्यकता है साथ ही यह नीति केन्द्रित प्रश्न भी है। अतः मेरी दृष्टि में यह विचार कि सार्वजनिक समाजशास्त्र पूर्णरूपेण ज्ञान का प्रगतिशील स्वरूप है एवं ठीक इसके विपरीत नीति समाजशास्त्र आरोपित एवं भ्रष्ट है, उपयुक्त नहीं है। यह तो वास्तव में 'विद्रोह का विश्व' एवं 'शासन का विश्व' के मध्य की अन्तः सम्बद्धता है।

आज के दक्षिण अफ्रीका में शक्ति को सच बोलना अब अधिक आवश्यक हो गया है। हम स्वयं को फिर बदलाव की स्थिति में पा रहे हैं। श्रमिका संगठनों के साथ सम्बन्ध निर्मित करते समय जिन व्यवहारों एवं सिद्धान्तों को हमने निर्मित किया था वह अब आगे काम नहीं करेगा क्योंकि श्रमिक संगठनों के मध्य विभाजन व्यापक होते जा रहे है। पुराने नियम कार्य नहीं करते हैं अतः सार्वजनिक समाज शास्त्र की क्रियान्वयन प्रक्रिया में हमें बदलाव करने होंगे। लेकिन वॉन हाल्ट की मत है कि यह आवश्यक नहीं है कि हम ऐसे बदलाव करें जो पूर्णरूपेण विपरीत प्रकृति का सार्वजनिक समाजशास्त्र उत्पन्न कर दे। आप चाहें उस दिशा में अपने को सक्रिय करें जो प्रतिरोध के तरीकों को भिन्न प्रकृति का बनाता हो अथवा आप उन तरीकों में स्वयं को सक्रिय करना चाहें जिनसे समाज संचालित होता है, आपको अनवरत रूप से शक्ति के साथ समझौता करना पड़ता है और यह कभी भी सुविधाजनक नहीं होता। कुछ लोग ज्यादा सुविधाजनक स्थिति को महसूस करते हैं क्योंकि वे आलोचनात्मक दृष्टि को अपना लेते है। परन्तु यथार्थ की अनवरत उपस्थिति का सामना करते हुए आपको अवधारणात्मक नवाचार करने होंगे और यही हम सब के सम्मुख वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौती है। ■

आल्फ गुन्वाल्ड निलसन से पत्र व्यवहार हेतु पता <alfgunvald@gmail.com> और कार्ल वॉन होल्ड्ट से पत्र व्यवहार हेतु पता <karl@yeoville.org.za>

> एकजुट अर्थव्यवस्था

पॉल सिंगर से एक साक्षात्कार

पॉल सिंगर ब्राजील एवं विश्व में एकजुटता मूलक अर्थव्यवस्था के अत्यन्त प्रभावशाली बुद्धिजीवियों में से एक हैं। उनके द्वारा मुख्य प्रकाशित पुस्तकों में डवलपमैण्ट एण्ड क्राइसिस (1968), इकनामिक डवलपमैण्ट एण्ड अरबन इवोल्यूशन (1968), पाप्यूलेशन डायनामिक्स एण्ड डवलपमैण्ट (1970), डामिनेशन एण्ड इनइक्वैलिटी: क्लास स्ट्रक्चर एण्ड द डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ इनकम इन ब्राजील (1981) एवं इन्ट्रोडक्शन टु द सालिडेरिटी इकानमी (2002) सम्मिलित हैं। पॉल सिंगर का जन्म वियमना आस्ट्रिया में हुआ तथा सन् 1940 में वे ब्राजील आ गये। सन् 1953 में केवल 21 वर्ष की आयु में साओ पाउलो की स्ट्रील श्रमिकों के संगठन के वे योद्धा बने और एक माह से अधिक चलने वाली ऐतिहासिक हड़ताल का नेतृत्व किया। 1960 के दशक में उन्होंने अपनी योद्धा की गतिविधियों एवं बौद्धिक गतिविधियों को परस्पर समाहित कर लिया और साओ पाउलो विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के पद से अपना करियर प्रारम्भ किया, साथ ही प्रिंसटान विश्वविद्यालय में जनांकिकी का अध्ययन किया। उस दशक के अन्त में सैन्य तानाशाही ने उनके राजनीतिक अधिकार निरस्त कर दिये इस स्तर पर पॉल सिंगर ने 'सैन्ट्रो बार्सिलारो ड एनालाइज इ प्लेनजामैण्टो' (सी.ई.बी.आर.ए.पी.) नामक थिंक टैंक की स्थापना में सहायता की। शैक्षणिक एवं अध्यापन गतिविधियों में वापसी के उपरान्त, सिंगर ने वर्कर्स पार्टी (पी टी) की स्थापना में सहायता की एवं तब साओ पाउलो की नगर निकाय में योजना सचिव का पद सभांला एवं बाद में एकजुटता अर्थप्रणाली के राष्ट्रीय सचिव बने। यहां पर उन्होंने एकजुटता अर्थ प्रणाली के साथ अपने अनुभवों को साझा किया है तथा ये प्रयास कैसे एक ज्यादा समानतामूलक विश्व की रचना में योगदान कर सकते हैं के पक्षों पर प्रकाश डाला हैं गुस्तावो तनित्रुटी जो कि साओ पाउलो विश्वविद्यालय में पोस्ट डाक्टरल फैलों हैं तथा रेनान दियास दे ओलीवेरा जो कि फण्डाकाओ सान्टो आन्द्रे, ब्राजील में प्रोफेसर हैं, ने संयुक्त रूप से पाल सिंगर से साक्षात्कार किया है।

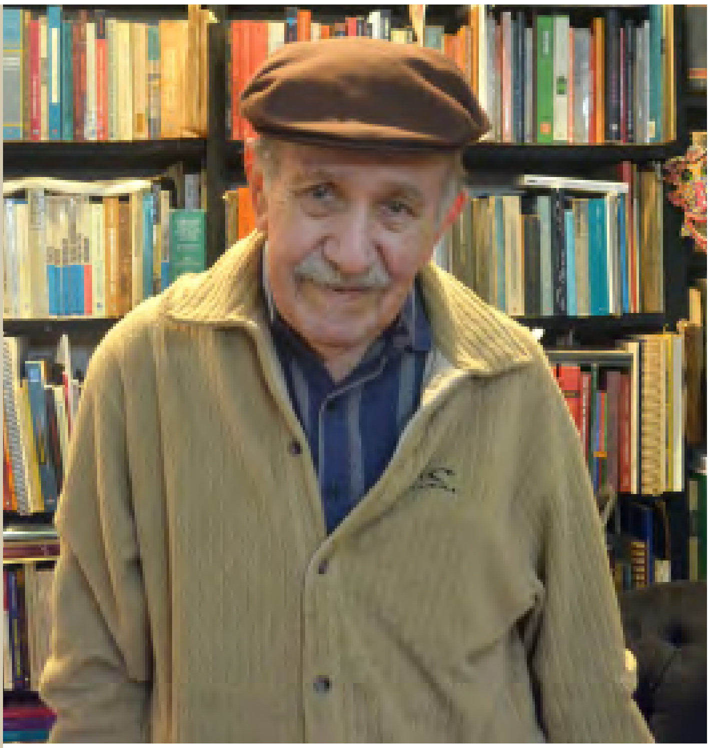

| *पॉल सिंगर*

जी. टी. एवं आर. ओ. : सन् 1969 में आपने फर्नान्डो हैनरिख कार्डोसो, आक्टिवा इयानी, जोज आर्थर जियानोति, जुराज ब्रान्डाओ लोप्स एवं फ्रासिसको ड आलिविरिया के साथ मिल कर 'सैन्ट्रो बर्सिलारो ड एनालाइज टू प्लेनजामैण्टो' (सी इ बी आर ए पी) का गठन किया। यह समूह उन बुद्धिजीवियों से निर्मित है जिन्होंने सैन्य शासन के सर्वाधिक दमनकारी दौर में आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्यों की प्रस्तति की। ब्राजील में निर्धनता के विचार पर विमर्श के संदर्भ में इसका क्या महत्व था?

पी एस : हमनें उस समय निर्धनता पर शोध किया क्योंकि हमें यह ज्ञात था कि यह देश की वास्तव में बड़ी समस्या है लेकिन हमें सिक्के के दूसरे पहलू का ज्ञान नहीं था जिसे आप चाहें जो भी नाम दे सकते हैं, वह है समृद्धि धन। अतः हम असमानता के मापन में सक्षम नहीं थे, आज हम वह मापन कर सकते हैं। हम उन सभी सूचनाओं को प्राप्त नहीं कर पाते थे जिनकी हमें आवश्यकता थी। उस समय, मैं यह कहूंगा कि ब्राजील की मुख्य सामाजिक समस्या—कम से कम सी ई बी आर ए पी में हम लोगों की दृष्टि में—बहिष्करण (एक्सक्लूजन) थी और बहिष्करण कमोबेश सदैव निर्धनता का परिणाम है।

>>

जी टी एवं आर ओ : राजनीतिक उत्पीड़न को लगभग 10 वर्ष तक सहने के उपरान्त सन् 1979 में आप अकादमिक क्षेत्र में वापस लौटे। यह वापसी सैन्य शासन द्वारा आपको अनिवार्य सेवानिवृत्ति दबावपूर्ण तरीके से लिये जाने के बाद हुई। सन् 1980 में आपने वर्कर्स पार्टी (पारटिडो डास ट्रैबल हाइडोरस) की स्थापना में सक्रिय योगदान किया। एक ऐसे समय पर एकजुटता अर्थव्यवस्था के विषय में चिन्तन हेतु, जिसमें सहकारिता भी सम्मिलित हैं, आपको कैसे प्रेरणा मिली? आप कैसे इन मुद्दों से सम्बन्धित हो गये?

पी एस : वास्तव में सी ई बी आर ए पी में एकजुटता अर्थव्यवस्था से किसी का भी सम्बन्ध नहीं था। उस समय मेरे अनुसार एकजुटता अर्थव्यवस्था से कोई परिचित नहीं था। बहुत बाद में मैंने पाया कि एकजुटता अर्थव्यवस्था को कैथोलिक चर्च ने प्रोत्साहित किया है अथवा प्रेरणा दी हैं चिली के अर्थशास्त्री लुइज राजेटो ने एकजुटता अर्थव्यवस्था की अवधारणा को जन्म दिया। राजेटो ने इस विषय पर अनेक पुस्तकें लिखी। अब वह सेवानिवृत्त हैं पर अब भी इस विषय पर लगातार लिखते रहते हैं। 1979 के क्षमादान के तत्काल बाद 1980 में वर्कर्स पार्टी की स्थापना हुई पर एकजुटता अर्थव्यवस्था की बहस से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इस विषय में मेरी रूचि वास्तव में व्यक्तिगत सोच का परिणाम है। अन्य अनेक व्यक्तियों की तरह मैं भी कथित ''वास्तविक समाजवाद'' के अचानक विलीन होने से गहन रूप में प्रभावित था। सन् 1989 में बर्लिन दीवार के ढह जाने के उपरान्त अनेक देशों में राजनीतिक सत्ता एक के बाद एक बड़ी तेजी से विघटित होती गयीं। वर्कर्स पार्टी के अन्दर भी कथित ''वास्तविक समाजवाद'' के पतन ने विचारधारायी संकट को उत्पन्न कर दिया। यह हमारे लिए बहुत बड़ी चुनौती थी क्योंकि हम समाजवादी दल थे जो कि ब्राजील में एक भिन्न समाज की स्थापना चाहते थे। मैंने इस हेतु काफी समय एवं उर्जा का व्यय किया और प्रयास किये कि ऐसा कुछ सामने लाया जाय जिसे हम ''लोकतान्त्रिक समाजवाद'' कहें।

सन् 1990 के दशक में ब्राजील को भारी संकट का सामना करना पड़ा जिसने मुख्यतः देश की रोजगार व्यवस्था को प्रभावित किया। इस संकट के दौर में 6 करोड़ (60 मिलियन) रोजगार समाप्त/विलुप्त हो गये। मैं इस विषय को लेकर बहुत अधिक चिन्तित था क्योंकि इसके पूर्व ब्राजील ने इस प्रकार की बेरोजगार दर का कभी अनुभव नहीं किया था। तब, अचानक लाखों औद्योगिक श्रमिकों से रोजगार छिन गया साथ ही उनका मकान एवं उनकी आय भी हाथ से चली गयी। यह वास्तव में एक सामाजिक त्रासदी थी और चूंकि मुझे चर्च ने कुछ सहकारी समितियों का दौरान करने हेतु आमन्त्रित किया जिन्हें उस समय ब्राजील में गठित किया गया था। कैथोलिक चर्च का भाग माने जाने वाली इकाई 'कारिटास' ने रोजगार विहीन व्यक्तियों के माध्यम से 1000 श्रमिक सहकारी समितियों का गठन किया। इन अनेक सहकारी समितियों का दौरा करने के उपरान्त मुझे इस कठिन प्रश्न का उत्तर खोजने में सफलता मिल गयी कि सामाजिक लोकतन्त्र का अर्थ क्या है। चूंकि रोजगार विहीन/बेरोजगार लोगों ने इन सहकारी समितियों का गठन किया था अतः इनमें न तो कोई सर्वोच्च सत्ताधारी पद (बॉस) था और न ही कोई संस्तरण था। सब कुछ सामूहिक तरीके से समानता के साथ निर्मित हुआ था। मैंने इस विषय पर कुछ लेख 'फोला डी एस पाउलो' नामक समाचार पत्र में लिखे जिसमें एक का शीर्षक 'एक जुटता मूलक अर्थव्यवस्था' था। इसे मैंने बेकारी के विरूद्ध एक हथियार माना (सॉलिडेरिटी इकानमी : ए वैपन अंगेस्ट अन एम्पलायमैण्ट)। मैं कोई नवीन आन्दोलन उत्पन्न नहीं कर रहा था। मैं तो वास्तव में इसकी केवल खोज कर रहा था।

जी टी एवं आर ओ : फिर भी इस संदर्भ में एकजुटता अर्थव्यवस्था की बहस में आपके सैद्धान्तिक उपागम क्या थे?

पी एस : मैं यह कहूंगा कि इस बहस का मुख्य संदर्भ बिन्दु समाजवाद का इतिहास था जो कि काल्पनिक समाजवादियों (उटोपियन सोशलिस्ट्स) से प्रारम्भ हुआ। यह एक जिज्ञासा की बात है क्योंकि मैंने मार्क्स को विस्तार से पढ़ा है, साथ ही रोजा लक्जमबर्ग एवं अन्य मार्क्सवादी विचारकों को पढ़ा है पर काल्पनिक समाजवादियों का अध्ययन नहीं किया। साओ पाउलो में स्थित विश्वविद्यालय की मेरी कक्षाओं में से एक कक्षा के विद्यार्थी जब मुझे और अधिक विचारकों को और विचारकों के और व्यापक मतों को पढ़ाने का आग्रह करते थे तो मैं राबर्ट औवन के योगदान को पढ़ाना प्रारम्भ कर देता था। मेरा विचार है कि यह मुझे प्रेरणा देता था और इस कारण मैंने इसे संदर्भ बिन्दु बना लिया।

जी टी एवं आर ओ : मेयर (नगर प्रमुख) लुइजा इरूनडिना के कार्यकाल (1989–1993) के दौरान जब आप योजना के साओ पाउलो के सचिव बने, तो क्या वे निर्धनता विरोधी नीतियाँ, जो नगर हेतु बनीं, एकजुटता अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित थीं। यदि हां तो कैसे?

पी एस : प्रारम्भ में तो नहीं पर बाद में यह पक्ष विकसित हुआ। साओ पाउलो लातिन अमेरिका का सबसे बड़ा नगर हैं। यह नगर बड़े पैमाने पर अस्त व्यस्त था तथा एक असमान महानगर था तथा पहली बार इस नगर पर वामपन्थी विचारधारा की सरकार का शासन स्थापित हुआ था। साथ ही पहली बार एक महिला नगर प्रमुख (मेयर) बनी थी। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह था कि लुइजा इरूनडिना एक गरीब परिवार से सम्बन्धित थी जो पूर्वोत्तर ब्राजील के एक राज्य में स्थित था जिसका नाम पाराइबा था। उन्होंने वर्कर्स पार्टी की सदस्यता ली और शीघ्र ही वे इसके नेतृत्व का भाग हो गयीं। यह अवश्य था कि उनकी सरकार में गरीबी एक मुख्य मुद्दा था क्योंकि हम हाल ही में 1980 के दशक के संकट का सामना कर बाहर निकले थे। मुझे याद है कि नगर प्रमुख (मेयर), श्रमिक संगठनों एवं मेरे बीच इस मुद्दे को लेकर बहस हुई थी कि किस प्रकार बेकारी की दर को कम किया जाय। बाद में ल्यूला ने मुझे बताया कि श्रमिक संगठन बेरोजगारों का समर्थन नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें यह ज्ञान ही नहीं है कि इन लोगों के साथ क्या करें। उनके मतानुसार श्रमिक संगठन सहकारी समितियों के केवल सक्रिय सदस्यों का ही समर्थन कर सकते हैं। यह काफी वस्तुपरक था। नियोक्ताओं ने अपनी बारी आने पर प्रस्ताव दिया कि वे इस सहायता के बदले करों में राहत चाहेंगे। इस प्रकार का विनियम असम्भव था क्योंकि करों में राहत मूल सेवाओं जैसे शिक्षा एवं स्वास्थ्य के बजट प्रावधानों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। अतः यह एक अत्यन्त कठिन संदर्भ था। सबसे पहले हमने एक उद्देश्य समूह (टास्क फोर्स) का गठन किया जिसका कार्य गृह विहीन लोगों की प्रथम जनगणना करना था ताकि उन्हें भूख की स्थिति (भुखमरी की स्थिति) से बचाया जा सके। बाद में हमने एक सहकारी समिति का गठन किया जो कि उस रद्दी सामान को चुनने वालों को सम्मिलित करती थी जिसे पुनः चक्रित किया जा सकता था। यह एकजुटता मूलक अर्थव्यवस्था का प्रारम्भ था। विशेषतः 'कारिटास' की सहायता के माध्यम से हमने यह जाना कि एकजुटता अर्थव्यवस्था वास्तव में क्या है। हमने सहकारिता वद के शत प्रतिशत सिद्धान्तों का पालन करने का निर्णय लिया और सन् 1996 के दौरान मैं अब इस विचार को मान चुका था कि यह लोकतांत्रिक समाजवाद की अभिव्यक्ति है।

जी टी एवं आर ओ : सन् 2000 के दशक में एकजुटता अर्थ व्यवस्था पर बहस एवं इसकी योजना हेतु दो क्षेत्र (स्पेस) निर्मित किये गये। ब्राजील एकजुटता अर्थव्यवस्था फोरम (द फोरम ब्राजीलियरो ड इकनामिक सालिडेरिया) एवं श्रम तथा रोजगार मन्त्रालय के एक अवयव के रूप में एकजुटता अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय सचिवालय (सेक्रेटेरिया नेशनल ड इकनामिया सालिडेरिया) के रूप में ये क्षेत्र उभरे। क्या आप हमें वे राजनीतिक संदर्भ बता सकते हैं जिनमें इन क्षेत्रों की स्थापना हुई? उन्होंने किस प्रकार राष्ट्रीय, प्रान्तीय एवं म्युनिसिपल (नगरीय) स्तर पर एकजुटता अर्थव्यवस्था की सहायता की?

>>

पी एस : यह वास्तव में उच्च बेरोजगारी दर का सन्दर्भ था। हालांकि यह दर उतनी भयावह नहीं थी जितनी कि 1980 के दशक में थी। अनेक मायनों में कार्डोसो की सरकार नव्य उदारवादी विचारों की प्रभावशाली पक्षधर थी। उनके लिये सबसे महत्वपूर्ण कार्य मुद्रा स्फीति दर से संघर्ष करना था उन्होंने इस दर को नियन्त्रित करने हेतु ब्याज दरों में वृद्धि की जिसका परिणाम बेकारी के रूप में आया जिसके कारण श्रमिकों की सौदेबाजी करने की शक्ति (बारगेनिंग पावर) में कमी आयी और यह शक्ति महत आंशिक रह गयी।

जब सन् 2002 में ल्यूला का निर्वाचन हुआ तो उन्हें यह विश्वास था कि एकजुटता अर्थव्यवस्था को उनकी सरकार के कार्यक्रम में सम्मिलित कर लिया जायेगा वर्कर्स पार्टी ने एकजुटता अर्थव्यवस्था को स्वीकारा और पार्टी की कार्यक्रम प्रणाली में यह अब भी सम्मिलित है। ल्यूला ने जैसे ही अपना कार्यकाल प्रारम्भ किया, जो कि राष्ट्रपति के रूप में था, एकजुटता अर्थव्यवस्था आन्दोलन ने राष्ट्रीय बैठकों का आयोजन प्रारम्भ कर दिया और दबाव डाला कि श्रम एवं रोजगार मन्त्रालय इस कार्यक्रम के लिए सचिवालय का गठन करे। यह बहुत शीघ्र हुआ, ल्यूला ने सन् 2003 में कार्यभार ग्रहण किया। हमें संसद से इस कार्यक्रम की स्वीकृति प्राप्त करने में कुछ माह लगे लेकिन उसी वर्ष के जून माह में अन्ततः एकजुटता अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय सचिवालय का गठन हो गया। ब्राजील एकजुटता अर्थव्यवस्था फोरम को इस सचिवालय से सम्बद्ध कर दिया गया क्योंकि तार्किक रूप से हम सामाजिक आन्दोलन के बिना किसी भी नीति को प्रारम्भ नहीं कर सकते। इसका फिर कोई अर्थ नहीं रहता है। फोरम के साथ, सभी नीतियों को तभी उभार मिलता है जब इनकी सामाजिक आन्दोलन से अन्तःक्रिया हो। इस अन्तःक्रिया से एकजुटता अर्थव्यवस्था की समस्याएं, दावे एवं मांगों को एक जीवन्त प्रतिवेदन का रूप मिल जाता है।

आज एकजुटता अर्थव्यवस्था समूचे देश में फैल चुकी है। एमेजान से लेकर दक्षिण तक इसका विस्तार हो चुका है। हम इसे जितना बड़ा एवं व्यापक देखना चाहते थे उतना तो नहीं हो पाया है पर अब यह एक छोटा आन्दोलन भी नहीं है। सचिवालय के अतिरिक्त राष्ट्रीय परिषद ने समान प्रकृति का कानून बना दिया है जिसमें अधिकांश सहभागी फोरम से सम्बन्धित हैं।

सचिवालय बजट का उपयोग एकजुटता अर्थव्यवस्था सहकारी समितियों को विकसित बनाने की प्रक्रिया में सहायता के रूप में किया जाता है। राउसैफ के प्रथम कार्यकाल में हमने विशेषतः ऐसा किया। 'ब्राजील सैम मिसरिया' कार्यक्रम में हमने भाग लिया। पाँच अथवा छहः मन्त्रालय इस कार्यक्रम का भाग थे नगरीय क्षेत्रों में उत्पादक समावेशी प्रयासों के लिए सचिवालय उत्तरदायी था जिससे उन सब को प्रोत्साहन मिला जिनकी सहकारी समितियों के निर्माण में रूचि थी। एक अनुमान के अनुसार इस नीति की सहायता से लगभग पाँच लाख परिवार गरीबी के दायरे से बाहर आ गये। लेकिन हम पहला देश नहीं थे जिसे एकजुटता अर्थव्यवस्था को समर्थक देने के लिए कार्यालयी संस्थागत संरचनाओं का साथ मिला। फ्रांस पहला देश था। सन् 2001 में प्रथम सामाजिक फोरम में हमारी मुलाकात एकजुटता अर्थव्यवस्था के फ्रांसीसी मन्त्री से हुई।

जी टी एवं आर ओ : क्या आप बतायेंगे कि कैसे विश्वविद्यालय आधारित सहयोगी कार्यक्रम अधिकारी प्रारम्भ हुए अर्थात् उभर कर आये।

पी एस : ऐसे कार्यक्रम सहयोगी मूलतः अमेरिका में सबसे पहले अस्तित्व में आये। वे महत्वपूर्ण इस स्तर तक हैं कि वे विद्यार्थियों एवं प्रोफेसर्स (आचार्यों) को विश्वविद्यालय परिवेश में उद्यम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और वे बहुत अच्छा कार्य करते हैं। सन् 1994 में एकजुटता अर्थव्यवस्था के लिए पहला सहयोगी कार्यक्रम अधिकारी द फैडरल यूनिवर्सिटी ऑफ रियो डि जेनेरो में पनपा। हमारे ये सहयोगी इस रूप में भिन्न है कि वे विज्ञान में संलग्न नहीं हैं उनका मुख्यतः सम्बन्ध सामाजिक मुद्दों से है। कुछ वर्ष बाद हमने पाया कि ये लोकप्रिय सहकारी समितियाँ रियो की झुग्गी झौपड़ी वाले आवासीय क्षेत्रों में भी स्थापित हो गयी हैं और अब ब्राजील के अनेक सरकारी/सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में कार्यक्रम सहयोगी कार्यरत हैं जिन्हें सचिवालय की सहायता प्राप्त है। वर्तमान में ब्राजील के विश्वविद्यालय में ऐसे कार्यक्रम सहयोगियों की संख्या 110 है। ये लोकप्रिय कार्यक्रम सहयोगी विश्वविद्यालयों को व्यापक रूप में प्रभावित करते हैं क्योंकि वे विद्यार्थी जो यहां कार्यरत हैं विभिन्न विषयों–अर्थशास्त्र भूगोल, समाज विज्ञान, यान्त्रिकी–से सम्बद्ध है। लेकिन अधिकांशतः वे मध्यवर्गीय विद्यार्थी हैं जो कि निर्धन समुदायों के सम्पर्क में हैं एवं उनकी सहायता करने के विभिन्न तरीकों की खोज में है। ऐसा वे अपने जीवन में पहली बार कर रहे हैं। परिसरों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

जी टी एवं आर ओ : आपकी दृष्टि में श्रमिकों की समितियों द्वारा शासित आर्थिक संगठन की विशेषताएं व उपलब्धियाँ क्या हैं? और आज ब्राजील में एकजुटता अर्थव्यवस्था के सम्मुख मुख्य चुनौतियाँ क्या हैं?

पी एस : मैं कहूंगा कि लोकतन्त्र इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। लोग एक सथ मिल कर कार्य करते हैं; एक दूसरे का सम्मान करते हैं और उनके बीच प्रतियोगिता की भावना नहीं है। एकजुटता अर्थव्यवस्था का मानचित्र हमें बताता है कि ब्राजील में हमारे पास लगभग 30,000 सक्रिय सहकारी समितियाँ है जिनमें लगभग 30 लाख लोग (तीन मिलियन) संलग्न हैं। हमें समाज के महत्वपूर्ण अंगों जैसे कैथोलिक चर्च, सैन्ट्रल यूनिका डास ट्रैवलहाडोरस (सी यू टी) एवं विश्वविद्यालयों का सहयोग प्राप्त है। यह एकदम नवीन एवं प्रोत्साहनात्मक सामाजिक अनुभव है।

जहां तक ब्राजील में एकजुटता अर्थव्यवस्था के सम्मुख चुनौतियों का प्रश्न है, सबसे महत्वपूर्ण चुनौती एकजुटता अर्थव्यवस्था प्रतिष्ठानों के सम्मुख उनका कमजोर व अस्थायी होना है। इनमें से अधिकांशतः पाँच वर्ष में विलुप्त हो जाती हैं। सामान्यतः छोटे उद्यमों का जीवन अल्पकालिक है। हालांकि सभी उद्यम छोटे नहीं हैं। उदाहरण के लिए हमारे पास फैब्रिकास रीक्यूपइरडास (वसूली सम्बद्ध उद्योग) हैं। अर्थात् जब एक दिवालिया उद्योग पुनर्जीवित किया जाता है और उसे सहकारी इकाई द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता हैं ब्राजील में वसूली सम्बद्ध ऐसे उद्योगों की संख्या 67 है जबकि अर्जेन्टीना में यह संख्या बहुत है।

जी टी एवं आर ओ : आप इस एकजुटता अर्थप्रणाली को ब्राजील में अन्य लेटिन अमेरिकन देशों की तुलना में और वैश्विक स्थिति की तुलना में किस प्रकार पाते हैं।

पी एस : मैं लगभग हर दिन एकजुटता अर्थव्यवस्था के विषय में कुछ न कुछ सीख रहा हूं। स्थानीय स्तर पर उद्यमो का अल्पकालिक होना सबसे बड़ी चुनौती है साथ ही सांस्कृतिक पक्ष भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। किसी एक उद्यम की सफलता एक असफलता का निर्धारण इस पक्ष भी आधारित है कि समूहों के मध्य आन्तरिक संघर्ष एवं विमति की स्थितियां कैसी हैं। हमें यह जाननाहोगा कि इन संघर्षों को दूर कैसे करें और इससे भी अधिक कि इन संघर्षों का समाधान कैसे करें। मैं बहुत विश्वास से यह नहीं बता सकता कि विश्व में चारों ओर एकजुटता अर्थव्यवस्था हेतु सांस्कृतिक कारक कितने केन्द्रीय स्थिति में हैं लेकिन निश्चय ही दक्षिण अफ्रीका, फिलीपीन्स, दक्षिण कोरिया एवं यूरोप तथा लेटिन अमेरिका में अनेक देशों के साथ इसकी तुलना करना महत्व पूर्ण होगा ताकि लोकतान्त्रिक कार्यप्रणाली के परिवेश को निर्मित एवं विकसित किया जा सके। हमें उनसे बहुत कुछ सीखना होगा। ■

गुस्तावो तनित्रुटि से पत्र व्यवहार हेतु पता <gustavotaniguti@gmail.com>

> उरालुंगल :

भारत की सबसे पुरानी श्रमिक सहकारी समिति

मिशेल विलियम्स, विटवाटरस्रेंड विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका और आई.एस.ए., श्रमिक आंदोलनों पर शोध समिति (**RC 44**) की सदस्य

भारत के सबसे पुरानी श्रमिक सहकारी समिति उरालुंगल पर नाजुक निर्माण

भारत के केरल में एक उल्लेखनीय श्रमिक सहकारी समिति ने मुख्यधारा के अर्थशास्त्रीयों की भविष्यवाणियों को 90 से भी अधिक वर्षों से गलत साबित किया हुआ है। उरालुंगल लेबर कांट्रेक्ट कॉपरेटिव सोसायटी (VLCCS) एक 2000 सदस्यों वाली मजबूत श्रमिक–स्वामित्व की निर्माण सहकारी समिति, जो बड़ी आधारभूत संरचना परियोजनायें जैसे सड़कें, पुल और भवन परिसरों का निर्माण करती है। उत्तरी केरल के मालाबार क्षेत्र के उरालुंगल उपग्राम के नाम पर नाम रखी गयी, उरालुंगल सहकारी समिति ने, लोकतंत्र, समता, एकजुटता, पारस्पारिकता और एकीकृत नेटवर्क जैसे एकजुट अर्थव्यवस्था के गुणों को समाये हुये, स्थानीय–स्तर पर वैकल्पिक उत्पादन की शुरूआत की है। ये सिद्धांत इसके सदस्यों के लोकाचारों के द्वारा सहकारी समिति के ताने–बाने में समाहित है और साथ ही सहकारी समिति उपनियमों के द्वारा–जो सुरक्षित, पुरस्कृत करने वाले और अच्छे वेतन वाला कार्य सुनिश्चित कर, सदस्यों जो कि सहकारी समिति के श्रमिक हैं–की सेवा करने को सहकारी समिति का प्राथमिक उद्देश्य बताती है। यह करने के लिये, एक बड़े, लाभ चाहने वाले (और अधिकतर भ्रष्ट) ठेकेदारों के वर्चस्व वाले, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा वाले क्षेत्र के संदर्भ में भी, इन्होंने लोकतांत्रिक कार्यस्थल संगठन और समतावादी पुनर्वितरण की शुरूआत की है।

ULCCS को लोकतांत्रिक और समतावादी सिद्धांतों के प्रति समर्पण, बींसवी शताब्दी के शुरू में इसके स्थापना के वर्षों तक जाता है। 1930 और 1940 के दशकों में, जब मालाबार में शक्तिशाली किसान और श्रमिक आंदोलन उभरे, उरालुंगल राजनीतिक उथल–पुथल के भंवर में था, राष्ट्रवादी आंदोलन ने एक उग्र मोड ले लिया और कम्यूनिस्ट पार्टी क्षेत्र में एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में उभर कर आयी। सहकारी समिति के प्रारंभिक वर्षों में, मालाबार के इस आमूलचूल परिवर्तन ने लोकतांत्रिक निर्णय लेने, सामाजिक उद्देश्यों के प्रति लाभ की अधीनता, पारिस्थितिकीय सततता, और सामूहिक उत्पादन पर आधारित वैकल्पिक अर्थव्यवस्था वाले लोकाचारों के आकार लेने में सहायता की। इन वर्षों में, सहकारी समिति ने लाभ के पहले अपने लोकतांत्रिक संगठन, सामूहिक निर्णय लेने और लोगों के वैकल्पिक लोकाचारों का प्रत्येक नयी चुनौती से निकल आने में रचनात्मक रूप से उपयोग किया है।

मुख्यधारा के अर्थशास्त्री अक्सर ये भविष्यवाणी करते हैं कि चाहे मजदूर सहकारी समितियां उभरे चले और समृद्ध बने उनका शीघ्र ही एक प्रारूपिक पूंजीवादी फर्म में श्रमिक नियंत्रण और श्रमिक स्वामित्व के उन्नत सिद्धांतों के खोने से ह्रास हो जाता है। इन तर्कों के विरूद्ध ULCCS जैसी

>>

श्रमिक सहकारी समितियों का वास्तविक प्रदर्शन प्रेरणा के प्रकाशस्तंभ के रूप में खड़ा है और अनुभव के रूप में भविष्य अभ्यास के लिये बहुमूल्य शिक्षा देता है।

ULCCS की सफलता के केन्द्र में सहकारी समिति के अंदर सहभागी और प्रत्यक्ष लोकतंत्र के प्रति इसकी वचनबद्धता है। इस लेख के शेष भाग में, मैं इस सफलता में सहभागी लोकतंत्र की भूमिका पर केन्द्रित रहूंगा।

> निर्णय लेना और श्रमिक लोकतंत्र

सहकारी समितियां अनुशासन और प्रोत्साहन की ठेठ पूंजीवादी तकनीकों के बिना सख्त समन्वय और कुशल उत्पादन कैसे सुनिश्चित करती हैं? वो कैसे सुनिश्चित करती हैं कि श्रमिक स्वामित्व से पर्यवेक्षकों की शक्तियां कमजोर न हो और श्रमिक अपनी जिम्मेदारियों की अवहेलना नहीं करे? अधिक विशेष रूप से, ULCCS ने पदानुक्रम और भागीदारी का एक विवेकपूर्ण मिश्रण बनाने में सफलता कैसे प्राप्त की? इन प्रश्नों के उत्तर के लिये, हमें ULCCS की श्रम प्रक्रिया के विकसित होने के अनुभव को देखना होगा जो कि कुशल और सहभागी दोनों हैं।

ULCCS में, एक वार्षिक आम सभा में श्रमिक, निदेशक मंडल का चुनाव करते हैं और सहकारी समिति की गत वर्ष की विस्तृत रिपोर्ट पर चर्चा करते हैं। यह आमसभा एक औपचारिकता नहीं है और निदेशक मंडल का पुनर्चुनाव कोई पूर्वनिश्चित नहीं होता है। एक बार निदेशक मंडल का चुनाव हो जाता है तथापि उन्हें अनुबंध करने, तकनीक चुनने, श्रमिकों को विभिन्न कार्यस्थल आवंटित करने और अन्य सामान्य निर्णय लेने में स्वायत्तता प्रदान की जाती है। इस प्रकार, निदेशक सहकारी समिति के प्रबंधक होते हैं, जिसका अर्थ है कि प्रबंधन का चुनाव श्रमिकों द्वारा किया जाता है–पूंजीवादी निगमों के ठीक विपरीत, जहां प्रबंधक अनिर्वाचित नेतृत्व द्वारा नियुक्त किये जाते हैं।

निर्माण स्थल श्रमिकों में से चुने गये साइट लीडर के नेतृत्व मेंरहते हैं, जो एक प्रक्रिया के द्वारा जिसमें केवल वो श्रमिक जिनके पास सिद्ध प्रबंधकीय क्षमता हो और जिनका व्यापक सम्मान और विश्वास हो, चुने जाते हैं। श्रमिक और साइट लीडर लगातार श्रम विभाजन और कार्यस्थल की प्रक्रियाओं पर चर्चा करते रहते हैं–उदाहरण के लिये, सामूहिक दोपहर के भोजन पर (सहकारी समिति द्वारा तैयार किये गये)। जबकि यहां बहुत सारी समावेशी विवेचना होती है, एक बार निर्णय होने पर, सभी को इसकी पालना करनी पड़ती है। साइट लीडर के निर्देशों की अवहेलना, कर्तव्य की उपेक्षा, वित्तिय अनियमितता और प्रदर्शन में जानबूझकर की गयी त्रुटियां एक अनुशासनात्मक कार्यवाही की ओर ले जा सकती है हालांकि इस प्रकार के कार्यवाही की कदाचित ही जरूरत होती है।

लोकतांत्रिक प्रक्रियायें सहकारी समिति के अंदर नियमित संपर्क के द्वारा कायम की जाती हैं। साइट लीडर निदेशक मंडल के साथ नियमित बैठकों में भाग लेते हैं। सभी साइट लीडर, मंडल के सदस्य और तकनीकी कर्मचारी साप्ताहिक बैठकों में भाग लेते हैं और सभी श्रमिक सदस्य मासिक बैठकों में भाग लेते हैं जहां नये घटनाक्रमों की सूचना दी जाती है और जहां सदस्य समालोचना कर सकते हैं। सम्पूर्ण वित्तिय विवरण पर वार्षिक आम सभा में चर्चा की जाती है। जबकि इतनी सारी बैठकों में समय और ऊर्जा लगती है, पर यह एक सामूहिक स्वामित्व, एकजुटता और समान उद्देश्य की भावना भी पैदा करती हैं, जो उत्पादकता बढ़ाती है।

> सहभागिता और बाजार की प्रतिस्पर्धा

निजी ठेकेदारों से प्रतिस्पर्धा करते हुये ULCCS के लिये बड़ी चुनौती यह है कि सहकारी समिति श्रमिकों के लाभ को कम करके या सामग्री तथा विनिर्देशों में धोखाधड़ी करके लागत में कटौती नहीं कर सकते हैं। सहकारी समिति ने अपने अनुबंध विनिर्देशों की पालना को सदैव ही एक अनुल्लंघनीय सिद्धांत माना है जिसने इसकी प्रभावशाली प्रतिष्ठा में योगदान दिया है। पहले से ही भारत के लोक निर्माण परियोजनायें भ्रष्टाचार और हेरफेर के लिये बदनाम रही हैं, ये सीमायें एक गंभीर बाधा पैदा करती हैं।

सहकारी समिति को प्रतिस्पर्धा में बढ़त तकनीक के प्रभावी उपयोग और श्रमिक के परिश्रम और कौशल–एक श्रम–प्रधान निर्माण प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण संपत्ति, से आने वाली इसकी उच्च श्रम उत्पादकता से मिलती है। उदाहरण के लिये, एक सामान्य रोड़ी की सड़क की लागत और गुणवत्ता–विभिन्न परतों की मोटाई, लाल मिट्टी से बंधाई की प्रभावशीलता, टार के मिश्रण में समता और समय पर धातु की परत पर इसके इस्तेमाल पर निर्भर करती है। हर कदम पर श्रमिक के कौशल, परिश्रम और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, समयसारणी को बनाये रखने और अनावश्यक बर्बादी से बचने के लिये प्रेरित श्रमिक सहकारी समिति की परियोजना के समय पर सफल समापन के लिये महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, श्रमिक का कौशल और समर्पण–सिर्फ प्रबंधकों और पर्यवेक्षकों का ही नहीं–सहकारी समिति की प्रमुख संपत्तियां है। ULCCS ने उदार पारिश्रमिक पैकेज और सकारात्मक कार्य स्थितियां बनाये रखते हुये निर्णय लेने में सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता दी है।

मशीनीकरण ने कार्यस्थलों को रूपांतरित कर दिया है और निर्माण में शामिल अनेक कार्य अनावश्यक या deskilled बन गये है। इसके अलावा, मशीनीकरण से संबंधित गति से बदलाव श्रमिक के भागीदारी की भावना और एकजुटता के बंधन पर असर कर सकता है। इन संभावित खतरों से जागरूक, सहकारी समिति ने लोकतंत्र को तीन तरीकों से मजबूत बनाने–पारदर्शी, खुली विवेचना के प्रति, अधिक मजबूत प्रतिबद्धता, श्रमिक की प्रतिक्रिया को पुनः प्राथमिकता देना और इसकी कौशल विकास कार्यक्रमों में सुधार करने–के द्वारा प्रतिक्रिया दी है।

एक और छिपा हुआ खतरा समकालीन श्रमिकों में प्रतिबद्धता का क्षरण है। अभी हाल तक, अधिकांश सदस्य अग्रणी पीढ़ी के रिश्तेदार थे, परंतु आज बहुत सारे नये श्रमिकों में नातेदारी और स्थानीय संबंधों का अभाव है। कई प्रतिभागी वार्षिक आम सभा में विवेचना की गुणवत्ता और श्रमिकों में अतिरिक्त काम करने की इच्छा में कमी के बारे में चिंता करते हैं। सहकारी समिति के इतिहास, इसकी प्रतिबद्धता और बलिदान की परंपराओं और सिद्धांतों जिन्होंने ULCCS को वो बनाया है जो वो आज है, के बारे में सतत शिक्षा के अलावा इन प्रवृत्तियों का कोई और आसान उपाय नहीं है। इस प्रकार ULCCS का एक सच्ची सहकारी समिति के रूप में जीवन राजनीतिक है। इसे बाजार मूल्यों के वर्चस्व वाले समाज में सहयोग के मूल्यों को पैदा करना होगा। ■

मिशेल विलियम्स से पत्र व्यवहार हेतु पता
<michelle.williams@wits.ac.za>

> मॉनड्रेगन सहकारी समितियां
सफलताएं एवं चुनौतियां

शररयन कास्मिर, हॉफस्ट्रा विश्वविद्यालय, यू.एस.ए.

मांड्रेगन के Flagship स्टोर, वृहद निर्माता फेगोर दिवालिया हो गई

वित्तिय संकट और मितव्ययता–विरोधी बगावतों के दौर में, अमेरिका और यूरोप में गैर–पूंजीवादी सामाजिक संबंधों और एकजुट अर्थव्यवस्थाओं का पोषण करने में रूचि बढ़ रही है। शिक्षाविदों और वकीलों का कहना है कि श्रमिक–स्वामित्व की सहकारी समितियां नौकरियां सुरक्षित करती हैं, श्रमिकों को नियंत्रण देती हैं और एकजुटता को प्रोत्साहित करती हैं। ये परिवर्तन समाजवाद बोने या कम से कम एक अधिक लोकतांत्रिक और न्याय पूर्ण पूंजीवाद के यह बीज बोते हैं। दशकों के द्वेषमय नवउदारवाद के बाद एक स्वागत संदेश है।

अक्सर, स्पेनिश बास्क क्षेत्र में मोन्ड्रगोन–पूरे संसार का सबसे सफल श्रमिक–स्वामित्व सहकारी उपक्रम माना जाने वाले एक मॉडल के रूप में चर्चा किया जाता है। 1950 के दशक में कैथोलिक एक्शन प्रोजेक्ट के रूप में शुरू हुये, आज, मोन्ड्रगोन समूह में, लगभग 74000 लोगों को रोजगार देते हुये, 275 वित्तिय, औद्योगिक, रिटेल और शोध और विकास के व्यवसाय शामिल है। सहकारी समितिया व्यावसायिक रसोई उपकरणों (Fagor ब्रांड की फ्लैगशिप के तहत) से लेकर औद्योगिक रोबोट तक; खुदरा क्षेत्र की विशाल Eroski के पूरे यूरोप में 2000 इकाईयाँ है; और Cafe Laboral बैंक और सामाजिक सुरक्षा सहकारी समिति अपने सदस्यों और संबंद्ध व्यवसायों को वित्तिय सेवायें प्रदान करती हैं। सहकारी समितियों में कोई यूनियन नहीं है और उनके पास कोई बाहरी हिस्सेदार नहीं है। इसके बजाय, प्रत्येक श्रमिक और प्रबंधक फर्म में एक सदस्य के रूप में निवेश करता है और इसकी आम सभा में एक वोट रखता है। प्रत्येक सहकारी समिति का कॉपरेटिव कांग्रेस में प्रतिनिधित्व होता है जहां व्यापक–व्यवस्था योजनायें और व्यापार निर्णय किये जाते हैं।

आकार और सफलता, मोन्ड्रगोन को सहकारी समिति प्रयोगों के बीच अनूठा बनाते हैं, तथा यहां और भी बहुत कुछ है जो कि सराहनीय है। सहकारी समितियों ने स्पेन के बास्क देश में आर्थिक संकट के दौरान भी सदस्यों की नौकरीयां बनाये रखी है। एकजुटता के लोकाचारों को जाहिर करते हुये, सदस्य वेतन में कटौती स्वीकार करते हैं, अतिरिक्त धन निवेश करते हैं और जब जरूरी हो तब सहकारी समितियों के मध्य धन को हस्तांतरित करते है। मोन्ड्रगोन अपने अधिकतम प्रबंधक वेतन को न्यूनतम वेतन वाले सदस्य के वेतन के नौ गुणा पर सीमित करते हैं, जो कि स्पेन के 127 : 1 के समग्र अनुपात के तुलना में उल्लेखनीय रूप से समतल पैमाना है पूंजी पर श्रम की संप्रभुता Caja Laboral के पूंजी खातों में सरप्लस के वितरण में जाहिर होती है, जहां वो निजी बचत के रूप में रखे जाते हैं परंतु सहकारी समूह में निवेश के लिये उपलब्ध करा दिये जाते हैं।

परंतु जहाँ मोन्ड्रगोन उन लोगों के लिये अक्सर एक शुरूआती बिंदु है जो पूंजीवाद का एक वास्तविक सांसारिक विकल्प चाहते हैं,

>>

सहकारी समिति के सहभागी श्रमिकों, काम की परिस्थितियों, और वर्ग के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न भी प्रायः दरकिनार किये जाते हैं।

हालांकि इसकी सहकारी समितियां बास्क क्षेत्र में केन्द्रित हैं, मोन्ड्रगोन 1990 में वैश्विक हो गया और अब कुछ 100 विदेशी सहायक कंपनियों और संयुक्त उपक्रमों को नियंत्रित करती हैं–मुख्यतः कम मजदूरी और विस्तारशील बाजार वाले विकासशील और उत्तर–समाजवादी देशों में। ये फर्म श्रमिक–स्वामित्व की नहीं है और कर्मचारियों को सहकारी समिति के सदस्यों समान अधिकार या सुविधाएँ नहीं मिलती है। इसकी बजाय, वे मजदूरी पर कार्य करने वाले श्रमिक हैं। बास्क देश और स्पेन में भी, औद्योगिक और खुदरा सहकारी समितियां एक बड़ी संख्या में अल्पकालिक अनुबंधों पर अस्थायी श्रमिकों को नियुक्त करती हैं। आज, मोन्ड्रगोन के सिर्फ आधे व्यवसाय ही सहकारी समिति हैं और इसके सिर्फ एक–तिहाई कर्मचारी सदस्य हैं।

2013 में, Fagor Electrodomesticos (घरेलू उपकरण विभाग) 2008 के वित्तिय संकट का एक शिकार ने स्वयं को दिवालिया घोषित किया, जिससे स्पेनिश आवास बाजार और गृह उपकरण क्षेत्र को झटका लगा। सालों तक मोन्ड्रगोन समूह ने Fagor को वित्तिय सहारा दिया, परंतु 6 देशों के 18 संयंत्रों में ब्रांड का निवेश और अधिक भार बन गया, जब तक संबंद्ध सहकारी समितियां Fagor को और बचाने के लिये इच्छुक नहीं थी। दिवालियेपन ने 5600 नौकरियों के लिये खतरा पैदा किया (बुलबुले के पहले 11000 से कम)।

25,000 की जनसंख्या के साथ, इसने मोन्ड्रगोन के शहर पर कुठाराघात किया। मोन्ड्रगोन और पास के कस्बों के थ्ंहवत सदस्यों ने जल्दी सेवानिवृत्ति ले ली या अन्य सहकारी समितियों में स्थानांतरित हो गये, परंतु स्थानीय अनुबंध श्रमिक और Fagor सहायक कंपनियों के 3500 कर्मचारी समान रूप से सुरक्षित नहीं थे। उनका भाग्य, और अन्य सहकारी समितियों में कर्मचारियों की स्थितियां, वैसे ही मोन्ड्रगोन की कहानी का हिस्सा है जैसे कि सहकारी समिति सिद्धांत, लोकतांत्रिक संरचनायें और सदस्यों को सरप्लस का वितरण है।

ब्रोकला, पोलैंड में, कम वेतन और यूनियन–विरोधी दमन पर 2008 की एक हड़ताल ने बास्क देश में सहकारी समिति सदस्यों, पूरे स्पेन के अस्थायी कर्मचारी और सहायक कंपनियों के मजदूरी पाने वाले श्रमिकों के साथ Fagor की त्रि–स्तरीय श्रम शक्ति के बारे में सवाल उठाया। क्या बास्क देश में नौकरी की सुरक्षा, समुचित वेतन, और कार्यस्थल पर भागीदारी किसी और स्थान के शोषण पर निर्भर करती हैं?

चीन में मोन्ड्रगोन सहायक कंपनियों की तुलना में विदेशी–स्वामित्व की पूंजीवादी फर्मों के साथ सहकारी समिति–स्वामित्व के कारखानों के एक अध्ययन में यह पाया गया कि वेतन कम था, अवधि लंबी और स्थितियां कठिन थी। बिल्कुल उनके पूंजीवादी प्रतिद्वंदियों के समान, मोन्ड्रगोन सहकारी समितियों ने श्रम–प्रधान वसतुओं के सस्ते उत्पादन और उभरते हुये बाजारों के पास आने लिये चीन में निवेश किया था–एक रणनीति जिसे सहकारी समिति के सदस्यों ने स्वीकार किया था जब उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय नीति के पक्ष में मतदान किया था।

क्या सहायक कंपनियां सहकारी समितियों में परिवर्तित की जा सकती है? विशिष्ट राष्ट्रीय कानूनी ढांचा इसे मुश्किल बनाता है, हालांकि 2003 की कॉपरेटिव कांग्रेस ने भागीदारी और लोकतंत्र के विस्तार के लिये "सामाजिक विस्तार" का आव्हान किया। मोन्ड्रगोन की गैर–लाभकारी संगठन वैश्विक सामाजिक–आर्थिक नेटवर्क को मजबूत करने की उम्मीद कर रही है, अमेरिका के यूनाइटेड स्टील श्रमिकों को यूनियनीकंत सहकारी समितियों का विकास करने में मदद कर के, और Pittsburgh में हाल ही में शुरू की गये व्यावसायिक धोबीखाने के साथ कर रही है। फिर भी, मोन्ड्रगोन की सहायक कंपनियां अभी भी मानक कंपनियों की तरह ही कार्य कर रही है, यद्यपि उनका उद्देश्य हिस्सेदारों का लाभ बढ़ाना नहीं है अपितु बास्क देश में सहकारी समितियों और नौकरियों को सुरक्षित करना है।

अनेक विश्लेषक मैक्सिको में श्रमिकों को शिक्षित करने के प्रयासों और गैलिसिया, स्पेन में निजी उदयमों के सहकारी समितियों के रूपांतर की ओर इंगित करते हुये मोन्ड्रगोन समूह पर गैर–सदस्य कर्मचारियों से अच्छा व्यवहार करने के लिये भरोसा करते हैं। दूसरे, हालांकि, तर्कदेते हैं कि मोन्ड्रगोन की वैश्विक रणनीति साबित करती है कि सहकारी समितियां पूंजीवादी सागर में जीवित नहीं रह सकती हैं। प्रतिस्पर्धा का सामना करते हैं सहकारी समितियां या तो पूंजीवादी फर्म या सहस्थापक में क्षरण हो जाती है।

हालांकि, इन समस्याओं का एक लंबा इतिहास है। 1980 के दशक के उत्तरार्ध में, मैंने पाया कि Fagor सहकारी समिति में श्रमिक वर्ग की स्थिति, आम सदस्यों की निर्णय लेने में भागीदारी, और श्रमिक की पहचान, यूनियनीकृत श्रम शक्ति के साथ किसी पड़ौसी पूंजीवादी कारखाने से कोई बेहतर नहीं थी। इसके अलावा सहकारी समिति सदस्यों ने बास्क श्रमिक आंदोलन–उस समय पर, सक्रिय वामपंथी गठबंधन का एक भाग–के साथ कम एकजुटता दिखायी। एक संस्था के रूप में, मोन्ड्रगोन इस राजनीति से साफ निकल आया, और सहकारी समिति के सदस्य नौकरी पर बने रहे जबकि स्थानीय खनिज क्षेत्र के श्रमिक हड़ताल पर चले गये।

मोन्ड्रगोन गैर–पूंजीवाद के लिये स्वर्ग प्रतीत हो सकता है, परंतु इसके लिये गये अनुभवों में महत्वपूर्ण सीख हैं, खासकर अगर हम–श्रमिक सदस्य, अनुबंध सदस्य, मजदूर–और श्रमिक–वर्ग आंदोलनों को केंद्र में रखे तो। व्यापक–आधार वाले श्रमिक और सामाजिक आंदोलनों को बनाने में सहकारी समितियों की क्या भूमिका है और मोन्ड्रगोन की समतावादी भावनायें एक व्यापक राजनीतिक दृष्टि को कैसे मजबूत कर सकती है? मोन्ड्रगोन गैर–पूंजीवाद के बारे में सोचने के लिये एक प्रारंभिक बिंदु उपलब्ध कराता है–परंतु इसका उदाहरण उन मुश्किल प्रश्नों के लिए जो ये वर्ग और शक्ति के बारे में खड़ा करता है, उतना ही बहुमुल्य है, जितना कि वैकल्पिक व्यवसाय मॉडल के लिये जिनका ये मूर्तरूप है। ■

शररयन कास्मिर से पत्र व्यवहार हेतु पता <sharryn.m.kasmir@hofstra.edu>

> ग्रीस में बिचौलिया–विरोधी आंदोलन

थियोडोरोस रकापोलास, बर्गन विश्वविद्यालय, नार्वे[1]

थेसालोनिकि में आलू बेचते हुए

पिछले छः वर्षों से ग्रीस जिस प्रकार के आर्थिक संकट का सामना कर रहा है, उसका आधारिक जवाब अक्सर सहकारी समितियाँ रहीं हैं जिन्होंने 1930 के दशक की अमरीकी मंदी से लेकर 1990 के दशक के पूर्वार्द्ध के पूर्वी यूरोप का समाजवाद पश्चात का संकट, से 2001 में अर्जेन्टीना को मारने वाला संकट हो, में संक्रमण या मंदी में रोजगार की रक्षा कर कामगारों को सुरक्षा चक्र प्रदान किया है। 2015 में बेरोजगारी की दर के 27% से भी अधिक वृद्धि के कारण, ग्रीस के अविरत मंदी का सामना करने के साथ लामबंदी की एक श्रंखला ने अत्यन्त राजनैतिकरण वाली अनौपचारिक सहकारी समितियों के एक नेटवर्क जो मुखर राजनैतिक क्षेत्र के साथ साथ संकट में दैन्य जीवन के सामाजिक व्यवस्थापन को पोषित किया है। ग्रीस में चारों तरफ फैले जमीनी समूहों ने पारिस्परिकता–आधारित सामाजिक अर्थव्यवस्था, जो कभी 'एकजुटता'' या ''वैकल्पिक'' अर्थव्यवस्था कहलाई, को निर्मित कर अतिवादिता की एक नई लहर को अभिव्यक्त किया।

पिछले 5 वर्षों में, जमीनी समूहों के इस अनौपचारिक नेटवर्क का विकास ग्रीक वामपंथ की बढ़ती हुई लोकप्रियता और सिरिजा (अतिवादी वामपंथ का गठबंधन) का सत्ता में क्रमिक उठान से करीबी से जुड़ा था। यद्यपि इस ओवरलेप ने कार्यकर्त्ताओं के लिए दुविधा को उत्पन्न किया है : सिरिजा की चुनावी विजय और मितव्ययता के नये उपायों को स्वीकारने को पार्टी का हाल ही का निर्णय के फलस्वरूप एकजुट अर्थव्यवस्था के कार्यकर्ता नई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

> सक्रिय रूप में आंदोलन

अनौपचारिक सहकारी समूहों के इर्द गिर्द बने अधिकतर ये प्रयोग विनियम बाजार एवं समय बैंक के साथ सामाजिक क्लिनिक या दवाखानें जैसे सहकारिता द्वारा संगठित सामाजिक कल्याण प्रावधानों ने मितव्ययता का विकल्प प्रस्तुत किया है। गीस के शहरों में कामगार वर्ग एवं निम्न मध्यमवर्गीय जिलों में, विशेष रूप से 2011 और 2014 के मध्य, अनौपचारिक सहकारिताकरण के प्रबल उदाहरणों को अनुभव किया है।

थेसालोनिकी (ग्रीस का दूसरा बड़ा शहर) में सिटी सेण्टर और कुछ लोकप्रिय उपनगरों को ''बिचौलिया–विरोधी'' आंदोलन से लाभ हुआ है। अवैतनिक प्रतिभागियों ने भोजन वितरण, कृषि उत्पादकों द्वारा भोजन को खुले, अस्थाई कृषक बाजारों में उपभोक्ताओं को प्रत्यक्ष बेचने में मदद करने हेतु जमीनी सहकारी समितियों के साथ संयोजन किया। 2012–13 में लगभग 80 ऐसे समूह ग्रीस में कार्यरत थे; आंदोलन की जवानी में और 2013 के उत्तरार्ध में क्षेत्रीय कार्य के दौरान अकेले थेसालोनिकी में प्रत्येक रविवार को हजारों की संख्या में भाग लेने वाले दस ऐसे आकस्मिक बाजार थे।

यह बिचौलिया–विरोधी आंदोलन खाद्य पदार्थों के वितरण का प्रबंधन करने वाली अनौपचारिक सहकारी समितियों के आस–पास आयोजित था। शहरी कार्यकर्ताओं ने निर्धन एवं मध्यमवर्गीय इलाकों में चौक, पार्किंग स्थल या बगीचों में कृषक बाजार आयोजित किये। इन तात्कालिक बाजारों को बाजारी बिचौलियों से बचने के लिए ही आयोजित किया गया था। बिचौलियों के शुल्क को हटाने से ताजा उत्पाद खरीदने योग्य हो गये। कार्यकर्त्ताओं ने आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों से सम्पर्क किया, उन्हें अपने द्वारा आयोजित बाजारों में आमन्त्रित किया और उनके साथ दीर्घकालिक सहयोग के लिए संपर्क साधा। कार्यकर्त्ताओं ने नियमित, चाहे अनौपचारिक तरीके से कार्य किया; किसानों ने खुदरा मूल्य के आधे दाम तक ताजा उत्पाद को बेचा। इन सम्बन्धों को ऐसे अनुबंध, जिन्होंने यह शर्त रखी कि किसान गोल्डन डॉन (एक नव–नाजी दल जिसका वर्तमान में संसदी–सीटों में तीसरा स्थान है) को मत नहीं देंगे या नस्लीय नीतियों का समर्थन नहीं करेंगे, द्वारा औपचारिक स्वरूप दिया गया।

>>

> आंदोलन सुप्त अवस्था में (सापेक्ष रूप से)

आज कई स्थानीय घरों की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति इस अनौपचारिक कृषक वितरण से हो रही है। हालांकि 2013 के अन्त तक चरम अवस्था में आने के बाद, आंदोलन का विषय क्षेत्र, व्यवहार और यहाँ तक कि उसकी पहचान भी डांवाडोल हुई है। कई बिचौलिया–विरोधी समूह वर्तमान में कम मिल कर या बाजार की गतिविधियों का पूर्ण रूप से परित्याग कर सुषुप्त हैं।

बिचौलिया–विरोधी आंदोलन की मुख्य समस्या एक प्रतिकूल संदर्भ से निकलती है। सहकारी कर्त्ताओं को पुलिस द्वारा अभियोग का सामना करना पड़ा। जब वे अपने खुले बाजारों के लिए लाइसेंस प्राप्त करने में असफल हुए और कुछ किसानों को ''सार्वजनिक स्थान पर अवैध कब्जे'' के लिए जुर्माने का सामना करना पड़ा। यह एक वैध शुल्क है जो सामान्यतः थैसालोनिकी के खुले बाजारों के संघ, एक बिचौलिया समर्थक समूह, के द्वारा लगाया जाता है। निजी थकावट ने भी अपनी भूमिका निभाई: बाजारों को आयोजित करने में किसानों द्वारा अग्रणी भूमिका निभाने में अरूचि से भी कई कार्यकर्त्ता निराश हुए।

दूसरी समस्या अधिक जटिल है जो कार्यकर्त्ताओं की इस चिंता से संबंधित है कि क्या ये अनौपचारिक संचालन लचीलेपन की गारण्टी दे सकते हैं? कई कार्यकर्त्ताओं ने औपचारिक सहकारितावाद पर चर्चा की लेकिन इसके लिए एक प्रगतिशील राजनैतिक एवं वैधानिक ढांचे की आवश्यकता होगी।

बेशक, ऐसी कोशिशें एक प्रगतिशील सरकार द्वारा प्रोत्साहित होती। जनवरी 2015 के प्रारम्भ में, सिरिजा द्वारा सरकार बनाने के पहले महीनों में, आंदोलन सुशुप्त अवस्था में प्रवेश करने लगा। राज्य के दबाव का सामना करने के बाद और किसानों को आंदोलन में अधिक प्रत्यक्ष रूप से जुड़ने के लिए मना लेने में असफल होने से, कार्यकर्त्ता अपनी ''एकजुट अर्थव्यवस्था'' के लिए अधिक अनुकूल परिस्थितियों की आशा करने लगे। सरकार में परिवर्तन की उम्मीद के कारण, कार्यकर्त्ता अनौपचारिक सहकारी समितियों को मजबूती प्रदान करने की कोशिशों से पीछे हट गये। सामूहिक सभाओं में कुछ प्रतिभागियों ने "Cooptation" के बारे में चिंता प्रकट की परन्तु अधिकतर एकजुट अर्थव्यवस्था कार्यकर्त्ता, जैसा कि एक कार्यकर्त्ता ने कहा कि एक बार वाम दल राज्य की बागड़ोर संभाल ले, काफी अलग वातावरण की अपेक्षा कर रहे थे। वस्तुतः, कई सामूहिक बैठकें इस विचार के इर्दगिर्द घूम रही थी कि ''हम वो कर रहे हैं जिसे राज्य/सरकार को करना चाहिए।'' एक अग्रणी कार्यकर्त्ता ने सभा में कहा कि ''आंदोलन काफी आसानी से सामाजिक राज्य द्वारा समर्थित कृषक लामबंदी में परिवर्तित हो सकता था।'' विशेष रूप से जैसे सिरिजा सदस्य भाग लेने लगे (या फिर समूहों में घुसपैठ करने लगे, जैसा एक कार्यकर्त्ता ने मुझे हँसते हुए बताया), यह स्पष्ट हो गया कि सिरिजा ''सामाजिक अर्थव्यवसाी के एक नये युग'' का सूत्रपात करेगी।

> सत्ता में सिरिजा

चुनावों की आशंका में, पार्टी ने समूहों के मध्य और अनौपचारिक समूहों एवं राज्य के मध्य सम्बन्धों को मजबूत करने के लिए एक वृहद संगठन का सृजन किया इसने एकजुट अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रचार की पेशकश की जिसमें सिरिजा की लोकप्रियता की गूंज थी। लेकिन पार्टी के मंच ने जमीनी स्तर पर आंदोलन के विकास को निशाना नहीं बनाया। इसके विपरीत, हमने एक जटिल स्थिति को देखा है, जिसमें कई कार्यकर्त्ता सिरिजा के साथ अधिक जुड़ गये हैं, जबकि अन्य ने अपने आप को आंदोलन से पूरी तरह अलग कर लिया।

इस दौरान, खाद्य एकजुट अर्थव्यवस्था, संख्या एवं अपील दोनों में धीरे धीरे ह्रासित हुई है, यद्यपि कुछ प्रगतिशील नगरपालिकाओं ने स्वयं के बिचौलिया–विरोधी बाजारों का आयोजन करना प्रारम्भ कर दिया। अधिकांश आरंभिक जमीनी समूह, कई कार्यकर्त्ताओं द्वारा कथित "Co-optation" और अन्य द्वारा ''सम्पिडन'' के मध्य झूलते हुए अनिश्चय की स्थिति में हैं। राज्य के आलिंगन के कारण इस आंदोलन के आंशिक रूपांतरण का विवरण देते हुए कई कार्यकर्त्ता लोकप्रिय अवधारणा "anathesi" को काम में लेते हैं जिसका मोटे तौर पर अनुवाद प्रदान करना और इसके अभ्यास को प्रदेय राजनीति किया गया। इसका विचार है कि जमीनी आंदोलन अपनी उर्जा एवं क्षमता को राजनीति की स्थापना में प्रदान कर सकते हैं जिससे उनकी गतिविधियाँ धीमी पड़ जाती हैं।

विडंबना यह है कि जमीन पर सहकारिता सामाजिक अर्थव्यवस्था कट्टरवादी वामपंथी सरकार की प्रगतिशील राजनीति के साथ व्यक्त हुई है, सत्ता में सिरिजा एकजुट अर्थव्यवस्था के विकास के लिए एक अप्रत्याशित बाधा साबित हुई है। यह एक ऐसा यथार्थ है जो पार्टी एवं अनौपचारिक समूहों के मध्य और सबसे महत्वपूर्ण रूप से इस प्रत्याशा में कि वाम एकजुट अर्थव्यवस्था का समर्थन करेगा, में स्थित है। (जनवरी चुनाव का मुख्य नारा ''उम्मीद आ रही है'' था)।

एकजुट अर्थव्यवस्था का मुख्य साध्ान, राजनैतिक लामबंदी में कमी आई है तथापि बिचौलिया–विरोधी आंदोलन की महत्वपूर्ण छाप अभी भी थैसालोनिकि के नागरिक और राजनैतिक परिदृश्य में दिखाई देती है। सामाजिक क्लिनिक और दवाखाने सक्रिय रहते हैं और उन्हें अपेक्षाकृत रूप से औपचारिक स्वरूप दिया है जबकि बिचौलिया–विरोधी आंदोलन द्वारा स्थापित एक सहकारी खाद्य दुकान बहुत सफल रही है। मित्तव्यत्तता वास्तव में पार्टी द्वारा एक नये और मित्तव्यत्तता पैकेज को रोकने में सिरिजा के निराशाजनक विफलता ने इस बीच कई एकजुट अर्थव्यवस्था प्रतिभागियों की आँखों में संस्थागत वाम दल को अवैध करार दिया है। इससे सरकार और जमीनी समूहों के मध्य खाई चौड़ी हुई है। मित्तव्यत्तता के संकट के मद्देनजर, सरकार के पास सहकारी समितियों और एकजुट अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित और पूर्ण रूप से समर्थन देने वाले वैधानिक ढाँचे/फ्रेमवर्क के शिल्प के लिए कोई गुंजाइश नहीं होगी। जैसा कि एक कार्यकर्त्ता ने कहा, क्या यह बदलाव ऐसे आंदोलन को पुनर्जीवित कर सकता है जो भौतिक आवश्यकता और भावनात्मक गुस्से से उपजा है? यह देखना बाकी है कि क्या ये नई गतिशीलता एकजुट आंदोलन को पुनर्जीवित या प्रतिभागियों के वामपंथी संस्थागत राजनीति के साथ असहज संबंधों को नया आकार दे सकेंगी। ■

थियोडोरोस रकापोलास से पत्र व्यवहार हेतु पता <trakopoulos@gmail.com>

[1] This article is based on fieldwork funded by the Wenner-Gren Foundation for anthropological research, Grant Number 8856.

>अर्जेंटीना में स्वस्थ होते उद्यम

जूलियन रेबॉन, ब्यूनास आयर्स विश्वविद्यालय, अर्जेन्टीना

Zenon सिरेमिक कारखाना जो 2001 में कामगारों द्वारा कब्जा किया गया, अर्जेन्टीना में बहाल किये कारखानों में से सबसे प्रमुख है।

यह ब्यूनास आयर्स के गरिन जिले में 11 अगस्त 2014 की सुबह का दृश्य है : डानेले ग्राफिक के 400 कर्मचारियों को कारखाने के मुख्य द्वार पर बहुराष्ट्रीय कम्पनी द्वारा अर्जेन्टीना में कारोबार के बंद करने का नोटिस मिला। कर्मचारियों ने सभा कर कारखाने पर कब्जा कर लिया। सहकारी समिति के रूप में संगठित हो, उन्होंने शीघ्र ही उत्पादन पुनः प्रारम्भ कर दिया।

डानेले कर्मचारियों ने वही रणनीति अपनाई जो 2000 से अब तक अर्जेन्टीना में 300 से अधिक कम्पनियों में काम में ली गई है : स्वस्थ होते उद्यम। संकटग्रस्त कम्पनियों के कर्मचारी स्वयं द्वारा उत्पादन करने और अपनी नौकरियों की रक्षा करने हेतु अक्सर कर्मचारी–सहकारी समितियों में संयोजित होते हैं। ये बचावी रणनीतियाँ सहकारिता के मुख्य लक्षण–लोकतंत्र, स्वैच्छिक संघ एवं सामूहिक स्वामित्व को मूर्त रूप देती हैं। ऐसा करने से वे अधिग्रहण करने से पूर्व से अधिक लोकतांत्रिक और न्यायूपर्ण कम्पनियों का निर्माण करते हैं।

1990 के दशक के उत्तरार्ध, विशेष रूप से 2001 के सामान्य संकट के बाद से अर्जेन्टीनामें कर्मचारी उद्यमों को ''स्वस्थ'' करने लगे। 1990 के दशक के नवउदारवादी सुधारों ने अर्थव्यवस्था के समक्ष गतिरोध पैदा किया परन्तु अर्जेन्टीना के सामान्य संकट ने कर्मचारियों द्वारा बहाल उद्यमों के विस्तार को दो तरीकों में प्रभावित किया। पहला, इस काल में कई कारखानें बंद हुए या दिवालिया हो गये जिससे बेरोजगारी और रोजगार अस्थिरता के अभूतपूर्व स्तर को पैदा किया। दूसरा, इस गंभीर राजनैतिक संकट ने सामाजिक अशांति और संघर्ष की अप्रत्याशित प्रक्रियाओं को ट्रिजर किया। इस संदर्भ में कर्मचारियों द्वारा बहाल किये उद्यम एक सामाजिक आंदोलन बन गये। कार्य की संस्कृति के लिए जाने जाने वाले समाज के लिए बेरोजगारी के विरूद्ध प्रतिरोध करना एक व्यापक एवं वैध प्रोजेक्ट बन गया।'

सामाजिक–आर्थिक एवं राजनैतिक संकट के थमने के साथ कुछ विद्वानों ने मान लिया कि कर्मचारी–बहाल उद्यम गायब हो जायेंगे परन्तु ऐसा नहीं हुआ। नीचे दिया गया चित्र दर्शाता है कि यद्यपि कर्मचारी–बहाल नये उद्यमों की संख्या 2002 में सर्वाधिक थी, अर्थव्यवस्था में सुधार और बेरोजगारी की दर घटने के बावजूद अधिग्रहण होते रहे। कर्मचारियों के पास सामजिक मान्यता प्राप्त एक नया उपकरण था जिसे वे नये संदर्भों में निरन्तर काम में लेते रहे। यह विस्तार, बेरोजगारी की दर जो यद्यपि कम हो रही थी परन्तु महत्वपूर्ण बनी हुई थी (पिछले कुछ वर्षों में 7% के आसपास) और राजनैतिक परिस्थितियों (कम से कम संघीय स्तर पर) जो इन प्रक्रियाओं के प्रतिकूल नहीं थी, से भी प्रोत्साहित था।

ऐसा प्रतीत, होता है कि कर्मचारी–बहाल उद्यम अब रहेंगे। ब्यूनस आयर्स विश्वविद्यालय के Programa Facultad Abierta के अनुसार, 311 कर्मचारी–बहाल उद्यमों ने 2013 में अर्जेन्टीना में

>>

13,642 कर्मचारियों को काम पर रखा। इन में से आधी कम्पनियाँ यद्यपि ब्यूनास आयर्स मेट्रोपोलिटन एरिया में स्थित हैं, देश के 24 जिलों में से 21 में कर्मचारी–बहाल कारखानें हैं। इनमें से अधिकांश धातु, ग्राफिक, कपड़ा और खाद्य क्षेत्रों में लघु एवं मध्यम कम्पनियाँ हैं।

बहाल उद्यम नये रोजगार पैदा करने एवं उन्हें बनाये रखने में सफल हुए हैं। इनमें से बहुत कम ही बंद हुए हैं। यद्यपि, उनके समक्ष विविध चुनौतियाँ और तनाव हैं। उदाहरण के लिए, वर्तमान कानून के तहत, कारखानों पर कब्जा करने वाले कर्मचारी स्वायत्त कर्मचारी माने जाते हैं जो उनके सेवानिवृत्ति, स्वास्थ्य बीमा और पारिवारिक परिलाभों में कमी लाता है। कर्मचारी सहकारी समितियाँ वर्तमान में मांग कर रही हैं कि राज्य विशेष रूप से श्रमिक प्रबंधन को मान्यता प्रदान कर, उन्हें कर्मचारियों के समान ही सामाजिक परिलाभ दें। श्रमिकों द्वारा चलाये जा रहे उद्यमों के सामने उत्पादक इकाइयों पर श्रमिकों के वैद्य/न्यायोचित कब्जे को निर्धारित करने की भी चुनौती है। कारखानों पर वैध अधिकार प्राप्त करने के लिए श्रमिक सार्वजनिक प्रचलन एवं स्वामित्वहरण के कानूनों पर निर्भर है परन्तु कुछ मामलों में ये सम्पत्ति अधिकारों का समाधान करने में अपर्याप्त रहे हैं, अतः परिणाम स्थानीय अधिकारियों एवं न्यायाधीशों के समर्थन पर निर्भर हैं।

अर्जेन्टीना में नये स्वस्थ उद्यम 2000–2013

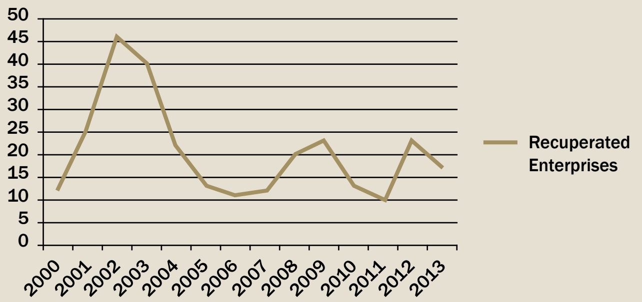

स्त्रोत : Programa Facultad Abierta, ब्यूनास आयर्स विश्वविद्यालय से प्राप्त आंकड़ों से लेखक द्वारा वर्णित।

2011 में दिवालियापन के कानून या Ley de Concursosy Quiebras में संशोधन किया गया ताकि दिवालिया होने की स्थिति में, सहकारी समिति में संगठित श्रमिक दिवालिया कम्पनी को खरीदने में श्रम क्रेडिट (acreencias laborales) को काम में ले सकते हैं। फिर भी, यह कानून सभी मामलों में लागू नहीं होता है और यह अभी काम में लेना शुरू ही हुआ है। अपरिभाषित सम्पत्ति के अधिकार के संदर्भ में, श्रमिकों को बेदखली का भी खतरा रहता है। जब तक मैं यह लेख खत्म कर रहा था, पुलिस हाल ही में बहाल किये गये रेस्त्रां La Robla से कामगारों को निकाल रही थी, जबकि बहाल Hotel Baven के कामगार भी बेदखली के आदेश का सामना कर रहे थे। यद्यपि बहाल उद्यम सामाजिक रूप से वैध हैं, वे अभी तक कानून द्वारा पूरी तरह से मान्यता प्राप्त नहीं हैं। ■

जूलियन रेबॉन से पत्र व्यवहार हेतु पता <julianrebon@gmail.com>

[1] In 2012, the Gino Germani Institute at the University of Buenos Aires carried out a survey in the Buenos Aires Metropolitan Area. Results indicated that 73% of the population was aware of the existence of recuperated enterprises and that 93% of them considered this a positive development.

> दुनिया का अंत या पूंजीवाद का अंत?

लेस्ली स्कलेयर, लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, यूनाइटेड किंगडम

चित्रण अरबू द्वारा

ऐसा कहा गया है कि "दुनिया के अंत की कल्पना करना पूंजीवाद के अंत की कल्पना करने की तुलना में आसान है"–यह पूंजीवादी वैश्वीकरण के युग के बारे में गहरी सच्चाई है। एक गैर–पूंजीवादी दुनिया कैसी होगी, विशेष रूप से हाल ही के तथाकथित समाजवाद और साम्यवाद के संदर्भ में, से कहीं अधिक पूंजीवाद की बुराइयों पर लिखा गया है। इसके आगे जाने के लिए, हमें पुनः शुरूआत करनी होगी। मेरा तर्क है कि प्रगतिशील परिवर्तन की संभावनाओं को वैश्विक पूंजीवाद, सामाजिक लोकतंत्र और उनके द्वारा निर्मित राज्य के स्वरूपों को नकारने, टालने और अंततः इतिहास के कूड़ेदान के हवाले करने की दीर्घकालिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है।

सभी मानवता के लिए समृद्धि, खुशी और शांति लाने में पूंजीवादी वैश्वीकरण की विफलता क्यों निश्चित है? पूंजीवादी के दो घातक दोष वर्ग ध्रुवीकरण का संकट (अमीर अधिक अमीर हो रहे हैं, अत्यधिक निर्धन हमेशा हमारे साथ हैं, और मध्यम वर्ग अधिका–धिक असुरक्षित है) और पारिस्थितिक अवहनीयता हैं (उपभोक्तावाद की संस्कृति–विचारधारा के द्वारा लगातार प्रोत्साहित विकास के पूंजीवादी और समाजवादी सिद्धान्त दोनों का अपरिहार्य परिणाम) इन संकटों के लिए पारदेशीय पूंजीवादी वर्ग (जिसमें कार्पोरेट, राजनैतिक, व्यावसायिक एवं उपभोक्तावादी अंश सम्मिलित हैं) एवं उसकी प्रभुत्व वाली मूल्य व्यवस्था, उपभोक्तावाद की संस्कृति–विचारधारा को प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।[1]

यहाँ, मैं सिर्फ एक प्रगतिशील गैर पूंजीवादी संक्रमण के प्रमुख तत्वों की ओर इंगित करना चाहता हूं। पहला आकार है। विशाल बहुराष्ट्रीय निगम और वृहद कार्पोरेट देश जो विशाल पेशेवर एवं विशाल उपभोक्ता वस्तुओं और सेवा संगठनों द्वारा सेवित हैं, सभी जगह लोगों के जीवन पर हावी है अतः यह स्पष्ट लगता है कि लघु–स्तरीय संरचना शायद बेहतर–तरीके से काम कर सकती हैं और लोगों को अधिक संतोषप्रद जीवन जीने में सक्षम बना सकती हैं। यह कोष्ठात्मक स्थानीयता की कल्पना नहीं है : एक वैकल्पिक, अतिवादी, प्रगतिशील वैश्वीकरण की मेरी दृष्टि लघु उत्पादक–उपभोक्ता सहकारी समितियाँ (PCC), जो कई स्तरों पर सहयोग कर ग्रह पर सभी के लिए उचित जीवन स्तर सुनिश्चित करने का मुख्य कार्य करती हैं, के नेटवर्क की है।

एक गैर पूंजीवादी दुनिया में वर्गीय वैश्वीकरण की बंधनमुक्त संभावना को छोड़ने के लिए PCCs को कैसे संगठित किया जा सकता है? सरल एवं उत्साहपूर्ण जवाब है कि कम से कम वे परिवर्तन के प्रारंभिक दौर में तो काम कर सकते हैं। विशेष रूप से तब जब लाखों लघु स्तरीय सरकारी समूह दुनिया भर के परिक्षेत्रों

>>

में कार्य कर रहे हों। इस संगोष्ठी में अन्य निबन्धों में प्रगतिशील सक्रियतावाद और चेतना जुटाने वाली प्रेरणादायक कहानियों को आलेखित किया गया है, परन्तु इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे सभी समस्याग्रस्त हैं। शररयन कस्मीर दर्शाते हैं कि कभी सहकारी आंदोलन की सबसे बड़ी उम्मीद – Mondvagon, वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था के ढाँचे के अंदर अनिवार्य रूप से जोखिम में है। केरल के उरालुंगल श्रम संविदा सहकारी समिति के अपने वैयक्तिक अध्ययन में मिशेल विलियम्स वास्तविक श्रमिक नियंत्रण की आवश्यक शर्तों का खुलासा करती हैं परन्तु उनके निष्कर्ष सुझाते हैं कि उसका भविष्य सुरक्षित नहीं है। पॉल सिंगर के साथ साक्षात्कार में ब्राजील में एकजुट अर्थव्यवस्था (Solidarity Economy) का विकास लोगों को गरीबी से बाहर निकालने के उत्साहजनक परिणाम प्रदान करता है। लेकिन यह एक विशाल कार्य है और यह अस्पष्ट है कि सम्पूर्ण समाज को कैसे बदला जा सकता है। जुलियन रेबॉन का अर्जेन्टीना में श्रमिकों द्वारा चलाये जा रहे कारखानों का विश्लेषण पूंजीवादी राज्य श्रमिकों की समृद्धि या यहाँ तक कि उनके अस्तित्व में रहने के लिए भी क्यों आसानी पैदा करेगा, पर प्रश्न उठाता है। थियोडोरोस रकोपोलस का ग्रीस में बिचौलिया–विरोधी बाजार पर शोध, जहाँ सिरिजा द्वारा राज्य का वामपंथी कब्जा, आंदोलन को समर्थन देने के बजाय बाधित करता हुआ प्रतीत होता है।

इन पहलों में से कोई भी पूंजीवादी शोषण या पारिस्थितिक अवहनीयता से बचने के किसी मार्ग को इंगित नहीं करती और कोई भी चाहे वामपंथी दक्षिणपंथी या मध्यम पंथी हो राज्य की भूमिका को समस्याग्रस्त नहीं करती, न ही ये पहल किस प्रकार पूंजीवादी उपभोक्तावादी बाजार के साथ काम करती हैं को बताती हैं। मेरा निष्कर्ष है कि सभी राज्य अंत में वर्गीकृत हो जाते हैं और सिर्फ PCC जैसे लघु स्तरीय समुदायों, जो स्थानीय या वैश्विक स्तर पर इंटरनेट द्वारा जुड़े हुए है, के द्वारा ही हम इस अपरिहार्य फिसलन से बच सकते हैं।

अपनी जेल डायरियाँ (Prison Notebooks) में ग्राम्शी लिखते हैं कि संकटकाल में पुराना मर रहा है और नये ने अभी तक जन्म नहीं लिया है। जहाँ ग्राम्शी ने ऐसी परिस्थिति (1930) के रूग्ण लक्षणों की तरफ ध्यान आकर्षित किया, हमारा संकट भिन्न है और मैं पूंजीवादी आधिक्य के वर्तमान संकट के आशावान लक्षणों के प्रति ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। (जो पैदा होने का इंतजार कर रहे हैं)

बाजार के साथ प्रतिस्पर्धा से बचने और वर्गीकृत राज्य से भागने की पहलों की व्यावहारिकता कई अपरीक्षित मान्यताओं पर टिकी हुई है। पहली मान्यता है कि जो लोग आवश्यक दैनिक कार्य करते हैं वे बड़े निगमों एवं उनके स्थानीय सहयोगियों की तुलना में PCC में कार्य करते रहेंगे। कई सारे लोग जो निजी या सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करते हैं, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने स्थानीय समुदायों में खाद्य उत्पादन, परिवहन नियोजन, सीखने और कौशल संचरण के स्थानों की स्थापना, स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना, पावर व्यवस्था चालू रखना इत्यादि के लिए PCC को स्थापित कर रहे हैं। दुनिया भर में PCC अभी भी लघु स्तर पर ऐसा कर रही हैं परन्तु ऐसी पहले पूंजीवादी बाजार के भीतर संघर्ष करती हैं। दुनिया के विभिन्न भागों में समुदाय–समर्थित कृषि योजनाएँ इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता लाने के लिए लंबे एवं कठिन मार्ग पर पहले कदम का प्रतिनिधित्व करती हैं।

नव उदारवादी विचारक तर्क देते हैं कि पूंजीवादी वैश्वीकरण का कोई विकल्प नहीं है। यदि हम उन पर विश्वास करने से मना करें और विकल्पों का निर्माण करें और ये विकल्प स्वयं में सफल भी साबित हो तो बाजार के तर्क को नकारा, कम आंका या फिर उसे नजरअंदाज किया जा सकता है। मेरे यह लिखने के साथ ही, मैं उन लोगों की मुस्कान देख सकती हूँ जो इस पर विश्वास करना चाहेंगे परन्तु इसे अविश्वसनीय पाते हैं। सौ वर्ष पूर्व ऐसा कोई सुझाव कि मानव अंगों को सफलतापूर्वक प्रत्यारोपण हो सकता है कि दुनिया के किसी भी कोने में होने वाली घटनाओं को हम सजीव देखने में सक्षम होंगे या यह कि हम चाँद पर चल सकेंगे, महाद्वीप–पार यात्रा कुछ घंटो में करी जा सकेगी और दृश्य संचार लगभग तुरन्त हो सकता है, को भी अविश्वसनीय कह खारिज किया जा सकता था। जैसा कि विश्व सामाजिक फोरम का नारा है : ''एक और दुनिया संभव है''।

बहुत कम अपवादों के साथ, समाजशास्त्र ऐसे मामलों में चुप है; उनके बारे में आवाज उठाना भी वेबर के मूल्य मुक्त द्वारपालों से पेशेवर भर्त्सना की अप्रिय धमकी को बढ़ावा देने जैसा है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि स्नातक विद्यालय और धन निकाय आम तौर पर गैर पूंजीवादी तर्ज पर शोध को समर्थन देने में अनिच्छुक रहते हैं। विडम्बना यह है कि बेशक, शोध का एक बड़ा हिस्सा पूंजीवादी समाज के कई पहलुओं का आलोचक है लेकिन व्यावहारिक रूप से, इनमें से कोई भी न तो पूंजीवादी स्वयं पर प्रश्न उठाता है या गैर पूंजीवादी समाज के इर्दगिर्द मुद्दे उठाता है। E. O. Wright जैसे अग्रवती और प्रगतिशील विचारह भी अपनी व्यापक रूप से सराही गई पुस्तक Envisioning Real Utopias में इसी निष्कर्ष पर आते हैं।

गैर पूंजीवादी समाज पर सिद्धान्त और शोध की इस चुनौती का सामना करने के लिए नवीन अतिवादी प्रगतिशील समाजशास्त्र की शुरूआत करने के लिए अभी सही समय है। इसके अंतर्गत पूंजीवादी वैश्वीकरण, सामाजिक लोकतंत्र और परम्परागत/रूढ़िवादी मार्क्सवाद के मुख्य आधार निरन्तर बढ़ता विकास की हठधर्मिता को चुनौती देना सम्मिलित होगा। इस की चर्चा खुशनुमा वृद्धि के विचार के माध्यम से पहले से ही की जा रही है। निश्चित रूप से इसका अर्थ होगा कि अमीर कम अमीर होंगे और निर्धन भौतिक सम्पत्ति के मामलों में अधिक अमीर होंगे, यद्यपि सभी अभौतिक धन सम्पदा में लाभान्वित होंगे। उपभोक्तावाद की संस्कृति–विचार धारा से प्रतिस्थापित होगी। इस में सभी के लिए शालीन, संवहनीय जीवन स्तर के प्रति गंभीर प्रतिबद्धता मुख्य होगी।

पूंजीवादी वैश्वीकरण के अपरिहार्य भयावह परिणामों से हम सिर्फ बाजार की अनदेखी कर के बच सकते हैं। बेशक यह पूर्ण रूप से अविश्वसनीय प्रतीत होता है, लेकिन ऐसा तब ही होगा जब हम वैश्विक उपभोक्तावादी पूंजीवाद की दुखती रग को पहचानने से इंकार कर देंगे। यह उपभोक्ता संप्रभुता पर आधारित है और उपभोक्ताओं को जंक खाद्य और पेय, जंक संस्कृति, जंक आसक्ति का उपभोग करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है। पूंजीवादी विपणन विज्ञापन और वैचारिक कार्पोरे–राज्य प्रणालियों की शक्ति दुर्जेय है, परन्तु यदि अभिभावकों को इस बात के बारे में पूर्ण रूप से जागरूक कर दिया जाए कि बाजार कैसे उन्हें एवं उनके बच्चों का नुकसान करता है तो दुनिया और उसके निवासियों के अभी उम्मीद/आशा है। हालांकि पूंजीवाद एवं संस्तरित राज्य के अंत की और विकास में कमी की आवश्यकता की कल्पना करना चाहे कितना भी कठिन हो, हम इसे जितना अधिक समय छोड़ेंगे उतना ही इसे लाना अधिक मुश्किल हो जायेगा। ■

लेस्ली स्कलेयर से पत्र व्यवहार हेतु पता <l.sklair@lse.ac.uk>

[1] I have written about these matters in *The transnational Capitalist Class* (Oxford: Blackwell, 2001) and *Globalization: Capitalism and its Alternatives* (Oxford: Oxford University Press, 2002).

>लातिन अमरीका में नव–खनन सकेंद्रण पर बहस

मरिस्तेला स्वाम्पा, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ ला प्लाटा, अर्जेंटीना

अर्जेंटीना में खनन के विरोध में मापुचे प्रतिरोध

लैटिन अमेरिका के परे कार्यकर्त्ता और बुद्धिजीवी पूंजी संकेंद्रण की गत्यात्मकता एवं विकास के प्रारूपों पर सवाल उठा रहे हैं और साथ ही नव्य–खनन संकेंद्रण, अच्छे जीवन का अधिकार (buen vivir), सामूहिक वस्तुएं/सामुदायिक वस्तुएं एवं प्रकृति के अधिकारों जैसी श्रेणियों पर बहस कर रहे हैं। वे समकालीन विकास प्रारूपों की निरंतरता अथवा संपोषितता (ससटेनेबिलिटी) पर भी सवाल उठाते हैं। साथ ही ये आलोचक समाज, अर्थव्यवस्था एवं प्रकृति के अन्य संभावित संबंधों से जुड़े सुझावों को सामने लाते हैं। यह बहस विशेष रूप से इक्वाडोर एवं बोलिविया में अत्यंत गंभीर एवं तीव्र हुई है। इन देशों में 21वीं शताब्दी के प्रारम्भ में चुनी हुई लोकप्रिय सरकारों ने विकास के वैकल्पिक रास्तों को आगे बढ़ाना शुरू किया।

लेकिन यह बहस धीरे–धीरे जटिल हो रही हैं। सरकारें प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जैसे–जैसे विस्तृत करती जाती है, नव्य खनन संकेंद्रण की आलोचना रूप ग्रहण करती जाती है। 'नव्य–खननवाद' का अभिप्राय संकेंद्रण के उन स्वरूपों से है जो कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन पर आधारित है। नव्य–खननवाद सामाजिक–क्षेत्रीय आंदोलनों तथा देशज एवं कृषक संगठनों की राजनीतिक व्याकरण का एक महत्व पूर्ण शब्द है। प्राथमिक वस्तुओं (कमोडिटी) का बड़े पैमाने पर निर्यात इसकी एक महत्व पूर्ण विशेषता है। यह सामान्यतः विशाल निवेश (मेगा वेंचरस्) के माध्यम से होती है, परिणामस्वरूप भौगोलिक सीमाओं एवं पारिस्थितकीय व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव चुनौती के रूप में उभरते हैं। नव्य–खननवाद खुले में बड़े पैमाने पर प्राकृतिक स्त्रोतों के बाहर लाने की प्रक्रिया को व्यक्त करता है। इसमें खुले में खनन, हाइड्रो कार्बन का दोहन, विशाल हाइड्रो इलेक्ट्रिक बाँध (खनन हेतु), मछली पालन एवं विवन्यीकरण का प्रभाव तथा कृषि व्यवसाय (एग्री बिजनेस) (सोया, जैव ईंधन, ताड़ का तेल तथा अन्य वैज्ञानिक प्रकृति की फसलें) सम्मिलित हैं।

मैंने पूंजी संकेंद्रण के वर्तमान चरण को 'उपभोग–वस्तु एकमत्यता' (commodity consensus) की संज्ञा दी है (स्वाम्पा 2011–2013)। यह अवधारणा 1990 के दशक की अवधारणाओं के विपरीत है। लैटिन अमेरिकन अर्थव्यवस्थाएं वर्तमान दौर में अंतर्राष्ट्रीय उपभोक्ता वस्तुओं की कीमत के उछाल द्वारा समर्थित है। लैटिन अमेरिकन संस्कारों ने इस बदलाव में होने वाले लाभों को सार्वजनिक कर प्रतिक्रिया की है परंतु नवीन असमानताओं, पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक असंगतताओं, जो कि अंतर्राष्ट्रीय श्रम–विभाजन एवं भू–सीमाओं के कारण उत्पन्न हुई हैं, की उपेक्षा की है। अधिकांश राज्य विकास की उत्पादनमूलक दृष्टि को प्रस्तुत करते हैं और इसके नकारात्मक प्रभावों से जुड़ी हुई आलोचनाओं का नकार करते हैं और साथ ही सामाजिक विरोधों की उपेक्षा करते हैं।

>>

'उपभोग–वस्तु एकमत्यतता' किसी भी सम्बंधित क्षेत्र में प्राथमिक खनन क्रियाओं की बड़े पैमाने पर वापसी को दर्शाती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो चीन के जनवादी गणराज्य की भूमिकाओं के फलस्वरूप तीव्र हुयी है और इस प्रक्रिया में लैटिन अमेरिका के उपभोग की वस्तुओं से सम्बंधित उपभोक्ता मुख्य रूप से सम्मिलित हैं। 2013 में चिली एवं ब्राजील की वस्तुओं के निर्यात के लिए चीन मुख्य केन्द्र था। अर्जेन्टीना के लिए यह दूसरा सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र निर्यात की दृष्टि से माना गया। पेरू, कोलंबिया एवं क्यूबा के लिए भी यह दूसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र था जबकि मैक्सिको, उरूग्वे एवं वेनेजुएला के लिए यह तीसरा महत्व पूर्ण क्षेत्र था (स्लीपाक, 2014)।

> उपभोग वस्तु एकमत्यतता के चरण

उपभोग वस्तु एकमत्यतता अनेक चरणों से गुजरी है। 1990 के दशक में नव्य–उदारवादी वैश्वीकरण एवं 'वांशिंगटन कन्सेन्सस' से इसका प्रारम्भ होता है। इन प्रक्रियाओं ने लैटिन अमेरिकन समाजों एवं संबंधित अर्थव्यवस्थाओं में प्रभावी रूपांतरण उत्पन्न किये। राज्यों ने बहुराष्ट्रीय उद्यमों का पक्ष लेना प्रारम्भ किया और ऐसे नवीन कानून बने जिन्होंने खनन क्रियाओं जैसे बड़े पैमाने पर खानों के द्वारा खनन, तेल का दोहन एवं परा–उत्पत्तिमूलक फसलों को उगाने की प्रणालियों को प्रोत्साहित किया।

1990 के दशक के अंत में नव्य–उदारवाद के विरोध में सामाजिक आंदोलन तीव्र हुए। बोलिविया, इक्वाडोर, अर्जेन्टीना एवं अन्य देशों में इन आंदोलनों का उभार हुआ। लेकिन इन प्रक्रियाओं से उत्पन्न हुई प्रगतिशील सरकारों को अनेक परिसीमाओं एवं संघर्षों का सामना करना पड़ा। 2003 में जब प्राथमिक वस्तुओं की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में उछाल आया, उपभोग–वस्तु एकमत्यतता तीव्र होने लगी। इसमें बड़े स्तर पर लाभ एवं तुलनात्मक बढ़त जैसे पक्ष सम्मिलित हो गये। यह पहला चरण संघर्षों के दमन को व्यक्त करता है। इसमें खनन की गति–विधियाँ सम्मिलित हो जाती हैं। साथ ही अधिकांश राज्यों द्वारा निजी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ नवीन परंतु घनिष्ठ सम्बंधों के विकास भी सम्मिलित होते हैं। राष्ट्रवादी चेतना के बावजूद, जो कि इस दशक में विकसित हुई खनन परियोजनाओं में वृद्धि होती जाती है और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में विशाल बहु–राष्ट्रीय निगमों के स्थान महत्वपूर्ण होते जाते हैं।

सन् 2009–10 'उपभोग वस्तु एकमत्यतता' के दूसरे चरण की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस चरण में खनन परियोजनाओं का और विस्तार होता है। उदाहरण के लिए, ब्राजील में वृद्धि की तीव्रता के कार्यक्रम एमाजोन में बहुस्तरीय बाँधों के निर्माण से प्रारम्भ होते हैं। बोलिविया में औद्योगिक विकास की प्रक्रिया तेजी पकड़ती हैं क्योंकि बहुस्तरीय खनन परियोजनाएं (गैस, लीथियम, लौह, कृषि विपणन) मूर्त रूप लेती हैं। इक्वाडोर में बड़े पैमाने पर खनन के कार्यक्रम गति पकड़ते हैं। वेनेजुएला में एक रणनीतिक योजना के अंतर्गत ओरिनोको क्षेत्र में तेल की खोज के कार्यक्रमों का विस्तार होता है। अर्जेन्टीना में 2010–2020 से सम्बंधित कृषि विपणन की रणनीतिक योजना इस प्रकार की है कि सोया के उत्पादन में 7% की वृद्धि हो। इसके साथ ही बड़े पैमाने पर खानों से सम्बंधित खनन कार्यक्रमों की भी शुरूआत हुई है।

बड़े पैमाने पर खानों से हुआ खनन सामाजिक पर्यावरणीय तनावों को जन्म देता है। लैटिन अमेरिका में खनन संघर्षों से जुड़े हुए निगरानी समूह के अनुसार सन् 2010 में लैटिन अमेरिका में 120 संघर्ष हुए, जिसने 150 समुदायों को प्रभावित किया। सन् 2012 में हुए 161 संघर्षों ने उन 173 परियोजनाओं को प्रभावित किया जो कि 212 समुदायों के जीवन पर असर डालती थी। जबकि सन् 2014 में इन संघर्षों की संख्या बढ़कर 198 हो गयी जो कि 207 परियोजनाओं से जुड़े हैं और जिन्होंने 296 समुदायों को प्रभावित किया है। अप्रेल 2015 तक 208 संघर्ष हो चुके हैं, जिनके तथ्य उपलब्ध हैं। इन संघर्षों से जुड़ी 218 परियोजनाओं ने 312 समुदायों को प्रभावित किया है। मैक्सिको में सर्वाधिक 36 संघर्ष हुए, तत्पश्चात् पेरू में 35 संघर्ष, चिली में 34, अर्जेन्टीना में 26, ब्राजील में 20, कोलंबिया में 13, बोलिविया में 9 एवं इक्वाडोर में 7 संघर्ष प्रकाश में आए (http://www.conflictosmineros.net/) ।

वर्तमान चरण में कुछ सामाजिक पर्यावरणीय एवं भू–सीमाओं से जुड़े संघर्षों ने स्थानीय राजनीति से परे जाकर राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान खींचा है। इसमें बोलिविया में इसीबोरों सिक्योर नेशनल पार्क एवं देशज भौगोलिक सीमा (TIPNIS) के संरक्षण के प्रयास सम्मिलित हैं। इसके अंतर्गत स्थानीय जनसंख्या ने हाइवे (राज–मार्ग) के निर्माण का विरोध किया। इस जनसंख्या ने बेलोमोंटे में विशाल बाँध परियोजना के काम में रूकावट डाली। यह सब ब्राजील में हुआ। अर्जेन्टीना में बड़े पैमाने पर खानों से खनन की परियोजनाओं के अनेक प्रांतों में विराध हुए। 2013 में इक्वाडोर में इनताग क्षेत्र में सैन्यीकरण तथा यासुनी–आई टी टी परियोजनाओं को अंततः स्थगित करना पड़ा। यह वह क्षेत्र है जहाँ बड़े पैमानों पर खानों से खनन के प्रयासों का प्रतिरोध किया जा रहा है। यह तनाव सभी देशों में है फिर वे चाहे नव्य उदारवादी अथवा पुरातनपंथी सरकारों से ही संचालित क्यों न होते हों? सन् 2011–13 के मध्य कोंगा में खनन परियोजनाओं का प्रतिरोध जो कि पेरू देश से सम्बंधित है। 25 लोगों की जान ले चुका है। वहीं मैक्सिकों में व्यापक खनन कार्यक्रम एवं बांध निर्माण की परियोजनाओं का विरोध दमन की वृद्धि एवं हिंसा के बावजूद जारी है।

अधिकांश सरकारें खनन गतिविधियों का समर्थन करती हैं तथा इनके विरूद्ध होने वाले आंदोलनों को अपराधिक मानते हुए उनका दमन करती हैं। साथ ही स्थानीय एवं देशज जनसंख्या की राजनीतिक सहभागिता को सीमित करती हैं।

प्राकृतिक संसाधनों, वस्तुओं एवं भौगोलिक सीमाओं के दोहन से हुआ पूंजी विस्तार सामूहिकता एवं पर्यावरण से जुड़े हुए अधिकारों पर गंभीर प्रभाव डालता है और इन अधिकारों को प्रतिबंधित करता है। बोलिविया एवं इक्वाडोर जैसे देशों में मुक्ति हेतु उत्पन्न हुई आशाओं को पूरी तरह से कुचल दिया गया। विमर्श एवं व्यवहार के बीच में दूरी निरन्तर बढ़ती जा रही है। खनन गतिविधियों के विरूद्ध आंदोलनों को अपराधीकरण की प्रक्रिया से जोड़ दिया गया है। लोकतांत्रिक प्रणालियों को कुचला जा रहा है और साथ ही प्रगतिशील एवं लोकप्रिय सरकारों के स्थान पर ऐसे परंपरागत शासन स्थान ले रहे हैं जो कि परंपरागत/क्लासिकल लोकप्रियतावाद एवं राष्ट्रीय विकास प्रारूपों पर आधारित प्रभुत्व से संचालित है। ■

मरिस्तेला स्वाम्पा से पत्र व्यवहार हेतु पता
<maristellasvampa@yahoo.com>

References

Slipak, A. (2014) "Un análisis del ascenso de China y sus vínculos con América Latina a la luz de la Teoría de la Dependencia." *Realidad Económica* 282: 99-124.

Svampa, M. (2011) "Modelo de Desarrollo y cuestión ambiental en América Latina: categorías y escenarios en disputa," in F. Wanderley (ed.), *El desarrollo en cuestión. Reflexiones desde América Latina*, CIDES, OXFAM y Plural, La Paz.

------- (2013) "Consenso de los 'Commodities' y lenguajes de valoración en América Latina" in *Nueva Sociedad*, 244.

> इक्वाडोर में

संकर्षणवाद बनाम् Buen Vivir

विलियम सचेर एवं **मिशेल बेज**, FLACSO (लेटिन अमेरिकन इंस्टीट्यूट फॉर द सोशल साइंसेज), इक्वाडोर

टुंडायेम, जमोरा–चिनचिपे, इक्वाडोर में भविष्य की मीरोडोट खुली तांबा खान के केम्प का निर्माण करते हुए। ओमार ओरडोनेज द्वारा चित्र

सन् 2007 में राष्ट्रपति राफेल कोरिया ने व्यापक क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर अपनी अग्रणी राजनीतिक परियोजना 'नागरिक क्रांति' को प्रारम्भ किया। 2008 में संविधान सभा ने एक नये संविधान को पारित किया जिसने प्रकृति संबंधी अधिकारों को बढावा दिया और 2009 में, सरकार की प्रथम विकास योजना (अच्छे जीवन के लिए एक राष्ट्रीय योजना) ने प्रभावी विकास प्रारूप को उलट दिया, यह मानते हुए कि 'दक्षिण के देशों के लिए विध्वंसकारी खनन मार्ग की निरंतरता को स्वीकारना असंभव है। इसके अतिरिक्त, अग्रणी होकर यूसनी (Yasuni) आई टी टी ने पहल की कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से दान (डोनेशन) के बदले में इक्वेडोर अमेजन में तेल खनन के निलंबन के लिए आहवान करते हुए उत्तर–खनन इक्वेडोर की ओर एक क्रांतिकारी बदलाव का वादा किया। तथाकथित नागरिक क्रांति नामक राजनीतिक परियोजना के क्रियान्वयन के सात साल बाद खनन एवं तेल उद्योग पर कोरिया की नीतियों का क्या प्रभाव पड़ा? इन प्रारम्भिक प्रस्तावों में जो कुछ शेष रह गया था आशा करते हैं कि वे इसमें सम्मिलित हैं।

> खनन क्षेत्र का विस्तार

पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रपति कोरिया ने लगातार खनन सीमाओं के विस्तार का समर्थन किया। तेल क्षेत्र में, नई रियायतों ने बोली लगाने के अंतिम दो चक्रों के दौरान ड्रिलिंग के लिए अमेजन के 3 लाख हैक्टेयर से अधिक क्षेत्र को खोल दिया। 2013 में, इक्वेडोर ने आई टी टी की पहल को त्याग दिया, यासूनी राष्ट्रीय उद्यान के वे हिस्से–जो अनेक देशज समूहों के घर थे, इन लोगों में स्वैच्छिक

>>

अलगाव था, निकासी के लिए खुले थे। इसी तरह 2009 से, सरकार ने अनेक खनन मेगा परियोजनाओं का समर्थन किया, उनमें से अनेक परियोजनाओं का प्रारम्भ नव–उदारवादी युग के दौरान इक्वेडोर को एक खनन देश में बदलने हेतु किया गया। आज, एक दर्जन तांबे एवं सोने की खनन परियोजनाएं जारी हैं जो कि देशज क्षेत्रों सहित उच्च संवेदनशील क्षेत्रों में तथा उच्च जैवकीय विविधता के क्षेत्रों एवं जल संभरण वाले क्षेत्रों में स्थित हैं।

इन खनन परियोजनाओं में से सबसे महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का स्वामित्व है; चिली के सरकारी स्वामित्व वाली कोडेलको कंपनी–जो इंटेग क्षेत्र में लरीमेगुआ परियोजना की मालिक है, कनाडा की छोटी खनन कंपनियाँ जैसे लनडिन खनन, कार्रनर स्टोन एवं डायनेस्टी मेट्लस के माध्यम से कनाडा में एक 'वैधानिक बंदरगाह' से अपने इक्वेडोर परिसंपत्तियों का विस्तार करने हेतु प्रयासरत है। साथ ही चीन के सरकारी स्वामित्व वाली टांगलिंग एवं चीनी रेलवे का विस्तार हेतु प्रयासरत है। सरकारी स्वामित्व वाली खनन कंपनी, ENAMI (नेशनल माइनिंग कंपनी/ राष्ट्रीय खनन कंपनी), के निर्माण के बावजूद इक्वेडोर का अपने भावी खनन उत्पादन पर कोई नियंत्रण नहीं है।

तेल क्षेत्र में, नई सरकार ने संविदाओं पर फिर से बातचीत करके तथा राज्य कंपनियों की सहभागिता में वृद्धि करके तेल से होने वाले राज्य के राजस्व में सफलतापूर्वक वृद्धि कर दी। तथापि, नये ड्रिलिंग क्षेत्र अधिकांशतः विदेशी कंपनियों के लिए निश्चित/निर्धारित है। इसके अतिरिक्त यह भी उल्लेखनीय है कि पिछले 5 सालों से अधिक समय से चीनी बैंकों से इक्वेडोर ने 10 अरब डॉलर से अधिक ऋण (Loan) प्राप्त किया। जिससे इक्वेडोर के तेल उत्पादन में एक स्थायी मोड़ आया, परिणामस्वरूप चीनी कंपनियों को तेल के पीपों के रूप में इस ऋण को चुकाया गया। इसलिए आज, इक्वेडोर के तेल उत्पादन का 90: इस ऋण को चुकाने में खर्च होता है।

> बेदखली द्वारा संग्रहण

तेल और खनन क्षेत्रों में, कंपनियां एवं राज्य की संस्थाएं लोगों को अपनी भूमियों से बेदखल करने के लिए नागरिक क्रांति द्वारा निर्मित वैधानिक ढाँचे का प्रयोग करती है तथा वृहद् पैमाने पर खनन गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक भौतिक स्थितियों की स्थापना के लिए मध्यमस्तरीय खनन कंपनियों से मशीनरी को दूर करती है।

इन प्रक्रियाओं ने–डेविड हार्वे के 'बेदखली द्वारा संग्रहण' का स्पष्ट उदाहरण है–अनगिनत खनन विराधी आंदोलनों को पुनः उत्पन्न किया जो भावी पर्यावरणीय एवं सामाजिक आपदाओं के प्रति डर उत्पन्न करता है जैसे कि इक्वेडोर अमेजर में पिछले 40 वर्षों से अधिक समय तक तेल के दोहन के कारण उत्पन्न हुआ। इन सामाजिक आंदोलनों में कृषक तथा अमेजन के देशज समुदाय सम्मिलित हैं जैसे सारायाकू एवं कारडीलेरा डेल कोडोर के शुअर एवं मेसटीजो लोग, इंटेग तथा उमस भरे जंगलों में रहने वाली जनसंख्या, परामों क्षेत्रों के लोग तथा नगरीय संगठनों जैसे यसुनिडोस, जिन्होंने यसुनी राष्ट्रीय उद्यान के दोहन के निर्णय पर एक प्रसिद्ध जनमत संग्रह की मांग की–एक जनमत संग्रह जिसे राष्ट्रीय निर्वाचन परिषद की स्वीकृति प्राप्त नहीं थी।

> सीमांतीकरण, दमन एवं सामाजिक विरोध का अपराधीकरण

सरकार ने खनन नीतियों की आलोचना करने वाले इन आंदोलनों को खारिज/स्थगित कर दिया। सरकारी प्रेस विज्ञप्ति तथा राष्ट्रपति कोरिया के शनिवार के प्रसारण दोनों में राज्य, निर्देशित मीडिया ने उन खनन विरोधी प्रारूप को 'बचकाना' बताते हुए कहा कि खनन 'विकास' और 'प्रगति' का एकमात्र रास्ता है।

दंड कानून का प्रयोग खनन विरोधी प्रतिरोधकारियों को कैद करने के लिए किया जाता है (विशेष रूप से 'आतंकवाद' और 'तोड़–फोड़' जैसी श्रेणियों के विरूद्ध)। अन्य वैधानिक उपकरणों (जैसे कोड 16) का प्रयोग पाचामामा जैसे गैर–सरकारी संगठनों को बंद करने के लिए किया गया है जो कि तेल कंपनियों के विरूद्ध अमेजन के लोगों की उनके संघर्ष में सहायता के लिए जाना जाता है।

अंत में, खनन और तेल–निष्कर्षण क्षेत्रों में पुलिस और सेना की बढ़ती उपस्थिति से स्थानीय आबादी में आतंक फैला हुआ है और परिणामस्वरूप अनेक मौते भी हुयी हैं। इस धमकी ने महत्व पूर्ण कार्यकर्त्ताओं और मोटे तौर पर नागरिक समाज को खामोश कर दिया है जिसके कारण खनन मॉडल की प्रासंगिकता पर सार्वजनिक चर्चा का प्रतिपादन असंभव हो गया है।

एक अन्य कार्य (शेचर, 2010) में हमने राज्यों का आहवान किया है कि 'खनन राज्यों' या 'पेट्रो राज्यों' के रूप में मेगा खनन या तेल निष्कर्षण में पूंजी संग्रहण के कार्य में अपने उपकरणों को लगा दे। नागरिक क्रांति राजनीतिक परियोजना के क्रियान्वयन के साथ, इक्वेडोर की सरकार अब इन गतिविधियों को विकसित करने के लिए आवश्यक भौतिक और सामाजिक स्थितियों को तैयार करती है। पिछले कुछ वर्षों से राफेल कोरिया ने इक्वेडोर के पूर्व नव उदारवादी राज्य को एक खनिज और एक पैट्रो राज्य में रूपांतरित कर दिया–जो कि मुश्किल से ही कई देशों की सीमाओं में है।

> 'अच्छे जीवन' के लिए क्या शेष है?

कोरिया और उसकी सरकार की खनन नीतियां अपनी अधिकारिक वाक्पटुता के कारण कठिनाई में है। अधिकारिक बयान 'विकास' प्रारूप और आर्थिक वृद्धि, मनुष्य और प्रकृति के दोहन की भर्त्सना करते हैं, खनन कार्य की समाप्ति की मांग करते हैं। फिर भी सरकार के मौजूदा तरीके 2008 के संविधान की आत्मा को मूर्त रूप देने में असफल रहते हैं। सरकार तर्क देती है कि खनन एवं तेल कंपनियां प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जिम्मेदारी से करेंगी तथा अपने कल/भविष्य को सफल बनाने के लिए आज खनन कार्य एक आवश्यक कदम है। परंतु जैसा कि इक्वेडोर के दार्शनिक डेविड कोरटेज ने कहा है कि कोरिया द्वारा प्रस्तुत अवधारणा 'अच्छा जीवन' (buen vivir) ने एक नवीन विकासात्मक पैराडिम को उपलब्ध नहीं करवाया, परंतु आक्रामक खनन और यहाँ तक कि बिजली की एक नयी रणनीति की नीतियों को वैधता देने का एक उपकरण प्रदान किया है। ■

विलियम सचेर से पत्र व्यवहार हेतु पता <william.sacher@mail.mcgill.ca>
एवं मिशेल बेज से पत्र व्यवहार हेतु पता <baemic@gmail.com>

References

Sacher, W. "The Canadian mineable pattern: institutionalized plundering and impunity." *Acta Sociológica* 54, January-April 2010, pp. 49-67.

> मेक्सिको में

जन सामान्य के लिए संघर्ष

मीना लोरेना नवारो, बेनेमेरिटा यूनिवर्सिडाड ऑटोनोमा डि प्यूएब्ला, मेक्सिको

सनतियागो नदी, मेक्सिको में मरी हुई मछलियाँ

पिछले 15 वर्षों में मैक्सिकों में पर्यावरणीय संघर्ष तेज उभार पर है, ये संघर्ष मेरिसटेला स्वाम्पा (2013) के 'उपभोग वस्तु एकमत्यतता' की अवधारणा से जुड़े हैं। यह अवधारणा सामान्य/सामुदायिक प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, नियंत्रण एवं प्रबंधन से सम्बद्ध संघर्षों से जुड़ी है। इन संघर्षों के केन्द्र में उन वस्तुओं का दोहन है जो कि सामाजिक धन को क्रय–विक्रय का भाग बनाती है और पूंजी के संकेंद्रण की प्रक्रिया में इन तीनों पक्षों को सम्मिलित कर देती है अर्थात् इन तीनों पक्षों से जुड़ी हुयी पूंजी का संकेंद्रण और उसके लिए सामाजिक धन को क्रय–विक्रय की वस्तु बना देना वह प्रयास है जो कि दोहन के प्रकारों द्वारा संभव है (नवारो 2015)। ये प्रयास निम्नलिखित 3 प्रक्रियाओं को सम्मिलित करते हैं :

1. नवीन कृषि–औद्योगिक परा–राष्ट्रीय खाद्यान्न क्षेत्र का विकास जो कि लघु स्तर के ग्रामीण उत्पादकों को पृथक करता है और कृषक समुदाय की उपेक्षा करता है।
2. दोहन के नवीन पक्षों के साथ संबंधित मार्ग, बंदरगाह, हवाई–अड्डे, रेल मार्ग एवं पर्यटन से जुड़ी विशाल परियोजनाओं का विस्तार
3. बड़ी आधारभूतीय संरचना से संबंधित परियोजनाओं एवं नगरीय विस्तार जो कि सामाजिक ताने बाने के बिखराव को परिणाम के

>>

रूप में सामने लाता है और साथ ही सिंचाई, क्षेत्र एवं संरक्षित क्षेत्र को चुनौती देता है।

ये परिवर्तन राष्ट्रीय एवं परा–राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार की पूंजी के माध्यम से उभार लेते हैं। इस पूंजी का सरकारों के विभिन्न स्तरों एवं संगठित अपराध में गठजोड़ है। विधि शास्त्रीय रणनीति कारपोरेशन्स को सम्मिलित कर लेती है साथ ही विभिन्न समुदायों को अनुशासित एवं विभाजित कर देती है। ये पक्ष शोषण एवं बाजारवाद के नये क्षेत्र हैं।

परिणामस्वरूप जन सामान्य के संरक्षण हेतु किये जाने वाले संघर्षों में सहभागियों को हिरासत में लेना एवं उनके प्रति हिंसा की घटनाओं में चिंताजनक रूप से वृद्धि हुई है। पर्यावरणीय कानून के मैक्सिकों केन्द्र (द मैक्सिकन सेंटन ऑफ एनवायरमेंटल लॉ–CMDA) के अनुसार 2005 से 2013 के मध्य 44 पर्यावरणीय विशेषज्ञों की हत्या हुई है। इस अवधि में अपराधीकरण के 16 प्रकरण, बलों के अवैधानिक प्रयोग के 14 प्रकरण, अवैध हिरासत के 64 प्रकरण भी प्रकाश में आए हैं। इस दमन के बावजूद समूचे मैक्सिकों में प्रतिरोध आंदोलन जारी है जिसे मुख्य रूप से देशज एवं कृषक समुदायों के द्वारा संचालित किया जा रहा है। और हाल ही में इसमें नगरों के स्वायत्तशासी समूह भी सम्मिलित हुए हैं। ग्रामीण समुदायों ने रणनीतिक आक्रामकता को अपनाते हुए हाइड्रो इलेक्ट्रिक बाँधों के निर्माण का बहिष्कार किया है, क्योंकि यह निर्माण उनको विस्थापित करता है और उनकी जीवन यापन की आवश्यकताओं की प्रणाली के सम्मुख खतरा उत्पन्न करता है। ग्यूरेरो में काउंसिल ऑफ एजीडोज एंड कम्यूनिटीज (CECOP) ने इस क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की है। यह संगठन पिछले 12 वर्षों से पेरोटा बाँध के निर्माण में अवरोध के कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित कर रहा है।

ठीक इसी समय पिछले 15 वर्षों के अंदर मैक्सिकों सरकार ने खुली हवा में खनन कार्य को बढ़ावा देने एवं शेल गैस के दोहन के कार्यक्रमों हेतु 24,000 रियायतें दी हैं। जेनेटिकली मोडीफाइड आग्रेनिज्म (आनुवंशिक बीजों से संचालित) का विस्तार एक ऐसा अन्य क्षेत्र है जहाँ कृषक एवं देशज समुदाय के प्रतिरोध का निरंतर सामना करना पड़ रहा है। इन आंदोलनों की प्रतिबद्धता एवं व्यापकता के कारण हाल में एक ऐसे प्रयास को रोक दिया गया जिसके अंतर्गत निगमों को जेनेटिकली मोडीफाइड मक्का उत्पादित करने की अनुमति दी गई थी। सड़क मार्ग, रेल मार्ग, बंदरगाह एवं हवाई–अड्डे से जुड़ी आधारभूतीय योजनाएं संघर्ष के केन्द्र में हैं क्योंकि इससे कच्चा माल के आवागमन की कीमत में कमी आती है। एटिनको में पीपुल्स फ्रंट इन डिफेंस ऑफ द लैंड जोकि एस्ताडो डी मैक्सिको से सम्बद्ध है, ने एक बार फिर 2001 में मैक्सिको नगर में निर्माणाधीन नये अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे का विरोध किया था। पर्यटन से जुड़ी बड़ी परियोजनाएं किसानों एवं मछली पालकों के समुदायों के लिए खतरे उत्पन्न करती है और साथ ही समृद्ध जैव विविधता के क्षेत्र भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। काबो प्यूलमो समुदाय का संघर्ष इस संदर्भ में प्रतीकात्मक रूप से महत्व पूर्ण बना है क्योंकि इसने विश्व के एक अत्यंत महत्वपूर्ण मूंगा भित्ती क्षेत्र में शुरू होने वाली विनाशकारी वृहद् परियोजनाओं को रोक दिया था।

मैक्सिकों नगर एवं प्यूबला जैसे नगरों में ऐसे अनेक आंदोलन जारी हैं जो कि आधारभूतीय सुविधा की परियोजनाओं के विरूद्ध हैं। इन परियोजनाओं के कारण संरक्षित भूमि एवं कृषि हेतु उपयोगी भूमि के सम्मुख खतरे उत्पन्न हुए हैं। ऐसे अनेक पड़ोस हैं जिनसे संबंधित इलाके खुली हवा में मिट्टी भरे जाने एवं जहरीली बेकार वस्तुओं को फेंके जाने के कारण प्रदूषण का शिकार हुए हैं। इस प्रदूषण ने नदियों एवं जल मार्गों को भी प्रदूषित किया है। खुली हवा में खनन के कारण जहरीली वस्तुओं का विशाल क्षेत्र में जमाव हुआ है। उदाहरणा के लिए, उत्तर मैक्सिको में सोनोरा नदी में कॉपर सल्फेट की 40 मिलियन लीटर की मात्र बढ़ा दी गयी जिसने 23,000 निवासियों को प्रभावित किया। ये निवासी अब एक संयुक्त मोर्चा बनाकर ग्रुपों मैक्सिकों के विरूद्ध आंदोलनरत है। इसके अतिरिक्त विस्फोटकों का प्रयोग एवं PEMEX, जोकि राज्य के द्वारा संचालित पेट्रोलियम कंपनी है, के द्वारा दोहर ऐसी प्रघटनाएं हैं जो प्रदूषण को विस्तार देती हैं।

यह सच है कि अनेक समुदाय अपने भू–भाग को संरक्षण दे पाने में सफल नहीं हो पाते परंतु कुछ क्षेत्रों में वे विशाल परियोजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब की स्थितियाँ उत्पन्न कर देते हैं। यह स्थिति अप्रत्याशित सामूहिक स्व संगठन रचना तथा सरकार के परम्परागत स्वरूपों के निर्माण के कारण अस्तित्व में आती है। उदाहरण के लिए मिचोकियन में देशज समुदायों ने अपने वन्य क्षेत्रों के विनाश को रोकने का प्रबन्धन किया तथा अपने समुदायों की पेड़ काटने वाले लोगों एवं संगठित अपराधियों से रक्षा की। निःसंदेह ये संघर्ष शिक्षाप्रद है और पूंजीवादी विकास के खतरों के प्रति चेतनशील होते हैं। साथ ही मनुष्य एवं गैर–मनुष्य के जीवन के पुनरूत्पादन के विकल्पों की संभावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। जन सामान्य हेतु संघर्षों ने राजनीतिक ऊचाईयाँ भी प्राप्त की हैं जिसके दो उद्देश्य हैं। पहला राजनीति को पुनर्विनियोजित करना ताकि अपने समुदायों को पुनः आकार दिया जा सके तथा दूसरा क्षमताओं एवं स्थितियों को पुनः विनियोजित करना जो कि एक स्वायत्तशासी प्रतीकात्मक एवं भौतिक पुनः उत्पादन के जीवन से सम्बद्ध हो। जन सामान्य की वस्तुओं/सामुदायिक वस्तुओं की पुनः उत्पत्ति एवं संरक्षण मानव अस्तित्व का आधर है पर क्या समुदायों को यह अनुमति दी जायेगी कि वे इन वस्तुओं की नियमित प्राप्ति करें और इनका उपयोग करें। ये वे सवाल हैं जो मानव सभ्यता के समकालीन संकट में सामुदायिक वस्तुओं को एक केन्द्रीय सवाल बना देते हैं। ■

मीना लोरेना नवारो से पत्र व्यवहार हेतु पता <mina.navarro.t@gmail.com>

References

Navarro, M. L. (2015) *Luchas por lo común. Antagonismo social contra el despojo capitalista de los bienes naturales en México*. Mexico: ICSyH BUAP/ bajo tierra ediciones.

Svampa, M. (2013) "Consenso de los 'Commodities' y lenguajes de valoración en América Latina" in *Nueva Sociedad*, 244.

>अर्जेंटीना का नव खननवाद

मरियन सोला अल्वारेज, यूनिवर्सिडाड नेशनल डी जनरल सार्मिएंटो, अर्जेन्टीना

मेन्डोजा, अर्जेन्टीना में खनन के विरूद्ध प्रदर्शन

अर्जेन्टीना खनन गतिविधियों के विस्तार का एक प्रतीकात्मक उदाहरण है, जैसे–कृषि व्यवसाय (एग्री बिजनेस), मेगा खनन एवं हाल ही में विभंजन (फ्रेकिंग/Fracking) के माध्यम से गैर–परंपरागत हाइड्रोजन का दोहन–जिसने बहुआयामी संघर्षों एवं खनन विरोधी आंदोलन को उत्पन्न किया।

जैसे ही अर्जेन्टीना में कृषि व्यवसाय उभारा और उसने एक कृषि मॉडल के रूप में मजबूती प्राप्त की, वैसे ही अर्जेन्टीना ने ट्रांसजेनिक (परा उत्पत्ति मूलक) सोया के विश्व के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक उत्पादक के रूप में वैश्विक बाजार में अपना स्थान बना लिया। अन्य कारकों के अलावा, प्राथमिक उत्पादों की तेजी से बढ़ती कीमतों ने सोया की खेती के लिए बड़े पैमाने पर निर्धारित भूमि में व्यापक वृद्धि की, जो कि 1996 में 370,000 हैक्टेयर भूमि थी वह 2014–15 में 20.5 मिलियन हैक्टेयर से अधिक हो गयी। यद्यपि सोया और मक्का का बड़े पैमाने पर उत्पादन, जो कि ज्यादातर निर्यात के लिए निर्धारित है, ने विदेशी हाथों में भूमि के संकेंद्रण को तीव्रता दी। हालांकि खेती को राष्ट्रीय कृषि परंपराओं में निहित व्यवसाय के रूप में स्वीकारा जाता है–एक ऐसी मान्यता है जो कृषि व्यवसाय मॉडल से संबंधित लाभ और हानि पर बहस को सीमित करती है।

हालांकि, सोया मॉडल के प्रत्युत्तर में अनेक प्रकार के प्रतिरोध उत्पन्न हुए। नागरिक एवं पड़ोस समूहों ने 'धुआं देना बन्द करो' (Stop fumigating) के नारे के तहत आबादी वाले क्षेत्रों में फ्यूमीगेटिंग के प्रभावों की निंदा की, अनेक समूहों ने सोया की एकल खेती के विरूद्ध विरोध का आयोजन किया, स्वदेशी भूमियों एवं स्थानीय जैव–विविधता पर इसके प्रभाव की आलोचना की तथा कृषक एवं स्वदेशी समुदायों ने राष्ट्रीय वन कानून के प्रवर्तन की माँग द्वारा विस्थापन को रोकने की कोशिश की।

1990 के दशक में खनन कार्य तेजी से प्रासंगिक हो गया। 2000 के दशक तक अर्जेन्टीना में कोयले की खदानों में तेजी से वृद्धि हुयी। सोया के बाद धातुओं, विशेष रूप से सोना एवं ताँबा, की दृष्टि से अर्जेन्टीना निर्यात क्षेत्र में दूसरा तेजी से बढ़ता हुआ देश बना है। राष्ट्रीय खनन मंत्रालय के अनुसार खनन निर्यात 434% बढ़ा है जबकि परियोजनाओं की संख्या में 3.3% की वृद्धि हुयी है। स्थानीय अधिकारियों ने संरक्षित ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ कस्बकों और शहरों में बहु खनन रियायतें देने की पेशकश की।

स्पष्ट है, 2007 के बाद से केवल कुछ मामूली बदलावों के साथ अर्जेन्टीना की नव्य उदारवादी नीतियों ने व्यापक पैमाने पर खनिज निष्कासन को प्रोत्साहित किया। देश के वैधानिक ढाँचे ने 'कानून सुरक्षा' एवं उच्च लाभों की गारंटी के द्वारा नव्य–खनन मॉडल के विस्तार में योगदान किया। अर्जेन्टीना राज्य का संघीय संगठन तथा देश के 1994 के संवैधानिक सुधारों ने मैगा परियोजना की स्थापना में उप–राष्ट्रीय सीमाओं को केन्द्रीय भूमिका प्रदान की है। परिणामस्वरूप मैगा खनन उप–राष्ट्रीय सरकारों द्वारा निभायी गयी भूमिका, एक दिये गये क्षेत्र के विकास के लिए या उसके विरूद्ध स्थानीय आर्थिक कर्त्ताओं की उपस्थिति तथा स्थानीय राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिशीलता के अनुसार बदलता रहता है।

नवीन खनन परियोजनाओं के विरूद्ध संगठित प्रतिरोध तथा उनके प्रभाव अर्जेन्टीना में व्यापक रूप से फैले हैं। खनन परियोजनाओं के साथ क्षेत्रों में विभिन्न आंदोलन उभर कर आये, जिन्हें अधिकांशतः स्वतः गठित विधानसभाओं ने नेतृत्व प्रदान

>>

किया। हालांकि, इन समूहों के पास खनन के जन प्रतिरोध को अभिव्यक्त करने के लिए सामाजिक और पर्यावरणीय विरोध के अपराधीकरण तथा प्रांतीय सरकारी सेंसर के रूप में सीमित अवसर हैं। इसके अतिरिक्त, इन समूहों को सार्वजनिक जानकारी प्राप्त करने तथा राज्य पर्यावरण संस्थाओं का मार्ग–निर्देशन करने में कठिनाई हुई।

नव्य–उदारवादी नीतियों ने न केवल सोया उत्पादन एवं नवीन मैगा खनन परियोजनाओं का विस्तार करने में मदद की अपितु उन्होंने द्रवचालित दरार/विभंजन (हाइड्रालिक फ्रेक्चरिंग) के माध्यम से गैर–परंपरागत हाइड्रोकार्बन खनन के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया, जो गंभीर सामाजिक और पर्यावरणीय खतरों के साथ ही एक जटिल और विवादास्पद गतिविधि है। यद्यपि इस प्रायोगिक तकनीक का प्रयोग वृहद् बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा किया गया, सरकार ने अपनी राष्ट्रीय फर्म YPF के माध्यम से अपरंपरागत हाइड्रोकार्बन एवं ऊर्जा संप्रभुता को उन्नत किया–एक प्रयास जो प्रभावी है, कम से कम प्रतीकात्मक संदर्भ में, राष्ट्रीय फर्म ऊर्जा के क्षेत्र में आत्म–निर्भरता को पुनः प्राप्त करने का वादा करते हैं।

2013 में YPF, शेवरॉन तथा न्वेक्वेन प्रांत के बीच एक समझौते ने अर्जेन्टीना में बड़े पैमाने पर फ्रेकिंग (विभंजन) की शुरूआत की। तब से, वाका म्यूरटा (Vaca Mureta) में शेल भंडार की खोज के साथ फ्रेकिंग विरोधियों के दोषारोपण तथा दुर्घटनाओं पर चुप्पी, ने असंतुष्ट आवाज के लिए उपलब्ध स्पेस को सीमित/कम कर दिया। फिर भी, प्रांतों में प्रतिरोध बढ़ा है, विशेष रूप से पेंटागोनिया में, जहाँ विधानसभाएं, बहु–क्षेत्रीय संगठन तथा स्वेदशी समुदाय पानी एवं क्षेत्रों (सीमाओं) के संघर्ष में संलग्न हैं। ब्यूनस आयर्स और एंटर रियोस सहित अनेक प्रांतों में प्राकृतिक संसाधनों के और अधिक दोहन को रोकने वाले स्थानीय कानून को लागू किया गया।

खनन गतिविधियों का विस्तार बड़े केन्द्रीकृत पन–बिजली और परमाणु संयत्रों के निर्माण एवं पुनः सक्रियकरण से और साथ ही कृषि व्यवसाय, बड़े पैमाने पर खनन एवं अपरंपरागत हाइड्रोकार्बन खनन का समर्थन करने वाली बड़ी आधारभूतीय ढाँचा परियोजनाओं से जुड़ा है। विशिष्ट राजनीतिक–संस्थागत व्यवस्था, प्राकृतिक संसाधनों का निष्कासन एवं कमोडीफिकेशन का समर्थन को अनेक प्रभुत्वशाली कर्त्ताओं ने आगे बढ़ाया और बहुराष्ट्रीय फर्मों को शक्ति प्रदान की ताकि वे इन प्रांतों/क्षेत्रों में रहने वालों के जीवन को आकार दे सके।

जब नव्य–खनन मॉडल पर सवाल उठते है तो हम कई चुनौतियों का सामना करते हैं, तो भी यह हमें इस विषय पर चर्चा करने का एक अवसर देता है कि हम कैसा समाज चाहते हैं? यदि हम और अधिक लोकतांत्रिक समाजों का निर्माण करना चाहते हैं तो विषमताओं के बावजूद मानव को व्यापक रूप से प्रभावित करने वाले सामाजिक, क्षेत्रीय एवं पर्यावरणीय अधिकार जैसे मुद्दों पर बहस में समुदाय की सहभागिता महत्वपूर्ण है। ■

मरियन सोला अल्वारेज से पत्र व्यवहार हेतु पता <mariansoal@yahoo.com.ar>

> मुक्त समाजशास्त्र को समर्पित जीवन

मिखाइल चेरनेश, रशियन अकेडमी ऑफ साइंसिस, मोस्को, रशिया और सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन **(RC 47), ISA** की रिसर्च कमेटी के सदस्य और थीमेटिक ग्रुप ऑन ह्युमन राइटस एंड सोशल जस्टिस **(TG 03) ISA** रिसर्च कमेटी के सदस्य

व्लादिमिर यदोव

व्लादिमीर यादोव ऐसे पीढ़ी के रूसी थे जिनका जन्म महान युद्ध (विश्व युद्ध II) से पहले हुआ था परन्तु जो उसके बार परिपक्व हुए। उनका जन्म लेनिनग्रेड में हुआ था–एक ऐसा शहर जिसका हर पत्थर बहादुरी, स्व–बलिदार और दुःखान्त, स्टालीन के दल–शोधन की क्रूरता और 900 दिन लम्बे सैनिकों के घेरे के अभिद्यात का स्मरण कराता है। यह सृजनात्मक आत्माओं के आश्चर्यजनक चमत्कारों का दृश्य है, जो ऐसे नामों से जुड़ा है जैसे–एखमतोवा, शोस्ताकोविच और ब्रोडस्की।

1945 में यादोव सोलह वर्ष के थे और पाइलट बनने का सपना देख रहे थे। एक युवा हाई–स्कूल स्नातक की तरह उन्होंने मिलट्री पाइलट के ट्रेनिंग कोर्स में दाखिला लिया, परंतु उसको पूरा नहीं कर पाये। वो शारीरिक रूप से बलशाली को प्राथमिकता देते थे, और यादोव दुबले एवं कमजोर थे। उन्होंने कोर्स बदल लिया, परंतु क्षितिज से आगे जाने के और यह देखने के कि सूरज बादलों के ऊपर कैसा दिखता है के सपने को बनाये रखा। उन्होंने लेनिनग्रेड राज्य विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में दाखिला लिया, अव्वल दरजे से पास हुए और स्नातक छात्र के रूप में अध्ययन जारी रखा। 1950 के शुरूआती दौर में उन्होंने अपना शोध लेख ''आइडिओलॉजी एस ए फॉर्म ऑफ स्परीचुअल एक्टिविटी''

>>

की प्रतिरक्षा की। इगोर कोन से मिलने के पश्चात् वो शोध के एक नवीन क्षेत्र, समाजशास्त्र, जो उत्तर–स्तालीन बदलाव के मौसम में खुला ही था, की तरफ मुड़े।

उन दिनों में सोवियत यूनियन में समाजशास्त्र को औपचारिक पहचान नहीं मिली थी। प्राधिकारी उसको वैज्ञानिक साम्यवाद के क्षेत्र में, जो सोवियत समाज में घटने वाली घटनाओं का आदर्श स्पष्ट करने वाला उपकरण प्रदान करता था, घातक अतिक्रमण मानते थे। इसलिये, यादोव अस्थिर जमीन पर थे जब उन्होंने सोवियत इतिहास में अपने प्रथम आनुभाविक अध्ययनों में से एक को करने का फैसला लिया। विषय बहुत चुनोतीपूर्ण था : अध्ययन ने मार्क्स की उपकल्पना कि नई सोवियत परिस्थितियों ने एक नये मानव को पैदा किया है, एक नये प्रकार का बौद्धिक जीव, जो सामान्य भलाई के लिये अपने स्वयं के आराम का बलिदान देने को तैयार है, का परीक्षण करने का बीड़ा उठाया। इस अध्ययन का परिणाम एक पुस्तक मैन एंड हिस वर्क्स थी जिसने रूसी समाजशास्त्र में घेरा तोड़ कर मार्ग चिन्हित कर दिया।

उन दिनों में समाजवाद के प्रति अभिवृत्ति चरम सीमाओं के मध्य थी। उसके समर्थकों ने नयी व्यवस्था की मानव के इतिहास में सबसे प्रगतिवान समाज के रूप में प्रशंसा की। उसके आलोचकों ने उसे "दुष्ट राज्य", जो मानव प्रकृति की सबसे खराब भोग को मजबूत करता है के रूप में वर्णन किया। यादोव ने दिखाया कि सोवियत मानव अन्य देशों के स्त्री एवं पुरूष से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं था। सोवियत मानव रूस की समृद्धि चाहता है, परंतु साथ ही अपनी व्यक्तिगत समृद्धी के लिये भी मार्ग प्रशस्त करता है, निजी खुशी और प्रगति के सपने का अनुसरण करता है। उसके पश्चात् यादोव ने कभी भी आवश्यकतावाद के खिलाफ अपना मजबूत विरोध नहीं छिपाया। वो उन सारे प्रयासों के खिलाफ शक्तिशाली रूप से उभर कर आये जो "देशज समाजशास्त्र", जो राष्ट्र की सीमा में ही विकसित हो सकता हो, की योजना बना रहे थे। उन्होंने तर्क दिया, केन्या की साईकल नहीं हो सकती, सारी साईकिलों में काफी समानता है। वो रूसी समाजशास्त्र को विश्व समुदाय के समाजवैज्ञानिकों के साथ समाकलन करने, संसाधनों को साझा करके किसी भी स्वरूप के आधुनिकतावाद का अन्वेषण करने के लिये दृढ़ता से खड़े रहे।

यादोव उन वैज्ञानिकों के समूह में से एक थे जिन्होंने सोवियत विचारधारा को चुनौती दी थी। इगोर कोन, तात्याना जसलावस्कया, बोरिस ग्रुशीन, आन्द्रे जडरावोमीसलोव, व्लादिमिर शुबकिन, सोवियत समाजशास्त्रीयों के ढीले जाल का एक भाग थे जिन्होंने ईमानदारी, विमर्श की आजादी और विश्व की तरफ खुलेपन को प्रोत्साहित किया। व्लादिमिर यादोव ने समाजविज्ञान की विधि और उसकी सामाजिक परिवर्तन को पूरी तरह से समझ लेने की व्यूह–रचना पर श्रम करके समूह की परंपरा को बनाये रखा। इस प्रकार उनका पक्षपात वर्तमान परिवर्तनों को समझाने के लिये सक्रिय समाजशास्त्र एवं बहुतपैराडिगम स्कीम की तरफ था।

1988 में पेरस्टोरिका ने उन्हें रशियन अकेडमी ऑफ सांइसिस के इनस्टीट्यूट का निर्देशक बनाया। यादोव और उनके दोस्तों ने इस अवसर को समाजशास्त्र को सामाजिक विज्ञान की वैद्य शाखा बनाने में, समाजशास्त्र के स्कूल और विभाग खोलने में, युवा स्नातकों को अपने कौशल सुधार करने के लिये और अपने समाज के लिये नया परिप्रेक्ष्य समझने के लिये विदेश भेजने में काम में किया।

उत्तर सोवियत काल बहुत सारी अपेक्षायें और आशाओं की मिथ्या ले कर आया, परंतु यादोव अपने आखिरी दिनों तक आशावादी रहे। और अपने अंतिम दिनों में वो रशियन एवं अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक समुदाय के लिये कार्य करना जारी रखना चाहते थे। उन्होंने अपनी कमजोरी से बहादुरी से लड़ा, यात्रा करना जारी रखा, और रशिया को विश्व समाजशास्त्र समुदाय का भाग बनाने के लिये संप्रेषण मार्ग खुला रखा। उन्होंने युवाओं को संदेश भेजना जारी रखा : हम समाजशास्त्रीयों को उन में से होना चाहिए, जो समझना चाहते हो और अपनी समझ को दूसरों के साथ साझा करते हो। जुलाई 2, 2015 में प्रोफेसर यादोव का निधन हो गया। जो उनको जानते थे, हमेशा उनकी मुस्कान, विचार, समाजशास्त्र के प्रति उनकी प्रश्न न की जा सकने वाली वफादारी, जिसको आगे बढ़ाने के लिये उन्होंने इतना कुछ किया, को हमेशा स्मरण रखेंगे। ■

मिखाइल चेरनेश से पत्र व्यवहार हेतु पता
<mfche@yandex.ru>

> विद्वान एवं मानवतावादी

आन्द्रे एलेकसीव, सेंट पीटरस्बर्ग, रशिया

लेनिन की प्रतिछाया में यदोव बोलते हुए

छः साल पूर्व हमने वलादिमिर एलेक्सेनडरोविच की 80वीं सालगिरह मनायी थी। यादोव अपने 87वें साल में जुलाई 2, 2015 की रात में गुजर गये। कहा जा सकता है : ''लम्बे एवं असाध्य रोग के परिणामस्वरूप।'' हालांकि, अंतिम क्षण तक उनका दिमाग उतना ही तेज था जितना हमेशा से रहा और यहां तक कि, वो अपनी कार्य करने की क्षमता को भी बनाये हुये थे।

यादोव के साथ हमारे विषय का एक पूरा काल समाप्त हो गया। वो अपने अन्य साथियों से ज्यादा समय तक जीवित रहे। उत्तर युद्ध सोवियत/रशियन समाजशास्त्र के अन्य संस्थापक–ग्रूशीन, लेवादा, जसालावसकया, जडरावोमीसलोव, शूबकिन–सभी उनसे पहले चले गये। मैंने उनकी मृत्यु पर कई शोक संदेश एवं टिपपणियां पढ़ती। शोक संदेश उनके व्यावसायिक पेशे से लिये हुये तथ्यों एवं अंतराष्ट्रीय पहचान के सबूतों (जबकि संस्था के राजनीतिक पक्षपात के कारण) वो कभी भी रशियन अकेडमी ऑफ साइंस के सदस्य निर्वाचित नहीं हुए थे) से भरे हुये है। व्यक्तिगत स्मरण अधिकतर उनके व्यक्तिगत गुणों का वर्णन कर रहे है और उनके जीवन के बारे में आकर्षण कहानियाँ सुना रहे हैं।

शायद यह इसी प्रकार से होना चाहिये, यह ध्यान में रखते हुये कि उनकी श्रद्धांजली में उनके शैक्षणिक योगदान, उनका आकर्षक

>>

व्यक्तित्व, मनीषी प्रतिभा एवं उनका करिश्मा प्रतिबिम्बित हो रहा है। निस्संदेह, यादोव एक बुद्धिजीवी थे, परन्तु वो बुद्धिजीवी वर्ग से भी सम्बद्ध थे। यह दो शब्द पर्यायवाची होने से काफी दूर है। फिर भी यादोव ने दोनों के मिश्रण का उदाहरण दिया।

मैं यादोव के एक विशिष्ट गुण पर प्रकाश डालना चाहुंगा–वो एक खुले दिमाग के व्यक्ति थे, जिनमें सीमाओं को लांघने की अद्भुद क्षमता थी। उदाहरण के लिये, उनके मनीषी कार्य में और संपूर्ण शैक्षणिक जीवन में, यादोव ने विभिन्न सैद्धान्तिक पैराडिगम को साथ लाने का जोरदार प्रयास किया। यादोव एक रूढ़िवादी मार्क्सवादी नहीं थे। हालांकि 1960 के दशक में यादोव ने ऐतिहासिक भौतिकतावाद को ''सामान्य समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' बनाने की गहरी वकालत की थी, उन्होंने ''विशिष्ट समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों'' की सापेक्षिक स्वायत्तता की भी रक्षा की थी। यादोव प्रत्यक्षवाद के लिये समर्पित भी नहीं थे, यद्यपि उनकी पाठ्यपुस्तक स्ट्रेटीजीस ऑफ सोशियोलॉजिकल रिसर्च के कई संस्करणों ने संपूर्ण विश्व से आनुभाविक समाजशास्त्र के उदाहरणों का एकीकरण किया था। ये उदाहरण प्राथमिक रूप से प्रत्यक्षवादी पैराडिगम पर आधारित थे।

यादोव ने रशियन समाजशास्त्र के विमर्श में ''बहु–पैराडिगम'' शब्द को सम्मिलित किया। उन्होंने माना कि किसी फ्रेमवर्क का चुनाव किये जाने वाले आनुभविक कार्य पर निर्भर करता है। उनकी समाजशास्त्र की वृहद दृष्टि थी। इस प्रकार, उनकी प्रिडिक्शनस् ऑफ द सोशल बिहेवियर ऑफ परसनेलिटी, को कदाचित समाजशास्त्र से ज्यादा मनोविज्ञान का माना जा सकता है। यादोव के लिये विषयगत दीवारे अस्तित्व नहीं रखती थीं।

यादोव उतने ही ताकतवर सर्वजन थे जितने वो शैक्षणिक समाजशास्त्री थे। उनके पास जटिल मनीषी सामग्री को दर्शकों को ऐसी भाषा में जो आसानी से समझ में आ जाये, प्रस्तुत करने की बेमेल काबिलियत थी, साथ ही, अपनी शैक्षणिक प्रस्तुतियों में ''यथार्थ जीवन'' की ताजी धारा भी ले आते थे। यादोव अपने शैक्षणिक विरोधियों और सैद्धान्तिक प्रतिद्वन्द्वियों के प्रति बहुत सहनशील थे। वो ''माफी प्रदान करने वाले'' इंसान थे, परंतु उनका मजाक बनाने के प्रत्येक अवसर का भी प्रयोग करते थे। यह प्राधिकारियों पर और खुद उन पर भी (व्यंग एवं स्व व्यंग) लागू होता था। हालांकि यादोव कभी भी शासन के खुले विरोध के भाग नहीं रहे, वैज्ञानिक सत्य की खोज उन्हें अक्सर विरोधों के रूप में रखती है।

यादोव खुले दिमाग के एवं दयालु थे। मैंने उनसे कभी नहीं पूछा–और मुझे नहीं लगता कि वो उत्तर दे पाते–कि आपके कितने ''गॉडचिल्ड्रन'' है (वो, जिन्होंने उनके निर्देशन में शोध ग्रंथ लिखा है या वो जिनके शोध ग्रन्थों की रक्षा में वे एक ''विरोधी'' थे, या वो जिन्हें उन्होंने सामाजिक शोधकर्ता बनने के लिये प्रेरित किया)। मेरा अनुमान है कि उनके लम्बे शैक्षणिक जीवन में यह संख्या कई सैंकड़ों में होगी।

मुझे एक नाटकीय घटना का स्मरण होता है। वैज्ञानिक काउंसिल जिसकी अध्यक्षता यादोव, ने की थी, ने ''अचानक'' एक युवा विद्वान के शोध ग्रंथ को अस्वीकार कर दिया, जिसने अपने विचारों को एक ऐसी शैली में प्रकट किया जिसमें समझना काफी मुश्किल था, ''चिड़िया'' भाषा जैसा वो उसे कहते थे। अस्वीकार बिना पूर्व जन आलोचना के एक गुप्त मतदान द्वारा हुआ। हमेशा की तरह, यादोव ने एक आश्चर्यजनक मार्ग का सुझाव दिया–उन्होंने छात्र की सबसे न समझ में आने वाली शब्दावली को रीतिगत शैक्षणिक शैली में व्याख्या कर एक लेख लिखा। परिणामस्वरूप उन्होंने एक अभिलाषी एवं प्रतिभावान युवा लेखक को और साथ ही वैज्ञानिक कॉऊनसिल की साख को भी बचा लिया।

इंसानों की क्षमता, उनके तत्कालीन सामाजिक दायरे और सुदूर सामाजिक वातावरण पर प्रभाव से नापी जाती है, और इस विशिष्ट मामले में उनका प्रभाव संपूर्ण संकाय पर पड़ा था। यादोव एक संस्थापक एवं मार्गदर्शक थे। जो उनका अनुसरण करते है कभी भी उनकी जगह किसी को नहीं दे पायेंगे। उनके पास इसके अलावा कि वो उनहें आदर सहित याद करे, और अपनी सर्वाधिक क्षमता के अनुसार, विज्ञान, जन एवं विश्व में उनके उपागम को फैलाने का प्रयास करे, कोई अन्य विकल्प नहीं है। ■

आन्द्रे एलेकसीव से पत्र व्यवहार हेतु पता <alexeev34@yandex.ru>

> सलाहकार, सहकर्मी और मित्र

तोत्याना प्रोतासेन्को, इंस्टीट्यूट ऑफ सोशियोलोजी, रशियन एकेडमी ऑफ साइंसिस, सेंट पीटरबर्ग, रशिया

डाचा में जीवन का आनंद लेने हुए यदोव

मैं प्रथम बार व्लाडिमिर एलेक्सेनडरोविच यादोव से लेनिनग्राद राज्य विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र संकाय में विभाग की बैठक के दौरान मिला। जहां मैं छात्र होने के साथ, स्टेनोग्राफर के रूप में कार्य करता था। जैसा मुझे स्मरण है, वो 1965 के शुरूआत में था। व्लादिमिर यदोव उस वक्त इंगलैंड से अपनी शैक्षणिक प्रशिक्षण ले कर लौटे ही थे और संकाय सदस्यों के समक्ष प्रस्तुती दे रहे थे। यह प्रस्तुति इतनी अनौपचारिक एवं मनोरंजक थी कि, मैं जो अपने दार्शनिकों की नीरस, एवं न समझ में आने वाली बातचीत का आदी था, तुरंत ही समाजशास्त्र की तरफ आकर्षित हो गया। मैंने आवेदन किया और मेरा दाखिला दर्शनशास्त्र संकाय में हो गया, यह आशा करते हुये कि अंततः यह समाजशास्त्र में विशिष्टता की ओर ले जायेगा। उस वक्त विषय में ऐतिहासिक भौतिकवाद का वर्चस्व था।

यद्यपि मैं ओ. आई. सकाराटन का स्नातक छात्र था, यादोव मेरे सलाहकार, नजदीकी सहकर्मी, एक दोस्त ओर एक उदाहरण जिसका अनुसरण किया जाय, बन गये। बाद में, वे एक उत्तम बॉस बने, जिसके साथ कार्य करना बहुत आसान था।

सही में, वो एक समाजशास्त्री थे जिन पर ईश्वर का आर्शीवाद था। वो एक जन समाजशास्त्री थे जो आसानी से किसी भी मानव के साथ संप्रेषण कर सकते थे–चाहे वो कोई उच्च स्तरीय अफसर हो, राष्ट्रपति भी या हमारे सर्वे में से एक आम इंसान क्यों न हो। वो कभी भी घमंडी नहीं थे। वे संगोष्ठीयों और अनौपचारिक पार्टीयों में हमेशा अपने सहकर्मियों के साथ रहते थे। सामूहिक श्रम के प्रति अपने सहयोग के रूप में, वो राज्य फार्म, लेनसोवेतोवस्की, पर निरंतर जाते थे, जहां वो गोभी और शलजम को छांटते और चुनते थे–ऐसी चीज जो हमारे प्रशासक विरले ही करते थे। महिला कृषक यादोव की प्रशंसक थी, और उनके आगमन का इंतहार करती थी। ब्रिगेडियर उनको गर्मजोशी के साथ भाषण देते ''ऐ, प्रोफेसर, तुम एक ही किस्म की सब्जियों को ही क्यों उठा रहे हो? आपको उन शलजमों को अलग करना है, जो लोगों के लिये है, और जो जानवरों के भोजन के प्रयोग में आती हैं।'' यादोव तुरंत ही एक चुटकुले के साथ जवाब देते, और फिर कृषकों की कार्य की परिस्थितियाँ, उनके जीवन एवं परिवारों के बारे में प्रश्न उठाने को अग्रसर होते।

हमने साथ–साथ कठिन एवं अंधकारपूर्ण समय देखा। परंतु उस वक्त भी उन्होंने अपनी गरिमा बनाये रखी। उन्होंने काफी लोगों की मदद करते हुए किसी को धोखा नहीं दिया। वास्तव में यह कहा जा सकता है उन्होंने कई लोगों को बचाया। मुझे अपने जीवन के सबसे कठिन समय में उनका सहारा मिला। ये वो ही थे जिन्होंने मुझे सलाह दी कि मुझे हमारे समाजशास्त्र विभाग में पार्टी सेकेट्री का

>>

पद लेना चाहिये, ताकि चीजों पर नजर रखी जा सके और आक्रमण से अपने आप को बचाया जा सके। आखिर, कम्यूनिस्ट पार्टी, समाजशास्त्र पर वाद–विवाद के लिये सबसे सामान्य जन क्षेत्र थी।

उसके साथ ही हमने शोध करना, सर्वेक्षण करना कभी नहीं छोड़ा, अपितु हमें जासूसी कहानियाँ पढ़ना भी पसंद था। यादोव इस जोनर के लिये समर्पित थे क्योंकि, वो मानते थे, कि यह कहानियाँ बौद्धिकता, तार्किक चिंतन को विकसित करती हैं और रोजमर्रा के जीवन की जानकारी भी प्रदान करती हैं। यादोव को नौकरी से निकाल दिये जाने के बाद वो या लुडमिला निकोलेइवना (उनकी पत्नी) मुझे कॉल करके नई जासूसी कहानियों के बारे में जानकारी लेते थे। उस वकत मेरी महिला मित्र, अपने पास व्यक्तिगत पुस्तकों का संग्रह, रखती थी, जिसमें जासूसी कहानियों के अमान्य अनुवाद और प्रसिद्ध विदेशी लेखकों के उपन्यास शामिल थे। उनके दोस्त और संबंधी विदेश में रहते थे, जो पुस्तकों की तस्करी रशिया में करते थे। फिर, मेरे जैसे लोग, जो तेज टाइप कर सकते थे, टाइपराइटर पर प्रतियाँ बनाते थे। मेरे पास अभी भी समीजडाट जासूसी उपन्यासों की प्रतियाँ है।

यादोव का पसंदीदा गाना (एलेक्सजेंडर गेलीटच के द्वारा रचित) ''हम कहीं पर नाखा के आसपास दफन है'' था। हम यह गाना लगभग हर पार्टी में गाते थे जहां पर गिटार होता था या एक उत्साहपूर्ण जनसमूह होता था। यादोव गाने की कुछ पंक्तियों पर हमेशा जोर देते थे :

यदि रशिया अपने मरे हुये पुत्रों को पुकार रहा है, इसका अर्थ है कि वो कठिनाई में है
यद्यपि, हम देख रहे है कि वो एक गलती थी–और किस प्रकार निरर्थक
उन मैदानों में जहां हमारी सेना का बिना किसी बात के 1943 में नर संहार हुआ।
आज शिकारी पार्टी मारने का मजा ले रही है और शिकारी उनके सींगों को उड़ा रहे हैं।

एक बार मैंने पूछा कि उनकों यह गीत क्यों अच्छा लगता है और उन्होंने जवाब दिया कि यह गीत उन निरर्थक बलिदानों के पीड़ितों के बारे में था, जो सामान्य लक्ष्य के लिये थी–ऐसा जो पूरे रूसी इतिहास में हुआ, इससे फर्क नहीं पड़ता कि वो युद्ध या शांति के दौरान हुआ।

मुझे स्मरण होता है कि इंस्टीट्यूट ऑफ सोशिओ–इकनोमिक रिसर्च की 50वीं सालगिरह पर, हमने उन्हें एक वाइन का बैरेल दिया था। वे बहुत खुश थे और उन्होंने कहा कि मुझे बैरेल पर बैठाकर घर भिजवाया जाये। ''कल्पना करो'' उन्होंने कहा, ''लजुका (उनकी पत्नी का नाम) दरवाजा खोलती है और मैं उसके ठीक सामने बैरल पर बैठा हुआ और आस पास कोई नहीं हो।'' ऐसे थे यादोव।

मुझे यह भी स्मरण होता है कि वो मेरे छः वर्ष के पुत्र के लिये बुडापेस्ट से पानी–प्रतिरोध वाली पेंट लाये थे। वो बहुत छोटी निकली। उन्होंने शिकायत की : ''तुम अपने लड़के को बहुत खिलते हो।'' तथापि, उन्होंने अपने एक मित्र के द्वारा, उचित नाप की पेंट बदलवा मंगवा ली। ऐसे थे यादोव–बहुत ही मानवीय, आत्मीय, समझने वाले और बहुत बुद्धिमान। कई बार उनकी सोच न समझ आने वाली अनूठी चीजों को एक साथ बाँधने में सक्षम होती थी। मेरी आखिरी और काफी व्यक्तिगत स्मृति यादोव के बारे में दो साल पहले की है। ओलेग बोजकोव और मैं उनसे मुलाकात करने एसटोनिआ में उनके घर पहुंचे। एलेक्सी सेमीनोव, यादोव का एक प्रिय विद्यार्थी और एसटोनिया में काफी समय से बसा हुआ, ने हमें वहां पहुंचाया। उस वक्त सेमीनोव, तालिन की विधानसभा में एक पद के लिये चुनाव लड़ने की योजना बना रहा था। वो और उसकी पत्नी लेरीसा यादोव को अत्यधिक अनुरागी देखरेख प्रदान कर रहे थे। स्पष्ट रूप से कहा जाय तो, वो पल मेरे जीवन के सबसे खुशनुमा और उत्साही पल थे। हम हमारी स्मृतियाँ साझा कर रहे थे, चुटकुले सुना रहे थे, मारटिनी और रेड वाइन पी रहे थे। हमने यह वर्तमान में समाजशास्त्र की भूमिका और जगह क्या है, समाजशास्त्रियों को क्या करना चाहिये और वर्तमान समय की चुनौतियों का प्रत्युत्तर कैसे करना चाहिये, खासकर तब जब वे प्राधिकारी के द्वारा घोट दिये जाए, पर चर्चा की। हम लोग उनको उनकी मानवता, जीवन के प्रति उनकी अक्षय रूचि और शोध के लिये उनके संपूर्ण अनपेक्षित अनुमान, निष्कर्षों और शोध के लिये याद करेंगे। ■

तोत्याना प्रोतासेन्को से पत्र व्यवहार हेतु पता <tzprot@mail.ru>

> निजी स्मृतियाँ

वेलन्तिना उज़ूनोवा, कुनसटकामीरा, रशियन एकेडमी ऑफ साइंसिस, सेंट पीटरबर्ग, रशिया

संस्था में पार्टी करते हुए यदोव

व्लादिमिर एलेक्सनेनडरोविच यादोव ने एक दर्शनशास्त्र संकाय में ''प्रयोगिक समाजशास्त्रीय शोध'' पर कोर्स दिया। वे अपने भाषण में इस प्रकार डूबे हुये थे कि वे अचानक प्लेटफार्म से नीचे गिर गये। यह पता चला कि ब्लेकबोर्ड उस प्लेटफार्म से लम्बा था जिस पर वो चॉक से लिखते समय घूम रहे थे। हमारी सांसे रूक गयी परंतु यादोव जल्दी से फिर खड़े हो गये और उन्होंने बोर्ड पर लिखते हुये अपने भाषण को आगे बढ़ाया। उन्होंने एक मिनट भी नहीं गँवाया। कितना अंतर है दूसरे युवा गणित के प्रोफेसर से, जो समान घटना से डरे हुये, एक जगह पर खड़े हो गये, जबकि उन्हें पूरे ब्लेकबोर्ड को समीकरणों से भर देना चाहिये था।

व्लाडिमिर एलेक्सेनडरोविचन ने 1967 में समाजशास्त्र में मुझे नियुक्त किया। हम उनके शोधग्रंथ के डिफेंस के स्टेनोग्राफर के नोटस का अध्ययन कर रहे थे। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि प्रस्तुति एक गर्जनापूर्ण सफलता थी। इतिहास के संकाय का बड़ा कमरा अपेक्षाओं की अनुभूतियों ने भर दिया, विशेषतः वहां पर जहां यादोव के समर्थको और विरोधियों के मध्य प्रतिस्पर्धा और तीव्र हो गयी। इस घटना के नोट्स लेना काफी कठिन कार्य था, क्योंकि संपूर्ण दर्शकों में से लोग चिल्लाते हुये टिप्पणी कर रहे थे। मैंने यादोव की व्यग्रता को महसूस किया – ऊँचे पोडियम के पीछे वे मुश्किल से दिखाई दे रहे थे। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था, कि वो प्रोटोकोल के अनुसार पहले से तैयार किये गये लेख को बलपूर्वक पढ़ने की कोशिश कर रहे थे, परंतु वे दर्शकों को अपने वक्तव्य के द्वारा संतुष्ट करने को प्राथमिकता देते।

उनका विवाद के प्रति झुकाव के स्पष्ट विपरीत थी, वृहद कागजों और दस्तावेजों के ढेर, जिसको उन्हें वी. ए. के. (दी नेशनल एक्रेडिश्न कमीशन) को पेश करना था के भीतर छिपी उनकी बौद्धिकता। हमने जैसे इन अस्पष्ट कागजों पर साथ कार्य किया, उन्होंने अचानक मुझसे पूछा, दर्शनशास्त्र के संकाय में अध्ययन करने के बारे में मेरे क्या विचार है। उन्हें विश्वास था कि भविष्य समाजशास्त्र में है और समाजशास्त्री बनना एक रूचिकर कार्य है, जिसमें काफी संभावनायें हैं। मैंने उनपर पूर्णतः भरोसा किया और अपने चुनाव पर कभी निराश नहीं हुआ। निम्न कहानी 1970 से है। दी कॉमसोमोल सोशियोलॉजिस्ट ऑफ लेनिनग्रा (कम्यूनिस्ट यूथ लीग के सदस्य) ने ब्यूरो को कम्यूनिटस पार्टी की राय को नहीं दिया, जो दो हमारे सहकर्मी एवं दोस्तों के संदर्भ में था, को अपेक्षित समर्थन नहीं दिया। उनमें से एक ने विदेशी से विाह किया था; दूसरे ने अपने परिवार का पीछा करते हुए प्रवास किया। बैठक में जो राय रिकार्ड की गयी थी, उसने शासकीय सुझावों को स्वीकार नहीं किया गया था। हमारी सामूहिक स्थिति थी कि ''प्रस्थान एक निजी विषय है और हर व्यक्ति को यह अधिकार है कि वो यह चयन कर सके कि उसे किस देश में रहना है।'' हमारी एकता और खुलेपन ने सरकारी तंत्र के कान खड़े कर दिये : ''वो बहुत खुलेपन से बात करते हैं, उनके पीछे कोई न कोई जरूर होगा'' दफ्तरों की दीवारों से स्वरित हो रहा था। परिणाम बाद में आये। बॉस लोगों ने अंततः उन लोगों की सूची बनायी जो इस प्रकार की मुक्त आत्मा को जगाने के लिए जिम्मेदार थे। हमारे शिक्षक बिरादरी बाहर हो गये। व्लाडिमिर एलेक्सेनडरोविच का नाम उस सूची में सबसे ऊपर था। यह यादोव थे–जिन्होंने कभी अपने मूल्यों से समझौता नहीं किया। ■

वेलन्तिना उज़ूनोवा से पत्र व्यवहार हेतु पता <ymnesterov@gmail.com>

>सोवियत और उत्तर–सोवियत समाजशास्त्र की
एक महान हस्ती

गेवोर्क–पोगहोस्यान, निर्देशक, इंस्टिट्यूट ऑफ फिलॉसफी, समाजशास्त्र, और लॉ ऑफ आरमीनिअन नेशनल अकेडमी ऑफ साइंस, प्रेसिडेंट, आरमीनिअन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन, प्रवास **(RC 31)** और आपदा **(RC 39)** पर रिसर्च कमेटी **(ISA)** के सदस्य, द्वारा

ऐसे वैज्ञानिक है जिनका नाम एक विचारधारा के स्कूल के निर्माण से या समस्त वैज्ञानिक संकाय के निर्माण से संबद्ध किया जाता है। प्रोफेसर यादोव इन में से एक थे–सोवियत युग के एक अग्रणी, जिनके मनीषी कार्य और शोध प्रयासों ने सोवियत समाजशास्त्र को निर्णायक रूप प्रदान किया। 1960 के दशक से यादोव के मनीषी कार्यों का रचनात्मक प्रभाव आरमीनिअन और सोवियत समाजशास्त्रियों की कई पीढ़ियों पर पड़ा। उनके तीन प्रसिद्ध पांडित्यपूर्ण लेख मैन एंड हिस वर्क (1967, ए. जी. जडरावोमिसलोव और वी. पी. रोजहिन के साथ), सोशियोलॉजिकल रिसर्च : मैथोडॉलॉजी, प्रोग्राम, मैथड्स (1972) और सह–लेखित, सेल्फ रेगुलेशन एंड प्रीडिकशन ऑफ सोशल बिहेवियर (1979) सोवियत समाजशास्त्रियों के लियें संदर्भ पुस्तकें बनी। काफी युवाओं के लिये उनकी पुस्तकों ने समाजशास्त्र को मनीषी संकाय के रूप में पथ प्रशस्त किया। उनके प्रामाणिक कार्यों के फलस्वरूप, यादोव सोवियत समाजशास्त्र के जीवित आइमन बन गये। कुछ आरमीनिअन समाजशास्त्री जो उनके साथ संप्रेष्ण करने, में भाग्यशाली रहे, उनके भाषण और सम्बोधन सुनने, यहां तक कि जिन्होंने उनके साथ विभिन्न शोध समस्याओं पर वाद–विवाद और चर्चा भी की, लम्बे समय तक 'संक्रमित' रहे, अगर हमेशा के लिये नहीं तो, उनके कार्य के प्रति एवं समाजशास्त्र के प्रति विशेष व्यवहार के द्वारा। वो हमेशा दूसरों की तरफ खुले हुये रहते थे, उनकी उम्र, शैक्षणिक योग्यताओं एवं उपाधियों, विचारधारा या प्रजाति उदासीन रहते हुये। वो हमेशा अपने अंतरवक्ता के विचारों को आदर प्रदान करते थे, किसी सहमति पर अनावश्यक रूप से पहुंचने का प्रयास किये बिना। वो अपने शब्दों से गहरा प्रभाव छोड़ते थे : "असीम आनंद तब ही आता है, जब आप किसी नवीन को समझ पाने में सफल होते हैं और जब आप उसको फिर दूसरों में संप्रेषित करते हैं।"

लेनिनग्रेड इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल एंड इकनोमिक प्रोब्लमस में कार्य करने के दौरान, यादोव प्रतिभावान समाजशास्त्रियों की एक सृजनात्मक टीम को बना पाये। एक मुक्त एवं आलोचनात्मक चिन्तन का वातावरण उस दौरान पनपा, जो दूसरे सोवियत संस्थाओं जो मानविकी एवं समाजविज्ञान में शोध करा रही थी के बंद वातावरण के विपरीत था। जिसने भी उस विशेष वातावरण को ग्रहण किया, वो जल्द ही उसकी मुक्त खोज और सृजनात्मक विचारधारा की आत्मा से प्रेरित हुआ। कम से कम यहां आरमीनिआ में, हम यादोव की शोध प्रयोगशाला से निकले हुये एक हल्की सी बदलाव की हवा और ताजा विचारों के श्वसन का इंतजार करते। शोध के लिये समर्पित

कांफ्रेस में भाषण देते हुए यदोव

एवं शोध के लिये मांग में, उनमें विशेष व्यक्तिगत तेज था, जो युवा विद्वानों को पूर्व सोवियत संघ के समस्त गणतंत्रों से आकर्षित करता था। मनीषी के लिये समर्पित, उन्होंने युवा विद्वानों की सृजनात्मकता और मौलिकता को उच्च मूल्यों पर रखा और रूढ़िवाद के प्रति आलोचनात्मक रूख को बनाये रखा।

सम्भवतः वो स्वयं भी इससे अनभिज्ञ होंगे, यादोव ने सर्वप्रथम एक वृहद और अदृश्य कॉलेज, आभासी समुदाय, या एक प्रकार का "आत्मिक भाईचारा" जो समान विश्वविचारधारा द्वारा परिभाषित किया गया को स्थापित किया और फिर वे उसके केन्द्र स्तंभ बने। उनके जीवन के अंतिम वर्षों में विशेषतः, उनका मानना था कि समाजशास्त्रियों को "सामाजिक ग्रह की गति" को प्रभावित करने के प्रयास में जुट जाना चाहिये, जैसा कि उन्होंने बोरिस डॉक्टोरोव को दिये अपने अंतिम साक्षात्कारों में से एक ने कहा। यादोव, जिनकी पांडित्यपूर्ण लेखों ने मनीषी अध्ययन के नये क्षेत्र के निर्माण एवं विकास की नींव रखी ने पुरजोर आग्रह किया : "अगर हम समाजशास्त्री अपने आपको पुस्तक लेखन तक सीमित रखेंगे, हम हमारी नागरिक जिम्मेदारियों को नहीं निभा रहे हैं।" यह विचार यादोव की मनीषी के "आखिरी कथन" के रूप में भी माना जा सकता है। हम, आरमीनिअन समाजशास्त्री, उनको बहुत याद करेंगे। ■

गेवोर्क पोगहोस्यान से पत्र व्यवहार हेतु पता <gevork@sci.am>